वुड्रो विल्सन

फंक और वॉगनल्स के संपादकों द्वारा

अनुवादक
रामचन्द्र शर्मा 'महारथी'

१९६३

एस० चन्द एण्ड कम्पनी
दिल्ली — नई दिल्ली — जालन्धर
लखनऊ — बम्बई

विषय-सूची

परिच्छेद १

जीवन की पगडंडी पर

राष्ट्रपतियों की पंक्ति मे जेफर्सन के बाद प्रजातन्त्रवादी एण्ड्र्यू जेक्सन और वुड्रो विल्सन दोनों ही स्कॉट्स-आइरिश सन्तति थे। उनके भावी जीवन के निर्माण में, इस जातीय परम्परा ने सामान्य से अधिक महत्त्व का योग दिया। वे दोनों दक्षिणी और प्रेसबीटेरियन थे और दोनों ही राजनीतिक संकट के समय में प्रजातन्त्र दल के सर्वोच्च नेता बने। जब भी राष्ट्रपति के अधिकार काम में लाने की आवश्यकता पड़ी, तो दोनों की वृत्ति स्वेच्छाचारी रही।

दोनों में समानता के लक्षण यहाँ समाप्त हो जाते हैं। उनके मौलिक विचार-भेद इस प्रकार है:—एक तो स्पष्टतया जन-साधारण में से था, यथार्थवादी; जो जीवन में अपने उल्टे-सीधे संघर्ष के आधार पर अपने विचार बनाकर, समय की माँग के अनुसार, उन्हें काम में लाता था। उसका अविस्मरणीय आकर्षण और प्रायः विनोदी रूप सबके सामने है। दूसरा पुस्तकों का गम्भीर अध्येता था; आदर्शवादी—जिसका जीवन-चरित अध्ययन के अवगुंठित ढंगों में ढाला गया था। उसने अमेरिकी शासन-प्रणाली की मूल प्रवृत्तियों से उत्पन्न प्रजातन्त्र के सिद्धान्त का विकास किया और उसे राष्ट्रों की महान् बिरादरी के रूप में विश्व भर में फैलाने का लक्ष्य बनाया।

अपनी भाग्य परीक्षा के लिए इस देश में आने वाला विल्सन खानदान का पहला आदमी, वुड्रो विल्सन का दादा जेम्स विल्सन था। उसने सन् १८०७ में काउण्टी डाउन आयरलैण्ड से युनाइटेड स्टेट्स के लिए समुद्र-यात्रा

की। लम्बी समुद्री-यात्रा के समय में ही उसका किसी से प्यार हो गया। बीस वर्ष का उत्सुक युवक जेम्स, नई दुनिया (अमेरिका) में पहुँचकर उन्नति करने की प्रबल आशा लिए, निश्चेष्ट ही नहीं बैठा रहा।

षोडषी बाला एन एडेम्स उसी जहाज़ पर यात्रा कर रही थी। काउण्टी डाउन अथवा काउण्टी एण्ट्रिम से आने वाली वह युवती भी युनाइटेड स्टेट्स में प्रवास के लिए क्यों आ रही थी, इसका पता नहीं चलता। कुछ भी हो, जैसा कि एटलाण्टिक-पार की यात्राओं में प्रायः होता है, जेम्स और एन एक-दूसरे को प्यार करने लगे। फ़िलेडेल्फ़िया में उतरने के अगले वर्ष वे विवाह-सूत्र में बँध गये। स्कॉट्स-आइरिश प्रवासियों में से अधिकांश की भाँति वे दोनों भी प्रेसबीटेरियन मत के थे। फिलेडेल्फ़िया के चतुर्थ प्रेसबीटेरियन चर्च के पादरी आचार्य जॉर्ज सी० पॉट्स ने उनका विवाह कराया। युनाइटेड स्टेट्स के सत्ताइसवें राष्ट्रपति की पैतृक पृष्ठभूमि में विवश करने वाली कठोरता के होते हुए भी प्रारम्भ से अन्त तक चर्च ने महत्त्वपूर्ण योग दिया है।

इक्कीस वर्षीय दूल्हा जेम्स विल्सन मुद्रण और पत्रकार-कला में दक्ष था। प्रजातन्त्र में उसकी अटूट आस्था थी। फिलेडेल्फ़िया पहुँचने पर उसे 'ऑरोरा' नामक पत्र में काम मिल गया। यह पत्र १५ फ्रेन्कलिन स्क्वेयर से प्रकाशित होता था जो कभी अमेरिकी पत्रकारिता के प्रधानाचार्य बेन फ्रेन्कलिन का निवास-स्थान था। विलियम ड्यूएन उसका सम्पादक था। यहाँ आने के पाँच वर्ष के भीतर ही जिम्मी विल्सन ने पत्र पर अधिकार प्राप्त कर लिया। परन्तु उसने उसे बहुत समय तक रक्खा नहीं। साहस और कौतुक उसके रक्त में थे और पश्चिम उसे अपनी ओर बुला रहा था। सन् १८१५ तक ओहियो पहुँचकर वह 'दि वेस्टर्न हेरल्ड' और 'स्ट्युबेनविल गज़ट' का सम्पादक और मालिक बन गया। पीछे वह उस दृढ़ नीति वाले पत्र की रक्त खौला देने वाली पाठ्य सामग्री द्वारा एण्ड्रू जैक्सन और उसकी प्रवृत्तियों से मरणान्त संघर्ष में जूझ पड़ा।

बड़े-बड़े परिवार और राजनीतिक युद्ध, जैसे उन दिनों के जीवन के अंग थे। विवाहित जीवन के बारह वर्ष पूरे होने के पूर्व ही जिम्मी और

एन विल्सन सात पुत्रों और तीन पुत्रियों का सुख भोग रहे थे।

पुत्रों में सबसे छोटा था, जोज़फ रग्गल्स विल्सन। उसका सन् १८२२ में स्ट्युबेनविल, ओहियो में जन्म हुआ था। अपने दूसरे भाइयों की तरह वह मुद्रक बनने के लिए तैयार किया गया था। उसने अपनी रुचि का एक छोटा-सा समाचार-पत्र निकाला। परन्तु थोड़े समय के अनुभव के बाद ही वह प्रेसबीटेरियन चर्च में शामिल हो गया। सन् १८४७ में वह उपदेशक नियुक्त हो गया। उसी वर्ष उसकी भेंट जेस्सी वुड्रो से हुई। युनाइटेड स्टेट्स में बसने आये वुड्रो वंश में से प्रथम की वह पुत्री थी।

जेस्सी का पिता आचार्य टॉमस वुड्रो एक प्रेसबीटेरियन पादरी था, जो अपनी विद्वत्ता और वाक्-पटुता के लिए माना हुआ था। सभी वुड्रो चर्च के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे अथवा शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे थे। इस वंश का अमरीकन अग्रज, आचार्य टॉमस वुड्रो, ग्लासगो-विश्वविद्यालय का स्नातक था। वह सन् १८३६ में न्यूयार्क में आया था। वहाँ उसकी पत्नी की थोड़े समय की बीमारी के बाद मृत्यु हो गई। अपने पीछे वह आठ बच्चों का परिवार छोड़ गई। सौभाग्यवश बच्चों की मौसी इज़ाबेला विलियमसन स्कॉटलैण्ड से इस परिवार के साथ ही आई थी। उसने इन मातृहीन बच्चों की देख-भाल की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली और बहुत अच्छी तरह निभाई। आचार्य टॉमस केनेडा में चर्च के भक्त बनाने में असफल रहा। तब वह ओहियो चला गया और चिल्लिकोथे में बस गया। वहाँ बारह वर्ष तक वह प्रथम प्रेसबीटेरियन चर्च का पादरी बना।

इस समय उसकी पुत्री जेस्सी, स्ट्युबेनविल की कन्या पाठशाला में शिक्षा पाती थी। वहाँ उसकी भेंट जोज़फ़ रग्गल्स विल्सन से हुई। वह स्ट्यु-बेनविल अकादेमी में अध्यापक था और प्रेसबीटेरियन चर्च का पादरी होने की प्रतीक्षा कर रहा था। दो वर्ष तक उनकी 'कोर्टशिप' चलती रही। फिर ७ जून, १८४९ को जेस्सी और जोजफ़ का विवाह हो गया और दुलहिन के पिता ने ही संस्कार कराया। उपदेशक के रूप में आचार्य जोज़फ़ की प्रथम नियुक्ति चार्टियर्स पैन्सिलवेनिया के एक चर्च ने की। थोड़े समय बाद ही सन् १८५५ में, स्टॉन्टन वर्जीनिया के प्रथम प्रेसबीटेरियन चर्च वालों ने उसे अपने यहाँ

बुला लिया। स्टॉन्टन, बर्जीनिया का सबसे पुराना नगर था। वहाँ के रिवाज और चलन एकदम दक्षिणी थे और उपनिवेश-युग के पुराने इतिहास से प्रभावित थे। विल्सन परिवार में उस समय दो छोटी पुत्रियाँ थीं। यहाँ मेन्से में उन्होंने अपना घर बना लिया। २८ दिसम्बर, १८५६ को उनके एक पुत्र का जन्म हुआ। अपने नाना के नाम पर उसका नाम टॉमस वुड्रो रखा गया।

टिम्मी जब चार महीने का ही था, तो उसकी माता कहा करती थी कि वह "सुन्दर और स्वस्थ है। दूसरे किसी भी बच्चे से बड़ा है और मोटा भी।" टॉमी के नाना को वह अपने पत्रों में विश्वास दिलाती थी कि जो कोई उस बच्चे को देखता था, उसे "एक सुन्दर बच्चा" और "जितना हो सकता है, अच्छा" बताता था। डाक्टर वुड्रो के अनुसार वह केवल "बहुत हृष्ट-पुष्ट और मोटा" ही नहीं था, वह जनरल एसेम्बली का मॉडरेटर बनने योग्य तेजस्वी भी था।

उसके बचपन का पहला लिखित विवरण ऑगस्टा में पादरी के भवन से मिलता है। जब वह चार वर्ष का था और अपने पिता के द्वार पर खड़ा था, तो एक आदमी सड़क पर चिल्लाता हुआ दौड़ा जा रहा था—"मिस्टर लिंकन चुन लिये गये! अब युद्ध होगा।" सन् १९०९ में विल्सन ने एब्राहम लिंकन पर भाषण देते समय इस घटना के सम्बन्ध में कहा था कि "उस आदमी की उत्तेजना-भरी आवाज़ से प्रभावित होकर मुझे स्मरण है, मैं भागकर भीतर अपने पिता से पूछने गया था कि उसका क्या मतलब था।"

अगले चार वर्षों में दक्षिण को ऐसे भयंकर युद्ध की ज्वालाओं और भावनाओं में संघर्ष करना पड़ा, जैसा कि इस देश ने पहले कभी भी नहीं लड़ा था। विल्सन-परिवार इन सारे संघर्षों में था और उनकी सहानुभूति पूर्णतया दक्षिण वालों के प्रति थी। परन्तु इस संकट काल में जो-कुछ टॉमी ने अपने आस-पास होते देखा था, उसकी याद में किसी पक्ष का भी आग्रह उसके विचारों में परिवर्तन नहीं ला सका। एक बार वह रॉबर्ट ई० ली के कक्ष में गर्व के साथ, जितना भी किसी नन्हें बालक में हो सकता है, खड़ा हुआ था और अपना यह अनुभव कई वर्ष पीछे उसने बताया था कि उसने

उस महान् योद्धा के मुख को प्रशंसा की दृष्टि से देखा था। एक और समय पर उसने जेफ़र्सन डेविस और एलैक्जेण्डर स्टीफ़ेन्स को फ़ेडरल सिपाहियों की एक टुकड़ी द्वारा उत्तर के अपने बन्दीघर में ले जाये जाते देखा था।

ये सब विषादपूर्ण प्रसंग और नाटकीय घटनाएँ किसी भी बालक के मानस-पटल पर अमिट छाप छोड़ सकती थीं। टॉमी उन्हें कभी नहीं भूला। अपने दक्षिणी होने पर जीवन भर उसने गर्व किया। परन्तु, गृह-युद्ध से उत्पन्न द्वेष की भावना उसने मन में नहीं आने दी। घर, बस्ती, जहाँ उसका जन्म हुआ था, और बाल्यकाल के वातावरण ने जो प्रभाव उस पर डाले थे, उन पर उसने हमेशा ज़ोर दिया। उसने स्वीकार किया कि "बार-बार उसे यह कहने को विवश किया जाता था कि देश-भर में मात्र ठिकाना और विश्व-भर में अकेला स्थान दक्षिण ही है, जिसके विषय में उसे कुछ और नहीं सुनना।"

ऑगस्टा में विल्सन-परिवार का घर विद्वत्ता और ग्रन्थों के विस्तृत एवं समृद्ध ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। परन्तु उसमें बचपन का "गौरव" होने पर भी, टॉमी में विद्या की ओर कोई रुझान दिखाई नहीं देता था। यदि उसके मस्तिष्क में साधारण से अधिक क्षमता थी भी, तो वह बचपन के वर्षों में बेकार रही।

उन दिनों डिकेन्स का साहित्य सर्वप्रिय था। डॉ० विल्सन उसकी रचनाओं में से कुछ अंश पढ़कर अपने परिवार का मनोरंजन किया करते थे। स्कॉट के प्यार के क़िस्से और कूपर की कहानियाँ भी वे कभी-कभी सुनाया करते। टॉमी के पिता की आवाज़ अत्यन्त प्रभावशाली थी। छपे पन्नों से दुःख अथवा हास्य का वर्णन, भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने में वे एक पूरे कलाकार थे। इसमें कोई शक नहीं कि उनका पुत्र उनकी बातों को ध्यान से सुनता और आनन्द लेता। परन्तु जब तक उसका लड़कपन नहीं बीत गया, उन पुस्तकों में वर्णित उत्साह एवं मनोरंजन का वह रस नहीं ले पाया। उसे "पिछड़ा हुआ" और "सुस्त" माना जाता था। ऐसा लगता था कि वुड्रो और विल्सन वंशों की परम्परागत विद्वत्ता के तेज की छाप उस पर पड़ने से रह गई थी। वह नौ वर्ष की आयु तक

वर्णमाला का ज्ञान भली-भाँति नहीं प्राप्त कर पाया था। ग्यारह वर्ष की अवस्था में दूसरों की देखा-देखी वह पढ़ने लगा था। सब अमरीकन जीवनियों में अत्यन्त सर्वप्रिय, पारसन वीम्स लिखित 'दी लाइफ़ ऑफ़ वाशिंगटन' नामक पुस्तक ही उसने सर्वप्रथम पढ़ी।

पब्लिक स्कूल के कायदे-कानून और नियन्त्रण टॉमी के अनुकूल नहीं थे। वह शरीर से दुर्बल था। उसका स्वास्थ्य नाजुक और अस्थिर था। वह ऐनक लगाता था। ये सब बाधाएँ होने पर भी अपनी जान-पहचान के बालकों को विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों एवं बलशाली खेलों के लिये संगठित करने की उसमें ललक रहती। इस प्रकार उसने 'लाइट फुट' क्लब की स्थापना की। यद्यपि 'बेसबॉल' इस क्लब के सदस्यों का मुख्य खेल था, पर टॉमी ने कुछ नियम बनाये और उनका पालन करवाया, जिससे उस क्लब ने लोकतन्त्रीय वाद-विवाद सभा का रूप ले लिया। टॉमी उस सभा का प्रधान होने के साथ-साथ 'बेसबॉल' का शिक्षक भी था। वह स्वयं बहुत अच्छा खिलाड़ी नहीं था, पर उसके शिक्षण के फलस्वरूप आसपास के गाँवों और नगरों की बेसबॉल टीमों पर 'लाइट फ़ुट' की विजय होती थी।

निश्चय ही खेलों में अधिक ध्यान होने के कारण वर्णमाला का ज्ञान प्राप्त करने और पढ़ने-लिखने में वह कुछ पिछड़ गया। छोटी आयु में ही साथियों से घुलने-मिलने और उन्हें संगठित करके बेसबॉल के खेल में विजय दिलाने के आनन्द का उसके चरित्र पर स्थायी प्रभाव बना रहा। स्कूल के नियमित शिक्षण के नाम पर उसने जो कुछ सीखा, वह उन प्राइवेट विद्यालयों की पढ़ाई थी, जहाँ वह बचपन में भेजा गया था। इस निर्माण-काल में उसके मानसिक विकास के क्रम में सबसे अधिक उसके पिता का प्रभाव था।

शिक्षा के सम्बन्ध में आचार्य डॉक्टर विलसन के विचार लोकाचार के अनुरूप नहीं थे। उनके मत के अनुसार युवक एक ऐसा सशक्त विश्वकोश नहीं था, जिसके कोरे पन्नों पर भावी निर्देश के लिए संसार का ज्ञान अमिट रूप से अंकित किया जाये। उन्होंने टॉमी से कहा—"मेरे बेटे,

मस्तिष्क कोई ठूंस-ठाँस करने योग्य रबड़ की नली नहीं है।" विज्ञान, प्राचीन वाङ्मय और अर्वाचीन साहित्य विचार के लिए अनित्य सामग्री नहीं। ये तो उसे सान पर धरने का काम करते हैं। पिता और पुत्र दोनों मिलकर ग्रन्थों का अवगाहन करते, स्वभाव और प्रकृति के सत्य का नित्य कर्म में अध्ययन करते और जो कुछ समझ में आता, उसका बड़ी लगन और चाव से विश्लेषण करते। इसका प्रायः चमत्कारी फल मिलता जिसकी साधारण स्कूली नीरस पद्धति से कदापि आशा नहीं की जा सकती थी।

वुड्रो और विल्सन परिवारों का यही ढंग था। वे प्रेसबीटेरियन मत में दृढ़ और अध्यापन में मौलिकता एवं विचार करने में सुनिश्चितता के परम पोषक थे। ज्ञान के घिसे-पिटे मार्ग पर वे चलते थे परन्तु किसी भी नये मार्ग पर चल पड़ने में संकोच नहीं करते थे, जिधर सत्य दिखाई दे, भले उसका रूप कितना ही निराला क्यों न हो।

आगे बढ़ने के इस काल में विल्सन परिवार वाले बेचैन रहते थे। वे न्यूयार्क आजमा चुके थे और अब स्थायी रूप से टिकने के विचार से ओहियो में आ बसे थे। आचार्य डॉक्टर जोज़फ़ रग्गल्स विल्सन के नेतृत्व में एक शाखा केवल कुछ वर्षों के लिए वर्जीनिया चली गई थी। स्टॉन्टन के बाद "शान्त, निद्रालु ऑगस्टा" का मनोहर, सुखकर पादरी भवन, परिवार का घर बन गया, जहाँ वे बारह वर्ष तक रहे। उसके पश्चात् उन्होंने अपना निवास कोलम्बिया (पश्चिम केरोलिना) में बदल लिया।

उन सब स्थानों से जहाँ अब तक डॉ० विल्सन को जाना पड़ा था, कोलम्बिया में पादरी का क्षेत्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। उस नगर में एक अध्यात्म का विद्यालय था, जिसके विद्यार्थी नये पादरी की चमत्कारी वाक्पटुता और विद्वत्ता का आदर कर सकते थे। टॉमी इसी विद्याव्यसनी वातावरण में पनपा। उसके जीवन की महत्त्वाकांक्षा उसके भीतर हिलोरें लेने लगी। सोलह वर्ष की आयु में पिता की मेज़ के ऊपर लटकते एक चित्र की ओर संकेत करते हुए अपने एक चचेरे भाई से उसने कहा था—"वह ग्लैडस्टन है, आज तक के राजनीतिज्ञों में सबसे महान्। मैं भी राजनीति का पण्डित बनना चाहता हूँ।"

बचपन जा चुका था। अलिफ़-लैला के स्वप्न की भाँति वयस्कता उभरने लगी। उसे न तो पादरी का काम आया और न ही शिक्षक का धन्धा। राष्ट्रों के मामलों में नेता बनने में ही उसे कुछ तन्त नज़र आया। पारिवारिक परम्परा के अनुसार अध्यात्म ज्ञान की बारीकियाँ निकालना और अनिच्छुक लोगों को ग्रीक धातु रटवाकर उनके गले के नीचे उतारने की अपेक्षा, ग्लैडस्टन, जिसने साम्राज्य बनाये और बिगाड़े, के अनुरूप बनना कितना मोहक था।

परन्तु ग्लैडस्टन के आदर्श की परछाई तक भी पहुँचने के पूर्व बहुत कुछ करने को था। दो वर्षों में ही परिवार को फिर स्थान बदल कर विल्मिगटन (डेलावेयर) जाना पड़ा और टॉमी शारलोट, उत्तरी कैरोलिना में डेविडसन कॉलेज में चला गया। यह ज्ञानपीठ निश्चितरूपेण पूर्णतया प्रेसबीटेरियन मत को मानता था। डॉक्टर विलसन इस संस्था के न्यासियों में से एक था। यह बात कुछ खेद की ही है कि डेविडसन कॉलेज की पढ़ाई-लिखाई में साधारण से ऊपर उठने योग्य कोई विशेष स्थान प्राप्त करने में टॉमी असफल रहा। उसके पिता का शिक्षण भले ही चरित्र-निर्माण में सर्वोत्तम रहा हो, परन्तु कॉलेज जिसकी साधारणतया अपने विद्यार्थियों से अपेक्षा करते हैं, वैसा ज्ञान देने में वह पूरा नहीं उतरा।

टॉमी का दुर्बल स्वास्थ्य भी एक बाधा थी। पुस्तकों के अध्ययन में लगे रहना और पाठ्य-विषयों की तैयारी उसे भारी पड़ती थी। परन्तु वेसबॉल का अपना अभ्यास वह करता रहता। उसमें वह प्रायः सेण्टर-फ़ील्ड होता और 'बैटर' के रूप में एक सामान्य खिलाड़ी रहता। एक सहपाठी का मत था कि "यदि टॉमी विलसन इतना सुस्त न होता तो वह एक अच्छा खिलाड़ी होता।" परन्तु, उसकी मुख्य रुचि न क्लास के कमरे में थी और न ही बेसबॉल के मैदान में। उसका मन तो वाद-विवाद सभा में लगता था। उन दिनों लड़कों की चर्चा के विषय कुछ ऐसे प्रश्न होते थे : "क्या लिंकन की मृत्यु दक्षिणी भागों के लिए हितकर थी?" "क्या जॉन विल्किस बूथ देशभक्त था?" टॉमी जब पहली बार वादी के रूप में आया, तो प्रस्ताव के विपक्ष में था : "मर्यादित राजतन्त्र की अपेक्षा रिपब्लिकन

पद्धति का शासन अधिक श्रेयस्कर है।"

डेविडसन कॉलेज के जीवन में उसके दुर्बल स्वास्थ्य से बड़ी बाधा आई। एक वर्ष के भीतर ही, बुरी तरह बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य लेकर वह विल्मिंगटन लौट आया। स्वस्थ हो जाने पर सन् १८७५ में वह प्रिन्सटन कॉलेज में प्रविष्ट हुआ। उस समय डॉक्टर मैक्कोश अध्यक्ष था। तब जो बहस चल रही थी, उसमें वह विकासवाद के सिद्धान्त का प्रबल समर्थक था और उसे डॉक्टर विल्सन एवं उनके पुत्र का उत्साहवर्धक सहयोग प्राप्त था।

विद्याध्ययन और व्यवहारी लोगों के सम्पर्क में आने के कारण टॉमी को प्रिन्सटन में अब तक के सब स्थानों से अधिक बड़ा क्षेत्र मिला। वहाँ भी उसकी रुचि खेल-कूद में बनी रही। अपने मन-पसंद विषय का कुतूहलपूर्ण अनुसंधान करते समय उसे अंग्रेज लेखक बैजहॉट मिल गया। राजनीतिक अर्थशास्त्र पर टॉमी के विचार बनाने में उसके मत का गहरा प्रभाव पड़ा।

प्रिन्सटन में अपने दूसरे वर्ष में जो पत्र उसने अपने पिता को लिखा, उसमें एक और नई बात की भी चर्चा की। उसने डॉक्टर विल्सन को दृढ़तापूर्वक बताया—"मेरा मन उत्कृष्ट श्रेणी का है।" प्रिन्सटन में हुए उसके बुद्धिवादी अनुभव इस असाधारण घोषणा का मूल और अभिप्राय सिद्ध करते हैं। उसका एक सहपाठी लिखता है कि वही अकेला था, जिसके मन में "कॉलेज जाने का कोई निश्चित लक्ष्य था।"

यह ध्यान में रखते हुए कि वह सार्वजनिक कार्यों में अपनी विशेष रुचि की घोषणा कर चुका था, वह राजनीतिक उत्कर्ष प्राप्त कराने वाले कंटीले मार्ग पर, चलना मन में धार चुका था। यह कोई अचरज की बात नहीं थी कि प्रिन्सटन जाकर पहले वर्षों में ही राजनीति में उसने अच्छा स्थान बना लिया। कॉलेज के दूसरे वर्ष सन् १८७६ में, देश में इतिहास के सर्वाधिक उत्तेजनापूर्ण राष्ट्रपति का चुनाव हुआ। संघर्ष रदरफोर्ड बी० हेईज़ और सेमुअल जे० टिल्डन में था। जब अन्त में हेईज़ राष्ट्रपति हो गया, तो देश-भर के डैमॉक्रेटों का रोष बहुत चढ़ गया। जनता पुकार उठी—"धोखा!" "जनता की रुचि के आदमी से राष्ट्रपति का पद चोरी से छीना

जा रहा है।" सिरफिरे युद्ध की बात करने लगे। शासन की नींवें हिलने लगीं। ऐसा विस्फोट राजनीतिक इतिहास में शायद ही कभी हुआ हो परन्तु टिल्डन ने अपने अनुगामियों का जोश शान्त करके दूसरे गृहयुद्ध की कल्पना हँसी में टालते हुए वस्तुस्थिति को ठण्डे दिल से स्वीकार कर लिया और हेईज़ ने बिना किसी विरोध के राष्ट्रपति पद का दायित्व सम्भाल लिया। परन्तु, उस परीक्षण ने, जिसमें से देश निकला था, अनिवार्य रूप से प्रिन्सटन के दूसरे वर्ष के विवेकी विद्यार्थी का मस्तिष्क शासन की समस्याओं पर अपूर्व गम्भीर चिन्तन करने में लगा दिया।

क्या अमरीकन पद्धति, जैसी कि पूर्वपुरुषों ने निर्धारित की थी, निर्दोष थी? क्या संविधान, जैसे उसके अर्थ लगाये जा रहे थे, किसी राष्ट्र के विकास के लिए सब प्रकार उचित और अत्यन्त प्रजातान्त्रिक माध्यम था? वह मन में सोचने लगा, ऐसा क्यों था कि पिछले कुछ वर्षों में ऐसे वागीशों का अभाव हो चला, जो शुद्ध मन से वाक्-चातुर्य के बल पर अपने राजनीतिक सिद्धान्त स्पष्ट करके समुदायों के मन बदल डालने में समर्थ हों। इन छुटभैये राजनीतिज्ञों के युग में पैट्रिक हेनरीज़, डेनियल वेब्सटर्स सरीखे दिग्गजों का क्या हुआ? जनता का मत बनाने वाले ऐसे महान् वागीश दूसरे राष्ट्रों में तो थे। उदाहरण के लिए ग्लैडस्टन एक था। अंग्रेज़ी संविधान ने प्रत्यक्ष रूप से जनता को वह आवाज़ प्रदान की, जो अधिक स्पष्ट और सीधी सुनी जाती है। परन्तु जिन राजनीतिक परिस्थितियों में युनाइटेड स्टेट्स फँसता जा रहा था; वैसा होना सम्भव नहीं लगता था। जहाँ शासन के निर्णय, कांग्रेस-भवनों में हुए प्रभावशाली वाद-विवाद का निष्कर्ष न हों, बल्कि काँग्रेस की समितियों के हाथ में पड़कर काट-छाँट कर निःसत्व बना दिये गये हों, वहाँ समर्थ नेतृत्व कैसे टिक सकता था?

उसके दीक्षान्त वर्ष में इन विचारों का बीज एक प्रभावोत्पादक निबन्ध के रूप में फूट निकला। टॉमी ने, जो अब वुड्रो विल्सन हो गया था, 'युनाइटेड स्टेट्स में मन्त्रिमण्डल द्वारा शासन' शीर्षक से वह लिखा। 'दि इन्टरनेशनल रिव्यू' नामक पत्रिका को, जिसके सम्पादक-मण्डल में हैनरी केबेट लॉज था, वह निबन्ध दिया गया और स्वीकार कर लिया गया।

उसी वर्ष विल्सन प्रिन्सटन से स्नातक हो गया और विलिंमगटन लौट आया। उसके पिता को उस पर गर्व था। विचारक और वाद-विवाद में दक्ष होने का भी उसे मान था और उसके द्वारा राजनीतिक इतिहास पर लिखे गये निबन्ध के लिए भी कुछ कम गुमान न था। इतना होने पर भी डॉक्टर विल्सन के हर्ष में एक कसक थी। राजनीति और राजकार्य का ज्ञान वे विषय नहीं थे, जिनकी बूढ़ा उपदेशक अपने आत्मज से अपेक्षा करता था। कहते हैं कि अपने प्रिय टॉमी के प्रारम्भिक निबन्धों में से एक पढ़ने पर वह चिल्ला उठा था—"मेरे बच्चे, काश कि अपनी इस प्रतिभा को लेकर तुमने धर्म-प्रचार का कार्य किया होता!"

परिच्छेद २

विधि और विवाह

"वर्जीनिया की ओर से सेनेट सदस्य।" कॉलेज में प्रवेश करने से वर्षों पूर्व वुड्रो ने अपना यह रूप मन में बैठा लिया था। उसे अपने जीवन के लक्ष्य के सम्बन्ध में कोई भ्रान्ति नही थी।

प्रिन्सटन में जिन विषयों के अध्ययन में उसने अपना मन लगाया, उनका लक्ष्य था : राजनीतिक जीवन-चर्य्या। इतिहास, शासन का गाम्भीर्य, वाक्-पटुता आदि अस्त्रों के प्रयोग से वह वांछित फल पाना चाहता था।

वाक्-शक्ति विलास के लिए उसने केवल राजनीतिक समस्याओं पर वाद-विवाद का ही सहारा नहीं लिया, उसने अपना स्वर भी साधा और शंका-निवारण के जो भी गुण उसमें थे, उनमें असली डिमॉस्थनीज़ परंपरा के अनुसार, यत्नपूर्वक चमत्कार पैदा किया। प्रिन्सटन के पॉटर्सफ़ील्ड शेल्टर में अथवा सप्ताह के दिनों में विलिमगटन में अपने पिता के खाली गिरजे में उन प्रसिद्ध वक्तृताओं का, जिन्होंने इतिहास बनाने में अपना महत्त्व सिद्ध किया था, वह अभ्यास किया करता। किसी विरले अवसर पर जो उसका वाक्-ताण्डव देख-सुन लेते होंगे, उसे पागल समझते होंगे। उनके मत का उसके लिए कोई मूल्य नहीं था। यद्यपि वह अपनी बात यत्नपूर्वक परछाइयों को ही समझाता था, परन्तु, उसके व्याख्यान में सत्त्व होता था।

वह निश्चय ही राजकीय विद्या का पण्डित बनेगा, जनमत का मुखिया "वर्जीनिया की ओर से सेनेट का सदस्य।" परन्तु, वह बाईस वर्षीय उत्साही कॉलेज ग्रेजुएट, ऊंचाई में ५ फीट ग्यारह इंच से थोड़ा ऊपर और स्वास्थ्य में दुर्बल पुनः विलिमगटन में घर लौट आया। उसे अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति

अनुमान से भी अधिक कठिन लगी। 'इन्टरनेशनल रिव्यू' में मन्त्रि-मण्डल द्वारा शासन पर प्रकाशित निबन्ध से प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेने पर भी युवा राजनीतिज्ञों का, जिनके मस्तिष्क में शासन-सम्बन्धी नवीन विचार उबल रहे थे, कोई महत्त्व नहीं था। धर्म से ओत-प्रोत उस पैतृक गढ़ी में राजनीति एकदम बाहरी विषय था। पादरी और अध्यापक पूर्वजों के अबाध क्रम ने उसका भविष्य निष्प्रभ बना दिया था। उस वांछित संसार के लिए जहाँ राष्ट्रों के भाग्यों का निर्णय होता है, उसका मार्ग प्रशस्त करने को किसी और बात की अपेक्षा थी।

कानून ! राजनीति में प्रवेश करने के लिए पहले वकील बनो। यद्यपि सब राजनीतिज्ञ वकील नहीं होते, तो भी बहुत से वकील तो राजनीतिज्ञ होते ही हैं। प्राचीन अथवा अर्वाचीन इतिहास यह बात सहज स्पष्ट कर देता है। संसद् (काँग्रेस) निश्चय ही वकीलों से भरी हुई थी। अतः किसी रुचि के कारण नहीं, बल्कि एक महान् लक्ष्य की प्राप्ति का माध्यम बनाने के उद्देश्य से ही वुड्रो ने कानून का व्यवसाय चुन लिया। इसी विचार से वर्ष का अन्त होने से पूर्व ही वह वर्जीनिया विश्वविद्यालय का विद्यार्थी बन गया।

अपनी मातृभूमि में लौट आना ठीक ही हुआ। शार्लोटेसविले का मॉन्टी-सेलो विश्वविद्यालय जेफर्सन के घर से थोड़े ही फासले पर था। परन्तु उन दिनों, विल्सन जो स्वयं को "कुछ-कुछ फ़ैडरलिस्ट" समझता था, अमरीकी प्रजातन्त्र की जेफ़र्सन द्वारा की गई व्याख्या को स्वीकार करने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं था। जितने समय भी वह शार्लोटेसविले में रहा, मॉन्टी-सेलो के ऐतिहासिक देवस्थान में एक बार भी देवदर्शन को नहीं गया।

दक्षिण के प्रति उसकी सहानुभूति कुछ कम गहरी नहीं थी। परन्तु राज्यों के संगठन में उसकी घोर आस्था से उसके सहपाठी विस्मित थे। विश्वविद्यालय की पत्रिका में जॉन ब्राइट पर उसका जो भाषण प्रकाशित हुआ, उसमें उसने स्पष्ट कर दिया था कि 'कॉन्फ़ेड्रेसी (संघ) की असफलता से मैं प्रसन्न हूँ।' उसने उन सब आपत्तियों का चित्र भी खींचा था, जिनके फलस्वरूप उसके मतानुसार यूनियन के दो भिन्न तथा स्वतन्त्र प्रभुसत्तापूर्ण

राज्यों के विभक्त हो जाने पर दक्षिण का पतन हो जाता। ऐसे समय में जबकि गृह-युद्ध सिर पर मँडरा रहा था, दक्षिण के प्रति उसकी यह विपक्ष वृत्ति होने पर भी वर्जीनिया-विश्वविद्यालय में विल्सन का जीवन मित्रों से पूर्ण था और उनमें से अनेक तो अन्त तक बने रहे।

विल्सन के प्रथम प्रेम की लीला भी चली। उसकी जन्म भूमि स्टॉण्टन में उसकी चचेरी बहन हैरियट हैट्टी वुड्रो ऑगस्टा महिला विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रही थी। स्टॉण्टन और शार्लोटिसविले के बीच एक पर्वत होने पर भी वुड्रो उसे पार करने से नहीं घबराया। उस युवती के अत्यन्त आकर्षक होने के कारण वह कई बार उससे मिलने गया। उसके घर के लोग चिलिकोथे (ओहियो) में रहते थे। युवा लॉकिनवार वहाँ यह सोचकर गया कि उन सम्बन्धियों के साथ सैर के बहाने छुट्टियाँ बिता आना उसके अपने हित में आवश्यक था। उस अवसर पर उसने कुमारी हैट्टी से विवाह का प्रस्ताव किया। उसे लगा कि नारी का पूर्ण सौन्दर्य उसमें सिमट कर रह गया है। परन्तु वह युवती नहीं पसीजी। चचेरे भाई के प्रस्ताव को, जो बड़ी चतुराई और आग्रहपूर्वक प्रस्तुत किया गया था, उसने ठुकरा दिया। इस प्रकार इस प्रथम प्रेम-लीला का अन्त हो गया।

वुड्रो विनोदी स्वभाव का था। रक्त की प्रबल स्कॉच-आयरिश धारा के साथ उसकी नसों में उसके पूरक रस का प्रवाह होना भी स्वाभाविक था। औपचारिक और नीरस अवसरों पर भी राजनीतिक इतिहास और कानून का यह अत्यन्त गम्भीर विद्यार्थी परिहास और मनोरंजन उपस्थित कर देने के कौशल के कारण अपने साथियों में सर्वप्रिय था। शारीरिक खेलों में उसका विशेष व्यक्तित्व न होने पर भी विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने शारीरिक शक्ति के लिए पदक-वितरण-समारोह का उसे संचालक बना दिया। ऐसे कार्यों की व्यवस्था उस जैसी अन्य कोई नहीं कर सकता था। अवसर पाते ही वह ऐसा सौष्ठव और उल्लासपूर्ण आशुपद उपस्थित कर देता, जैसे विद्यार्थी समाज में अन्यत्र कहीं भी सम्भव नहीं था।

उसके उल्लास, व्यंगोक्ति के अक्षय भण्डार और प्रभावोत्पादक वक्तृत्व ने उसे विश्वविद्यालय के सामाजिक जीवन का प्रमुख बना दिया। परन्तु

बाहरी गतिविधियों के साथ पुस्तकों के अध्ययन का भार उसका कोमल शरीर सहन नहीं कर सका। सन् १८८० के अन्त तक उसका स्वास्थ्य बिल्कुल ख़राब हो गया और वह अपने घर, विल्मिंगटन चला गया।

उसके बाद डेढ़ वर्ष तक वह क़ानून का अध्ययन स्वयं करता रहा। शारलोट्सविले के आमोदपूर्ण जीवन के पश्चात् एक ही विषय पर और वह भी जिसमें कोई रुचि न हो, एकान्त में जुटे रहने का परिणाम उत्साह-प्रद नहीं था।

इससे निपट कर वह बढ़ते हुए और समृद्ध नगर ऐटलान्टा चला गया। वहाँ उसे अच्छी वकालत चल जाने की आशा थी। विल्सन के उत्साह और उद्यम के लिए जॉर्जिया की भावी राजधानी से बढ़कर और कौन-सा स्थान हो सकता था? यह ठीक है कि ऐटलान्टा की जनसंख्या सैंतीस हजार से कुछ ही ऊपर थी, परन्तु औद्योगिक दृष्टि से यह व्यवसायी नगर, निश्चित रूप से इस बात का सूचक था कि यह नवीन दक्षिण का केन्द्र बन जायेगा। ऐसी दशा में विश्वास किया जा सकता था कि एक चैतन्यशील वकील का धन्धा व्यापक बन जाने के सर्वोत्तम अवसर वहाँ उपस्थित होंगे।

विल्सन ने तनिक भी ढील नहीं की। वर्जीनिया-विश्वविद्यालय का एक पूर्व विद्यार्थी ई० जे० रेनिक इसी प्रकार के विचार से नगर में आया हुआ था। दोनों में समान उत्साह था और एक ही-से लक्ष्य थे। दोनों में शीघ्र ही मैत्री हो गई। "रेनिक एण्ड विल्सन, एटॉर्नीज़-एट-लॉ, ऐटलान्टा, जॉर्जिया" के नाम से व्यवसाय में भागीदारी कर ली गई। उनका नाम-पट्ट ४८, मेरीटा स्ट्रीट के दूसरे खण्ड के पीछे कमरा नं० १० के ऊपर झूलने लगा।

पर दुर्भाग्यवश उनकी मुक़दमे लड़ने वालों की प्रत्याशित भीड़ की आशा पूरी न हुई। परन्तु वे राजनीतिक समस्याओं का समाधान करने में पड़ गये, जिसमें आनन्द के अतिरिक्त लाभ कोई नहीं था। किसी भी दिन ब्लैकस्टन की अपेक्षा बैजहॉट की चर्चा अधिक मनोनुकूल हो जाती थी। विदेशी निर्माताओं पर असह्य कर के प्रभाव से उत्पन्न स्थिति जानने के लिए आँकड़े बटोरने संसद् (काँग्रेस) का तटकर कमीशन ऐटलान्टा में आया।

जवानी के जोश से पूर्ण वुड्रो ने एक सार्वजनिक सभा में खुले व्यापार के पक्ष में धुग्रांधार भाषण दिया। उसका मस्तिष्क तर्कों से भरा पड़ा था। सरकारी रक्षण देने के सिद्धान्त की उसने धज्जियाँ उड़ा दीं।

उसने कहा, "मेरा मत है कि अपने ही साधनों पर निर्भर रहने को विवश निर्माता व्यापार की स्वाभाविक होड़ में पड़ कर श्रेष्ठ निर्माता बन सकते हैं, न कि जब उन्हें कह दिया जाये कि "तुम सरकार की गोद में पलोगे और तुम्हें अपने पैरों पर खड़े होने की कोई आवश्यकता नहीं।"

कमिश्नरों में से एक ने प्रश्न किया—"तो क्या तुम सब तटकर-नियम तोड़ देने की वक़ालत कर रहे हो?"

उत्तर तीखा और संगत था—"हाँ, रक्षण के सब नियमों की और केवल राज्य की आय के लिए एक तटकर स्थिर कर देने की।"

न्यूयॉर्क के 'वर्ल्ड' नामक पत्र का प्रतिनिधि दक्षिणवासी वॉल्टर हाइन्स पेज कमीशन के साथ था। विल्सन द्वारा की गई भर्त्सनापूर्ण घोषणाओं से पेज आह्लादित हुआ। उसकी अपनी राजनीतिक मान्यताओं को उन से बल मिला। दोनों में गाढ़ मैत्री स्थापित हो गई। तटकर सम्बन्धी वाद-विवाद की गूँज का अन्त होने के पूर्व ही पेज और अन्य मित्रों के बल पर, जो इन्हीं धारणाओं में हिलोरें ले रहे थे, विल्सन ने न्यूयॉर्क के फ्री ट्रेड ग्रुप की ऐटलान्टा-शाखा चालू कर दी। वाद-विवाद परिषद् के रूप में तो वह सफल थी, परन्तु रेनिक एण्ड विल्सन नामक फ़र्म, जिसके एकान्त कमरे में इस ग्रुप की स्थापना की गई थी, अपने लिए मुवक्किल खोजने का व्यर्थ प्रयास करती रही।

१९ अक्तूबर, सन् १८८२ को विल्सन को वकीलों की सूची में शामिल कर लिया गया। उसे जॉर्जिया राज्य में वकालत करने की अनुमति मिल गई। कालान्तर में उसे फेडरल अदालतों में भी काम करने की छूट दे दी गई। परन्तु राज्य में अथवा राष्ट्र में कहीं भी इन क़ानूनी सुविधाओं से रेनिक एण्ड विल्सन के कारोबार को कोई लाभ नहीं हुआ। उनका व्यापार मुवक्किलों की प्रतीक्षा करने तक ही सीमित रहा, जो कभी नहीं आये। एक भी मुवक्किल नहीं! लोगों के कहने के अनुसार ऐटलान्टा, सम्भवत:

बढ़ता हुआ शहर, समृद्ध, प्रभावशाली और रेलरोड का केन्द्र था। परन्तु वहाँ वकीलों की भीड़ थी। उनमें से आधों के लिए भी वहाँ गुन्जाइश नहीं थी। एक वर्ष तक व्यर्थ प्रतीक्षा करने के पश्चात् रेनिक एण्ड विल्सन के छोटे भागीदार ने लिखा कि भग्न आशाओं के झण्डे तले चलते काफ़िले में वह सन् १८८३ के बसन्त में "हर्षपूर्वक" सम्मिलित हो गया।

ऐटलान्टा के अनुभवों का अन्त होने के पूर्व, वुड्रो को अपनी माता के काम से रोम के एक निकटवर्त्ती नगर में जाना पड़ा। वहाँ पारिवारिक सम्पत्ति सम्बन्धी मामलों की देख-भाल करनी थी, सो श्रीमती विल्सन ने रेनिक एण्ड विल्सन को अपने हितों की रक्षा का भार मुख्तार के रूप में सौंप दिया। इस फ़र्म की वही एकमात्र मुवक्किल थीं। जैसा कि होता है यह साधारण-सा काम था, परन्तु इस यौवनपूर्ण वकील के लिए रोम जाना उसके जीवन की सबसे बड़ी घटना हो गयी।

अपने धार्मिक लालन-पालन के अनुसार, रविवार को प्रातः वह प्रथम प्रेसबीटेरियन गिरजाघर में गया। आचार्य डॉक्टर एक्सन उपदेशक थे। प्रार्थना आरम्भ होने की प्रतीक्षा करते समय वुड्रो की दृष्टि एक युवती पर अटक गयी। गिरजे में प्रवेश करके वह धीरे-धीरे पूजा-कक्ष की ओर चलने लगी। वह लगभग उसके समवयस्क थी और गहरे काले वस्त्र धारण किये थी। एक नन्हा बच्चा उसकी अँगुली थामे था। वुड्रो ने मन में सोचा विधवा है। उसके केश सुनहरी थे और आँखें गहरी भूरी। संसार में उससे भी अधिक सुन्दरियाँ हो सकती हैं, परन्तु उसकी जानकारी में नहीं थीं। कज़िन हैट्टी भी वैसी नहीं थी। मन्त्रमुग्ध-सा वह उसे देखता रहा। उसके मस्तिष्क में मार्लो की प्रसिद्ध पंक्ति गूँज उठी। सचमुच यह घटना प्रथम दर्शन पर ही होने वाला प्रेम था।

जब गिरजे का पूजा-कार्य पूरा हो चुका, तो एक सम्बन्धी श्रीमती बोन्स द्वारा उसे पता चला कि जिस युवती ने उसे मुग्ध कर लिया था, वह विधवा नहीं थी जैसाकि विल्सन ने अनुमान लगाया था। वह पादरी की पुत्री थी और उसका नाम या एलन लुई एक्सन।

एक बार भेंट हुई और फिर पादरी के भवन में मिलना-जुलना होने

लगा। डॉक्टर एक्सन की छोटी-सी गृहस्थी की मुखिया थीं एलन एक्सन जो अपनी माता का शोक मना रही थी। एटलान्टा के प्रेम-व्यथित वकील ने उसे कल्पना से भी कहीं अधिक मनहर पाया। उसके आकर्षण से बचा नहीं जा सकता था। इसके अतिरिक्त अब तक जिन देवियों से वह मिला था, वे स्त्रियाँ न होकर उस काल की महिलाएँ थीं। यह उनसे कुछ अलग थी और असाधारण तेजसी एवं संस्कारी बुद्धि वाली थी। यह भी पता चला कि एलन का अध्ययन और उसकी बौद्धिक रुचियाँ वास्तव में विल्सन से भी अधिक विस्तृत थीं। गम्भीर बने रहना उसे प्रिय था। उस के मित्र उसे पुरुष-द्वेषी कहते थे। और वुड्रो था विनोद-प्रिय, वीर, साहसी एवं कुतूहल की खोज में। अपनी लालसाएँ एवं आकांक्षाएँ जिन्हें वह अभी तक शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ रहा था, उनके प्रति सदैव एलन की सहानुभूति और उत्साहप्रद समवेदना जगाता था।

वर्ष का अन्त होने के पूर्व ही उनकी मँगनी हो गई। विवाह शीघ्र हो जाने की सम्भावना कम थी। मुवक्किल-विहीन वकील ने एटलान्टा त्याग दिया और कष्टप्रद तथा लाभहीन व्यवसाय से छुटकारा पाने में सुख मान कर, जॉन्स हॉपकिन्स में प्रवेश किया। भले ही आकाश भी फट पड़े, वह राजनीतिज्ञ ही बनेगा। स्नातकोत्तर अध्ययन की अनुमति माँगने की प्रार्थना में उसने यह बात उस ढंग से नहीं कही। उसने स्पष्ट लिखा—"मैं इतिहास और राजनीति विज्ञान का अध्ययन करना चाहता हूँ। विश्व-विद्यालय में आने का मेरा उद्देश्य यह है कि मैं इन विषयों का शिक्षण देने की योग्यता प्राप्त कर लूँ। इसके अतिरिक्त वैधानिक इतिहास के विशेष अध्ययन के लिए भी, जिस पर मैंने कुछ काम किया है, अपने को समर्थ बना लूँ।"

जॉन्स हॉपकिन्स में भी विल्सन को वैसी ही अनेक सफलताएँ मिलीं और कटु अनुभव भी हुए, जैसे कि उसे वर्जीनिया विश्वविद्यालय में हुए थे। मिलनसार व्यक्तित्व के कारण उसके अनेक मित्र बन गये। बुद्धि-विलास और वाक्-चातुर्य के कारण वह 'वाद-विवाद-परिषद्' का नेता बन गया। उसने साहित्य-सभा का पुनर्गठन किया और नया विधान बना कर उसका

नाम 'हॉपकिन्स हाउस ऑफ़ कॉमन्स' रख दिया। पर उसने अपने अध्ययन में इतना अनथक श्रम किया कि उसके स्वास्थ्य ने जवाब दे दिया और वह थोड़े समय के लिए विलमिंग्टन में विश्राम करने के लिए विवश हो गया।

परन्तु, जॉन्स हॉपकिन्स का ग्रेजुएट कोर्स अभी पूरा नहीं हुआ था। न ही अभी तक वह 'मन्त्रिमण्डल द्वारा शासन' वाले अपने प्रथम प्रकाशित निबन्ध से आगे के विचारों को क्रमिक, तार्किक ढंग से व्यक्त कर पाया था। उसके मस्तिष्क में जिस विषय का धीरे-धीरे विकास हुआ था, उसे वस्तु-स्थिति के संदर्भ में विस्तार देने के लिए जो तर्क दिया जा सकता था, वह सब एक पुस्तक का ही विषय था। स्वास्थ्य बिगड़ा होने पर भी बिलिंमगटन के पादरी-भवन में अवकाश के समय वह उसे लिखने में जुट गया। जॉन्स हॉपकिन्स में लौटकर उसने उसे पूरा करके पाण्डुलिपि प्रकाशक को भेज दी। ग्रन्थकार के रूप में उसका मन इस समय अधिक खिन्न था। अपने 'साहित्यिक शिशु' के भाग्य का समाचार उसे कई सप्ताह बीतने पर मिल पाया। महत्त्वपूर्ण निर्णयों का सन्देश-वाहक एक नन्हा-सा पत्र उसे मिला। उसकी पुस्तक, संसदीय सरकार (काँग्रेशनल गवर्मेण्ट), हॉटन मिफ़्लिन कम्पनी प्रकाशित करेगी। प्रकाशन की शर्त्तें लुभावनी थीं और उनमें अच्छे भविष्य का आश्वासन भी था।

१४ जनवरी, १८८५ को जब 'संसदीय सरकार' पुस्तक प्रकाशित हो गई, तो विल्सन का सौभाग्य सुनिश्चित प्रतीत होने लगा। जिस पैनी और गम्भीर दृष्टि से इस पुस्तक में इंग्लैण्ड और युनाइटेड स्टेट्स की शासन-प्रणालियों की तुलना की गई थी, वैसी कदाचित् ही इस विषय के विद्यार्थियों में मिलती हो। आलोचकों पर इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। राजनीतिक इतिहास के विचारोत्पादक लेखक के नाते विल्सन की ख्याति निश्चित हो गई।

'संसदीय सरकार' के प्रकाशन के पूर्व ही इसके लेखक को जॉन्स हॉपकिन्स से ५०० डॉलर की फ़ैलोशिप प्राप्त हो गई थी। विश्वविद्यालय में ग्रेजुएट विद्यार्थी के रूप में प्रवेश करते समय उसने इसकी माँग की थी। इससे उन आर्थिक कठिनाइयों को हल करने में, जिनसे वह जूझ रहा था,

उसे बड़ा सहारा मिला। इसके कारण कुछ शिक्षा सम्बन्धी लाभ भी, जो उसें प्राप्त नहीं थे, मिले।

लेखक के रूप में उसकी ख्याति विश्वविद्यालयों की सीमाओं के बाहर भी फैल गई। अन्य शिक्षा संस्थाओं ने उसकी सेवाओं की माँग की। उनमें से एक थी, ब्राइन मॉअर। वह उसे ५०० डॉलर के वेतन पर इतिहास और राजनीतिक अर्थशास्त्र का सह-अध्यापक बनाने को तैयार थी। इन भावी सुनहली आशाओं के साथ जेब में ५०० डॉलर हो जाने पर उसे सब कुछ सम्भव प्रतीत होने लगा। उसके हृदय की मुख्य अभिलाषा पूरी हो सकती थी। वह थी उस लड़की से विवाह, जिससे दो वर्ष पूर्व रोम के उस छोटे-से गिरजे में उसकी भेंट हुई थी। उस अविस्मरणीय समय के बाद दोनों को एक-दूसरे से मिलने के अवसर कम मिले, परन्तु, परस्पर पत्र-व्यवहार द्वारा सौहार्द्र बढ़ता रहा। प्रेम-पत्रों के फलस्वरूप, जैसा कभी-कभी होता है, वे दोनों एक दूसरे से अविच्छिन्न रूप से बँध गये। एलन एक्सन ने अपने भाई से कहा था कि "वह संसार में सबसे महान् व्यक्ति है और सर्वोत्तम।" और इस प्रशस्ति में न कभी कोई ह्रास हुआ और न संशय ही।

१८८५ के महत्त्वपूर्ण वर्ष की २४ जून को सवान्नाह के इण्डिपेण्डेण्ट प्रेमबीटेरियन चर्च के पादरी भवन में, वे दोनों विवाह-सूत्र में बँध गये। आर्डन (नॉर्थ केरोलिना) में सुहागरात मनाकर वे ब्राइन मॉअर में बस गये। विल्सन ने वहाँ इतिहास के अध्यापक का कार्य सम्भाल लिया।

लड़कियों को शिक्षा देने की बात वुड्रो को रुचि के अनुकूल नहीं थी। गृहस्थी का ज्ञान, घर चलाने की कला, शिशु-पालन आदि की शिक्षा की तुलना में उच्च शिक्षा उसके विचार में कम महत्त्व की थी। इतना होने पर भी ब्राइन मॉअर के निवास-काल में उसे अपनी रुचि का अध्ययन जारी रखने का अत्युत्तम अवसर मिला। इस में उसे अपनी पत्नी से बहुत सहायता मिली। उसके राजनीतिक विचारों के विकास का अध्ययन करनेवाले विद्यार्थी के लिए यह विशेष महत्त्व की बात है कि ब्राइन मॉअर में अध्यापन करते समय उसने 'पोलिटिकल साइन्स क्वार्टर्ली' में एक लेख प्रकाशित कराया था। उसमें यूनाइटेड स्टेटस के नमूने पर एक महान भ्रातृवर्ग के रूप

मे सब राष्ट्रों का सघ बन जाने की उसने कल्पना की। उसकी कल्पना का रूप था :

"एक प्रवृत्ति चल रही है, एक भावना, जो अभी अव्यक्त होने पर भी दृढ़ एवं उत्साहवर्धक है और वह है राष्ट्रों का संघ बनाने की जिसमें पहले ब्रिटिश साम्राज्य के भाग शामिल हो सकते हैं और बाद में अन्य बड़े-बड़े देश अपने आप उसमें आ सकते हैं। शक्ति के केन्द्रित होने के स्थान पर एक ऐसा विशाल संघ होगा जिसमें विशेषाधिकार प्राप्त भाग बने रहने दिये जायेंगे। यह प्रवृत्ति अमरीकी प्रणाली की ओर ले जा रही है, जिसमें समान लक्ष्यों की प्राप्ति के हेतु प्रतिष्ठित समानता और मान सहित प्रभुत्व स्वीकार करते हुए सरकारें दूसरी सरकारों के साथ सहयोग करेंगी।

परिच्छेद ३

शिक्षक और वागीश

विल्सन-दंपति ने अपने विवाहित जीवन के आरम्भिक वर्ष ब्राइन मॉअर में बिटवीनरी नामक कॉटेज के ऊपरी खण्ड में एक साथ ही बिताये। वे निर्द्वन्द्व सुख चैन के वर्ष थे। भले ही स्कॉच पुरखों की लम्बी वंशावली के मान में नफ़ीरी की तान सुनने को न मिली हो, परन्तु परम्परा एक ऐसे इतिहास के प्रोफ़ेसर के बारे में बताती है जो लम्बा था और चश्मा लगाता था, जिसकी धमनियों में आयरिश रक्त ज़ोर मार रहा था और जो ज़िग नाच करता था। सिर पर वह तिरछे ढंग से रेशमी हैट लगाता, आँखें मटकाता और अपनी लम्बी टाँगें विचित्र तेज़ी से घुमाकर चलता था। ठिठोली, हँसी की कहानियों और चुटकुलों के कारण बिटवीनरी अट्टहास से प्रफुल्लित रहती थी। वह आदर्श सुखी घर था, ऐसी अमिट धारणा आगन्तुक वहाँ से लेकर जाते।

पर वहाँ केवल मौज-मज़ा ही रहता हो, ऐसी बात नहीं थी। विल्सन के जीवन की अत्यन्त गम्भीर मुद्रा ने उसके विवाह के पश्चात् एक नया आकर्षक रूप ले लिया था। एक समय था, जब शिक्षा के आरम्भिक काल में, कष्टप्रद धीमी चाल से वह प्रिन्सटन के मैदानों में एकाकी घूमा करता था। उन दिनों उसका एकमात्र साथी प्रायः एक पुस्तक 'शैले' होती थी। उसमें वह नवीन ज्ञान और लालित्य खोजा करता और उस स्थल पर ध्यान जमाता, जो उसके उत्सुक, संवेदनशील मन में सदा जलती रहनेवाली अग्नि प्रज्वलित करता। वे जिन्होंने उसे "एन ओड टु द वैस्ट विन्ड" (पश्चिम की पवन के नाम एक गीत) पढ़ते सुना था, कभी नहीं भूले। एक महान्

आदर्श की प्राप्ति के लिए कवि की उत्कट अभिलाषा मानो उसके अपने मन की बात थी—

मानव मात्र तक शब्द मेरे पहुँचा दो !
सुप्त धरा को मेरे अधरों द्वारा
आगम वाणी का शंख-निनाद सुना दो !

अब पुस्तकों के ऊँचे ढेर से लदी मेज़ के दूसरी ओर उसके सामने उसकी पत्नी होती थी। वह जर्मन सीख रही थी, ताकि उसके अनुसंधान कार्य में सहायक हो सके। उसके सामने उसने अपनी योजनाएँ खोलकर रख दी और अपना राजनीतिक दर्शन भी, जैसा उसका क्रमिक विकास हुआ। उससे वह अपनी प्रिय पुस्तकों की चर्चा कर सकता था। उससे वह सब कुछ भी प्राप्त कर सकता था, जो उसकी जानकारी से रह गया था। कारण, स्वर्ण-केशी एलन का, जो सर्वगुण-सम्पन्न गृहिणी थी, अध्ययन उसकी अपेक्षा अधिक विस्तृत था। वह कुछ-कुछ चित्रकारी भी जानती थी, मँगनी के समय उसने न्यूयॉर्क में चित्रकला का ज्ञान प्राप्त किया था और चाहती तो उसे अपनी भावी जीवन का पेशा भी बना सकती थी।

एलन ने वुड्रो को संगीत के रहस्यों में दीक्षित किया। अच्छे पुरुष-कंठ से गीत गाकर वह उसका उपकार चुकाया करता। कभी-कभी तो उसका मस्त स्वर एलन का मौन गाम्भीर्य भंग कर देता। तब वह विरोध में कह देती "वुड्रो, निश्चय तुम मुझे छेड़ कर कष्ट नहीं देना चाहते।" तो उसका उत्तर होता—"श्रीमती जी, अपने विचार से तो मैं कुछ बुरा नहीं कर रहा था, पर अब तुमने उसमें संशोधन कर दिया है।"

उनका वैवाहिक जीवन सुखी था, परन्तु बाहरी व्यावहारिक मामले इच्छानुकूल आगे नहीं बढ़ रहे थे। एक तो वुड्रो के काम की ही बात थी। अपने काम के प्रति उसका असन्तोष और निराशा बढ़ रही थी। अनेकानेक तथ्य वह विद्यार्थियों को भली प्रकार सम्भलवा देता और वे भी चुपचाप उदासीन गम्भीरतापूर्वक उन्हें लेकर अपने परीक्षा-पत्रों द्वारा उसे लौटा देते। शिक्षा का अर्थ यह तो नहीं होता। उससे तो विद्यार्थी के मन में उत्साह जागना चाहिए, विचार-विमर्श और तर्क-वितर्क आदि के लिए उत्सुकता

पैदा हो जानी चाहिए, यहाँ तक कि वह बौद्धिक गतिविधियों में रस लेने लगे। "मस्तिष्क कोई रबड़ की नली तो नहीं है जिसे ठूँस-ठूँस कर भरा जाय।" तथ्यों के महत्त्व में विल्सन का कोई आकर्षण नहीं। इनके लिए तो उसने महत्त्वाकांक्षाओं के महल नहीं खड़े किये थे।

एलन की भी अपनी कठिनाइयाँ थीं। विवाह के समय जो वेतन उत्कृष्ट प्रतीत हुआ था, व्यवहार के समय वही निकृष्ट सिद्ध होने लगा। दक्षिणी आतिथ्य के स्वभावानुसार उन्होंने अपने कुटुम्बी-जनों के स्वागतार्थ अपने द्वार उदारतापूर्वक खोल दिये थे। अतिथियों के सत्कार में उन्हें आनन्द तो मिलता ही था, परन्तु उसे निभाना उनके लिए जटिल समस्या भी बन रहा था। सन् १८८६ के बसन्त में उन्होंने जर्मन पुस्तकें, जिन पर वे दोनों सम्मिलित रूप में लिखते रहे थे, बन्द कर दीं। एलन जॉर्जिया लौट गई और उनकी पहली सन्तान मार्गरेट का वहीं जन्म हुआ। वुड्रो, जो अपने लैक्चरों के कारण उसके साथ नहीं जा सका था, चिन्ता के मारे व्याकुल हो गया।

फिर भी वह बेकार नहीं बैठा। सीमित सामर्थ्य होने पर भी ब्राइन मॉअर में उसकी समस्त शक्तियाँ नहीं खप गई थीं। उसके मन में अन्तिम कण तक लगा देने की चाह बनी रहती। उसे अभी बहुत कुछ करना शेष था।

वह एक बड़े महत्त्व के कार्य में जुट गया। सब राष्ट्रों की सरकारों की कार्य-विधि पर विचार-विमर्श की दृष्टि से उसने एक ग्रन्थ लिखना आरम्भ कर दिया। मानो वह इतने से ही सन्तुष्ट नहीं था। अपनी पुत्री के जन्म के अनन्तर वह दौड़-भाग में जॉन हॉपकिन्स गया और परीक्षा में सफल होकर डॉक्टर ऑफ फ़िलॉसफ़ी की उपाधि प्राप्त कर ली।

ब्राइन मॉअर के अन्तिम वर्ष में विल्सन ने जन्म और मृत्यु दोनों देखे। एक दूसरी पुत्री जैस्सी वुड्रो का जन्म अक्तूबर में हुआ और आगामी अप्रैल में विल्सन की माता, जिसके नाम पर उसका नाम रक्खा गया था, परलोक सिधार गई। इन घटनाओं के बाद ही वेज़लियन विश्वविद्यालय से एक लाभ-प्रद काम का प्रस्ताव आया।

लड़कियों को शिक्षण देने का परीक्षण विल्सन के मतानुसार असफल और कुछ कष्टकर सिद्ध हुआ था। फिर भी वह अपनी छोटी सी गृहस्थी लेकर कुछ उद्विग्न मन से, मिडिलटाउन (कनेक्टीकट) चला गया। अपना पहला घर उखाड़ने में उन्होंने व्यथा अनुभव की। उन्हें शंका थी कि न्यू इंग्लैण्ड में अपने दक्षिणी स्वभाव और चलन के कारण वे परदेसी-से लगेंगे। परन्तु उनकी शंकाएँ बाद में निराधार सिद्ध हुई। अब तक के जीवन से कहीं अधिक अनुकूल वातावरण उन्होंने मिडिलटाउन में पाया।

वेजलियन के दो सुखद वर्षों में उनके तीसरे बच्चे एलिनॉर रेण्डॉल्फ का जन्म हुआ। उसी वर्ष वह पुस्तक, जो ब्राइन मॉअर पहुँच कर विल्सन ने आरम्भ की थी, 'दि स्टेट' नाम से प्रकाशित हो गई। राजनीतिक इतिहास के इस अनथक विद्यार्थी ने पहली पुस्तक की समाप्ति के उपलक्ष में एक नये ग्रन्थ का समारम्भ कर दिया। ग्रन्थ-प्रणयन का बीज उसके रक्त में था। इसके कारण ब्राइन मॉअर या वेज़लियन की अपेक्षा विस्तृत क्षेत्र में परीक्षण करने की उमंग उसमें जागी।

अन्ततः अवसर आ गया। सन् १८९० में उसकी अपनी शिक्षा-संस्था प्रिन्सटन में राजनीतिक अर्थशास्त्र तथा विधि-शास्त्र का अध्यापन करने के लिए उसे आमंत्रण मिला। यहाँ शीघ्र ही वह अपनी धुन में आ गया। उससे शिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थी शीघ्र ही अनुभव करने लगे कि कॉलेज के नित्यक्रम में कोई निराला व्यक्ति आ गया है। उसे आरम्भ से ही उनका अनुराग और आदर प्राप्त हो गया था। प्रवाहपूर्ण गद्य में भाषण, जो उत्कृष्ट शब्दावली और स्पष्ट व्याख्या से पूर्ण होते थे, और जिन्हें वह सहज एवं नाटकीय शैली में, जिसका वह बहुत पहले से अभ्यस्त था, देना, अपने आप में एक नवीनता तथा आनन्द का स्फुरण करना था। उसके शिक्षण से विषय के प्रति उत्सुकता और घोर वाद-विवाद की प्रवृत्ति जागी। उसने, अपने विश्वास के अनुसार, ज्ञान को कुतूहलपूर्ण बना दिया। बार-बार वह अत्यन्त सर्वप्रिय शिक्षक घोषित किया गया। इस हितकर निर्णय में उसके व्यायाम शिक्षक होने का भी हाथ था। परन्तु

इससे भी पहले, अनुशासन समिति में उसने नियमों में मौलिक परिवर्तन की जो वकालत की थी, उससे वह विद्यार्थी-वर्ग का प्रीति-भाजन बन गया था।

कॉलेज के अधिकारियों द्वारा विद्यार्थियों के आचार-निरीक्षण के पूर्ववत् नियमों के स्थान पर उन्हें सम्मान देने की विधि अपनाना आदि सुधार वास्तव में श्रीमती विल्सन के कारण हुए थे। अनुशासन समिति की गतिविधियाँ देखकर वे उद्विग्न हो उठी थीं। जब कभी वे कॉलेज के मैदान में चली जातीं अथवा अपने स्वभाव के अनुसार विद्यार्थी उनसे मिलने आ आते, तो वे उनसे पूछा करती थीं "निरन्तर निरीक्षण में रहने के स्थान पर आपको आपके ही विश्वास पर छोड़ देना क्या आप पसन्द नहीं करेंगे ?" वे सब एक स्वर में उत्तर देते, "निश्चय हम यही चाहेंगे !" इस प्रकार प्रिन्सटन में विद्यार्थियों के सौजन्य पर विश्वास करने की प्रथा का प्रचलन हुआ।

तीनों नन्हीं बालिकाओं के पालन में, अपने ढंग से विचार करने की स्वतन्त्रता और अपनी अन्तरात्मा की प्रेरणा के अनुसार कार्य करने देना विल्सन परिवार का सदा से नियम रहा था। प्रिन्सटन के राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के समान, व्यक्ति की स्वतन्त्रता में विश्वास रखने वाला, अपने परिवार में, माता-पिता का अनावश्यक निठुर शासन सहन नहीं कर सकता था। मार्गरेट विल्सन ने उस स्वर्ण-काल के संस्मरणों में लिखा था : "मुझे एक भी ऐसा उपदेश स्मरण नहीं, जो हम पर बलात् लादा गया हो। हमारे माता-पिता उपदेशों से हमें नहीं साधते थे। हमारे घर का आनन्दमय वातावरण और हमारे माता-पिता जो आदर्श प्रस्तुत करते थे, उससे हमारा आचरण प्रभावित होता था।"

'दी स्टेट' प्रकाशित हो जाने पर विल्सन ने गृह-युद्ध और पुनर्निर्माण के विचार-विमर्श को लेकर 'डिवीजन एण्ड रीयूनियन' (बँटवारा और पुनर्गठन) नामक पुस्तक लिखनी आरम्भ कर दी। सन् १८९३ में वह समाप्त हुई और प्रकाशित हो गई। उस पुस्तक में कहीं कोई ऐसा संकेत नहीं था, जिससे पता चलता कि इसका लेखक देश के उस भाग का रहने

वाला है जिसे युद्ध का सामना करना पड़ा था और हार की कसक उसके मन में बनी थी। ऐसे उत्तेजनापूर्ण विषय पर उसका निरपेक्ष विचार इतना स्वस्थ सिद्ध हुआ कि उत्तर और दक्षिण के अनेक विद्यालयों में उसे प्रमाणित पुस्तक के रूप में पढ़ाया जाने लगा। उसी वर्ष दो और पुस्तकें प्रकाशित हुई : 'मीग्रर लिटरेचर' तथा 'एन ओल्ड मास्टर'। इनमें ऐतिहासिक निबन्ध थे, हैमिल्टन, जैफ़र्सन, लिंकन—जो अमेरिका के निर्माण में सहायक हुए—उनके चित्र भी थे। सन् १८९६ में जॉर्ज वाशिंगटन की जीवनी और उसके बाद 'हिस्ट्री ऑफ दि अमेरिकन पीपल' (अमेरिकी लोगों का इतिहास) प्रकाशित हुईं। उन कृतियों से, जैसा कि लेखक ने स्वीकार किया, लेखक का उद्देश्य : विषय का कुछ ज्ञान प्राप्त करना था।

उसने अमरीकी शासन के कर्त्तव्यों और उसकी विभिन्न शाखाओं के व्यवहार के सम्बन्ध में जो लिखा था, उसे उसने अपनी अन्तिम पुस्तक 'कान्स्टीट्यूशनल गवर्मेन्ट' (वैधानिक सरकार) में एकत्र कर दिया एवं नये दृष्टिकोण से उस पर विचार किया। यह विधान के आधीन विभागों के व्यवहार पर केवल स्पष्ट विचार-विमर्श ही नहीं है, बल्कि उसके अपने राजनीति दर्शन के मुख्य अंगों का एक तरह से भाष्य है। उसकी वर्णन-शैली में एक लघुकाव्य का पैनापन और अच्छे सधे हुए मस्तिष्क का न्याय है।

अपरिवर्तनीय नियमों से बाँधी गई स्वतन्त्रता तो स्वतन्त्रता हो ही नहीं सकती। सरकार जीवन का एक अंग है। अपने उद्देश्यों और व्यवहारों में उसे जीवन की गति के साथ परिवर्तन करना होगा। स्वराज विधान का स्वरूप न होकर, चरित्र का एक स्वरूप है। इसी कारण यह कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जो किसी जाति अथवा देश को "प्रदान" की जा सके। वह (राष्ट्रपति) अपने दल का नेता तथा राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति में राष्ट्र का नायक बन जाता है और इसी न्याय से वैधानिक कार्रवाई करने में भी वह नेता होता है। शासन के वैधानिक ढाँचे ने इन महत्त्वपूर्ण कार्यों में राष्ट्रपति के कार्रवाई करने के अधिकारों में बाधा डाली है और उन्हें सीमित बना दिया है, परन्तु उसने रोक नहीं लगा दी है।

जब उन महान् ऐतिहासिक घटनाओं की याद आती है, जिनका नायक विल्सन था, तो उसकी पुस्तक 'कान्स्टीट्यूशनल गवर्मेन्ट' (वैधानिक शासन) की भविष्यवाणी सिद्ध हो जाती है। उसके अनुसार :

"राष्ट्रपति के महत्तम अधिकारों में से एक है, विदेश नीति पर उसका नियन्त्रण जो अपने आप में पूर्ण है। उसकी चर्चा मैंने अभी तक बिल्कुल नहीं की है। विदेशी मामलों में निर्णय करना राष्ट्रपति का अबाध अधिकार है। इसके कारण वस्तुतः उसका उन पर सम्पूर्ण नियन्त्रण होता है। सेनेट की स्वीकृति के बिना, राष्ट्रपति किसी विदेशी सत्ता के साथ कोई सन्धि नहीं कर सकता, लेकिन यदि सरकार का मान और विश्वास बनाये रखना है, तो वह कूटनीति में हर कदम पर निर्देशन करेगा और नीति का निर्देशन करने का अभिप्राय होगा संधियों के स्वरूप को स्थिर करना। सन्धि पूर्ण होने तक उसका कोई भी अंश प्रकट करने के लिए वह बाध्य नहीं है और जब किसी दुःसाध्य मामले में सन्धि का निश्चय हो जाये तो सरकार वस्तुतः उसके लिए बाध्य हो जाती है। अनिच्छा होने पर भी सेनेट उसे स्वीकार करेगी।"

सन् १८९६ में, जिस वर्ष विल्सन की पुस्तक, 'जॉर्ज वाशिंगटन' प्रकाशित हुई, वह अपने क्षेत्र के अग्रगण्य व्यक्तियों में गिना जाने लगा था। उसी वर्ष प्रिन्सटन ने भी मान्यता प्राप्त कर ली थी। अब तक वह कॉलेज ऑफ़ न्यूजर्सी कहलाता था। अब अपने १५०वें वार्षिक समारोह पर वह प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी घोषित कर दिया गया। इस महान् अवसर पर विल्सन को यूनिवर्सिटी के उद्घाटन के लिए बुलाया गया। उस समय के उसके भाषण का शीर्षक था—'प्रिन्सटन इन द नेशन्स सर्विस' (राष्ट्र की सेवा में प्रिन्सटन)। उसमें उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि देश की सेवा के लिए आदमी तैयार करना, विश्वविद्यालय का कर्त्तव्य है।

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के मस्तिष्क की शक्तियों को जगाना भर नहीं है। बल्कि उसका लक्ष्य है, सब प्रकार के मस्तिष्कों का उस भौतिक, सामाजिक संसार से समन्वय कराना जिसमें उन्हें अपना जीवन बिताना

है। इसके अतिरिक्त उनके विकास को प्रकाशमान, शक्तिशाली एवं उपयुक्त बनाना उसका काम है। यह बात मुझे सदैव अटपटी और प्रकृति के विरुद्ध लगी है कि वह व्यक्ति जिसकी नागरिकता और स्वतन्त्रता विचार जगत् की हो, व्यवहार में अकल्याणकारी समझा जाये।"

इस भाषण के अन्तिम खण्ड को अंग्रेज़ी गद्य के स्मरणीय स्थलों में स्थान प्राप्त हो गया है :

"आदर्श विद्या मन्दिर का एक चित्र मेरी विचार दृष्टि में स्पष्ट हो गया था। विभिन्न प्रकार का वह एक ऐसा स्थल होगा जहाँ कोई भी यह जाने बिना न रह सकेगा कि ज्ञान, जो स्वयं एक छोटा-सा संसार है, उसके लिए कितना उज्ज्वल भविष्य लेकर विश्व में आया है। वहाँ वह व्यग्रता रहित होकर, एक ही लक्ष्य सामने रखते हुए बाहरी प्रभावों से बच कर रह सकेगा। वह ऐसे कुशाग्र-बुद्धि वालों का निवास होगा जो कठोर व्रती और ज्ञानार्जन के लिए दृढ़संकल्पी होंगे। संसार की नित्य समस्याओं पर वे वाद-विवाद करने वाले और प्रजातन्त्र की विषम कार्यप्रणाली के अभ्यस्त होंगे। यह सब होने पर भी वह स्थान ज्ञान का शान्ति निकेतन होगा जो संसार से दूर, ऐसी एकाकी, साध्वी तपस्विनी की भाँति होगा जिसे संसार की गति का बोध ही न रह गया हो और इसका भी ध्यान न हो कि उसकी प्रार्थना के फलस्वरूप उसे सत्य का साक्षात्कार हो रहा है। और साहित्य उसके खुले द्वारों में से भीतर मुक्त विचरा करेगा। उसके शान्त कुटीरों में, प्राचीन लोगों का संसर्ग प्राप्त होगा। खण्डों वाले कक्षों से वह घिरी होंगी और वहाँ की वाणी शान्त स्वर में अत्यन्त मधुर होगी। 'भयंकर सागरों के झाग पर एकान्तवासिनी अप्सराओं के देशों में रहस्यमय चमत्कारपूर्ण ज्ञान उद्घटित होगा।' वहाँ जाकर तुम अपने यौवन का आनन्द लूट सकोगे। वहाँ ऐसे झरोखे होंगे जो ठीक उन बाजारों में खुलते होंगे, जहाँ रुक कर व्यापारी और व्यवहारी अपने कार्य-कलाप की चर्चा करते होंगे। वह ऐसा स्थल होगा जहाँ आदर्श अनुकूल वातावरण में हृदयों में बसेंगे। परन्तु, वह मूर्खों का स्वर्ग नहीं होगा। वहाँ बीते युग के यथार्थ का ज्ञान होगा और अविचलित भाव से वर्तमान की समस्याओं पर विद्वत्ता-

पूर्ण वाद-बिवाद होगा। वह ऐसा स्थान होगा जो मानव समाज के जीवन से प्रभावित होगा, वहाँ मानव और उससे सम्बद्ध सब कुछ होगा। परन्तु स्वार्थपरायण एवं बड़बोले लोगों के संसार से भिन्न होगा। वहाँ तात्कालिक जीवन से परे की जानकारी प्राप्त करने की आकांक्षा होगी। उद्वेग शीघ्र ही प्रभावित न कर सकेगा। वहाँ का वातावरण स्वच्छ, हितकर और आस्थावान् होगा। वहाँ प्रत्येक की दृष्टि में उज्ज्वल दिवस का प्रकाश होगा और आशा की पूर्ति के लिए भगवान् का भरोसा। उस स्थान का मार्ग हमें कौन दर्शाएगा?"

"विद्या के सिद्धि स्थल" की सीमाओं के पार बहुत दूर तक विल्सन के भाषण की गूँज सुनाई देने लगी। अपने किसी मित्र को एक भावपूर्ण पत्र में श्रीमती विल्सन ने लिखा था कि प्रिन्सटन के लोग उसके पति के गले से लिपट गये और आनन्द के आँसू बहाने लगे। और वे, जो उस तक नहीं पहुँच सके, आनन्दातिरेक से विभोर हो एक-दूसरे से हाथ मिलाने लगे और बधाई देने लगे। बाहरी दुनिया से अभिनन्दनों का ढेर उसके पास लग गया। विल्सन शैक्षणिक जीवन के कोश से बाहर निकल रहा था। यौवन के सपने यथार्थ का रूप लेने लगे थे।

उसकी गतिविधियों के बीच उसके स्वास्थ्य को प्रायः झटके लगते रहते थे। वैसा ही एक झटका वर्ष के आरम्भ में उसे लग चुका था। वह अपना स्वास्थ्य सुधारने गर्मियों में विदेश चला गया था। यूरोप की यह उसकी प्रथम यात्रा थी। ब्रिटेन में रहते हुए, उसने वहाँ के पुण्य-स्थलों की यात्रा की, जिससे उसे जीवन में बल मिला। उसने एडम स्मिथ की समाधि की यात्रा की और उसकी कुटिया को देखा, जहाँ बर्न्स का जन्म हुआ था। वर्ड्सवर्थ के मकान से उसने फूल तोड़ा, एडमण्ड बर्क की समाधि के दर्शन किये और शेक्सपीयर के प्रदेश का भ्रमण किया। अगले कुछ वर्षों में उसने यह आनन्दप्रद यात्रा दो बार और की। सन् १९०३ में उसने अपनी पत्नी के साथ, उस देश की, जिसे वह प्यार करता था, एक लघु-यात्रा फिर की। वह देश उन दोनों के लिए उन महान् आत्माओं की स्मृतियों से भरा पड़ा था, जिनके कारण उनकी महत्त्वाकांक्षाओं और आदर्शों को बढ़ावा मिला था।

यूरोप की तीसरी यात्रा के पूर्व विल्सन के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आ चुका था। सन् १८९६ के प्रिन्सटन समारोह के समय से, जबकि उसके भाषण की इतनी प्रसिद्धि हुई, शिक्षक के रूप में उसकी महान् विशेषताएँ, मानव के जीवन और राष्ट्रीय विकास में विश्वविद्यालय के स्थान के सम्बन्ध में उसकी उदार कल्पना, एक वक्ता के रूप में उसकी ख्याति, ये सब फलीभूत होने लगे थे। अन्य विद्यालय, प्रिन्सटन के इस व्यक्ति की ओर आकर्षित हुए। उसकी स्वीकृति के लिए आकर्षक प्रस्ताव आने लगे। थोड़े ही समय में, पाँच विश्वविद्यालयों ने उससे अध्यक्ष होने की प्रार्थना की।

इसकी पराकाष्ठा तब हुई, जब १९०२ में अध्यक्ष पेट्टन ने प्रिन्सटन विश्वविद्यालय से अपना त्यागपत्र दे दिया। उस समय तक विश्वविद्यालय का अध्यक्ष सदैव पादरियों में से ही चुना जाता रहा था। इस चलन के होते हुए डॉक्टर पेट्टन ने सुझाव दिया कि उनका उत्तराधिकारी प्रोफ़ेसर वुड्रो विल्सन को बनाया जाना चाहिये। ट्रस्टियों के बोर्ड ने तत्काल प्रस्ताव रख दिया और विल्सन ने उसे स्वीकार कर लिया।

परिच्छेद ४

एक विद्वान् राजनीति के मैदान में

वुड्रो विल्सन जब प्रिन्सटन विश्वविद्यालय का अध्यक्ष बना, तो उसकी अवस्था छियालीस वर्ष की थी। अक्तूबर में उस दिन जब उसने अपना उद्घाटन भाषण पढ़ा, तो वह पूर्ण स्वस्थ और अपनी योग्यता के शिखर पर था। उसने अन्ततः वह उत्कर्ष प्राप्त कर लिया था, जिससे वह अपना भविष्य बना सकता था। और उसका वह भविष्य बड़ा भव्य रहा।

गम्भीर चिन्तनशील आत्मा के कारण वह अपने भूत और भविष्यत् के सम्बन्ध में सुखकर बातों पर ध्यान नहीं दे सकता था उसे तो बस यही याद रहता था कि अभी और बहुत कुछ करने को है। शासन एवं प्रजातन्त्र पर उसने चिरकाल से अध्ययन किया था, भाषण दिये थे और लिखा था। अब प्रिन्सटन के जीवन में अपने उन सिद्धान्तों की व्यावहारिकता परखने का समय आ गया था। इस परीक्षण का लोभ आया तो, परन्तु उसने कुछ समय के लिए मन को रोक लिया। कॉलेज जैसे भी थे, उनका प्रथम कर्त्तव्य विद्यार्थियों को चिन्तन करना सिखाना था। जीवन कैसे बिताया जाय, यह बात पीछे थी।

सुझाव दिया गया था कि शिक्षा प्राप्त करने में चार वर्ष का समय लगाना बहुत अधिक था। क्या तीन वर्ष में ज्ञानार्जन नहीं हो सकता था? विल्सन अधीर था। उसका प्रत्युत्तर था—"बलूत (ओक) का वृक्ष पूर्ण करने में परमात्मा को एक सौ वर्ष लगते हैं, पर वह घिया कद्दू की बेल एक ग्रीष्म ऋतु में ही फला देता है।" विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के काम में कमी करने का उसका विचार नहीं था, वह तो उसे बढ़ाना चाहता था।

एक सामान्य विद्यार्थी की मनोवृत्ति से वह अनजान नहीं था। भवनों में से एक गुम्बज की छत को देख कर जो बातचीत दो नये छात्रों में हुई थी, उसे दोहरा कर उसने उनकी मनोवृत्ति पर चोट की। एक ने कहा था—"वह सुन्दर बनावट वाला परनाला देख रहे हो न ?" दूसरा बोला — "तुम उसकी क्या बात करते हो। दो दिन पहले उसे कोई परनाला कहता था। पर अब वह सारे कालेज पर छाया हुआ है।"

डॉक्टर विल्सन के अनुसार, विश्वविद्यालय मूलतः वह स्थान है, जहाँ वह ज्ञान, जो व्याकरण एवं हाई-स्कूल पाठ्यक्रम में नहीं मिलता, उसमें वृद्धि करके विद्यार्थी अपनी शिक्षा को पूर्णता देता है। देखने में लगता था कि विद्यार्थी-वर्ग इस विचार से सहमत नहीं है। उनमें से अनेक के लिए तो विश्वविद्यालय एक आनन्ददायक सभा-घर था, जहाँ निरन्तर जुटे रहने से एक सांसारिक व्यवहारी मनुष्य के गुण भले ही प्राप्त किये जा सकें पर शिक्षा के नाम पर कुछ नहीं।

यह मनोवृत्ति, जिससे अधिकांश प्रोफ़ेसर तथा विद्यार्थी सन्तुष्ट थे बदलने के लिए जीवन के तौर-तरीके और विचारों में परिवर्त्तन लाना आवश्यक था। नये अध्यक्ष ने इसी बात का यत्न किया। परिणाम यह हुआ कि गतिविधियों में एक तूफ़ान-सा आ गया, प्रवेश के लिए कड़े प्रतिबन्ध लगा दिये गये और परीक्षाएँ अधिक कठिन कर दी गई। असन्तोष से चीख़-पुकार मच गई। किसी सज्जन को सुख-पूर्वक रहने के लिए इन बन्धनों में बँधना अत्याचार लगा। इस संघर्ष का अन्त होने तक दुर्बल व्यक्ति भाग खड़े हुए, विद्यार्थियों की संख्या घट गई और प्रोफ़ेसरों की संख्या बढ़ा दी गई।

विल्सन की "विद्या के सिद्धि-स्थल" की कल्पना विद्यार्थी के कण्ठ में यह सब बलात् उतारने तक ही नहीं रुकी। प्रोफ़ेसरों और विद्यार्थियों के बीच अन्तराय तो पूर्ववत् बना रहा, परन्तु उसके विचार से, विद्यार्थी वह लाभ नहीं उठा पा रहे थे, जो अनुभवी और विद्या में पारंगत लोगों के निरन्तर सम्पर्क में रहने से उनकी भीतरी शक्तियों के उभारने से प्राप्त हो सकता था। इस आदर्श की प्राप्ति के निमित्त उसने शिक्षक-सम्पर्क-प्रणाली का प्रस्ताव किया। इसके लिए कक्षाओं को छोटा करना पड़ा, जिससे

प्रत्येक विद्यार्थी को आत्म-विकास में सहारा मिले। यह भी व्यवस्था की गई कि प्रोफ़ेसर विद्यार्थियों के साथ ही उनके सामूहिक शयनागारों में रहें, उनके काम का निर्देशन करें और व्यक्तिगत सम्बन्धों द्वारा घनिष्ठता प्राप्त करें।

यह योजना अपूर्व थी। अनुदार लोगों ने स्वभावतः इसका विरोध किया। विल्सन की व्यक्तिगत सर्वप्रियता के सामने उनका विरोध न ठहर सका। जो भी उसके सम्पर्क में आये, प्रभावित हो गये। विश्वविद्यालय के धनी स्नातकों से उसने सहायता माँगी, तो उन्होंने बड़े उत्साह से सहयोग दिया। जिस कल्पना की उपयोगिता पर विल्सन स्वयं मुग्ध था, उसके स्वरूप की प्रतिमूर्ति नये प्रोफ़ेसरों और बहुत से विद्यार्थियों को दीख गई और उन्होंने आदर्श के प्रति युवकोचित सजीव सहयोग की भावना से इस योजना को पूर्ण पोषण दिया।

शिक्षक-सम्पर्क प्रणाली लागू होते ही विल्सन जनतन्त्रवादी कार्यक्रम में जुट गया। उस प्रणाली के चालू हो जाने से प्रिन्सटन के सामाजिक जीवन में क्रान्ति आ जाती। लोग इसे चतुर्भुजी संघर्ष कहने लगे। विल्सन की योजना के अनुसार एक चतुष्कोण क्षेत्र के चारों ओर नये सामूहिक निवास बनाये जाने थे। उद्देश्य यह था कि उनमें साथ रहने वाले शिक्षक और विद्यार्थी एक स्थान पर भोजन करेंगे और ऊँची-नीची कक्षाओं वाले आपस में मिलेंगे-जुलेंगे, तो उनके सम्बन्ध, जितना भी सम्भव हो सकता है, दृढ़ होंगे।

विश्वविद्यालय का सामाजिक जीवन अब तक बहुत-कुछ, बाहर की क्लबों में केन्द्रित था। उनमें विद्वत्ता की उपेक्षा करते हुए वर्ग-भेद और शारीरिक योग्यताओं को मान्यता दी जाती थी। इस नई योजना के अनुसार कार्य चालू हो जाने पर क्लबों का अन्त हो जाना अवश्यम्भावी था। वैभव, खेल और मनोरंजन को आश्रय देना, विल्सन के विद्यार्थी-जीवन सम्बन्धी सिद्धान्त से मेल नहीं खाता था। उसकी तो संक्षिप्त टिप्पणी थी: "मैं किसी प्रदेश-सभा (कन्ट्री-क्लब) का अध्यक्ष नहीं बनूँगा।"

प्रस्तावित समाज-सुधार-सम्बन्धी वाद-विवाद विश्वविद्यालय की सीमाओं के बाहर तक फैल गया। देश के विभिन्न भागों से प्रिन्सटन के

पुराने विद्यार्थियों ने इस विषय पर विचार-विमर्श करते हुए इसे अपने अधिकारों का उल्लंघन बताया। एक ने तो बिगड़ कर यहाँ तक कह डाला कि यह तो "किसी भलेमानस को पाखण्डी के साथ बैठाकर खिलाने" जैसा है। विल्सन की सेवावृत्ति की भावना ने जोर मारा और उसने यह विषय जनता के समक्ष रख दिया। शिक्षा के क्षेत्र में प्रजातन्त्र लाने के उपलक्ष में उसे साधुवाद प्राप्त हुआ।

विश्वविद्यालय के ट्रस्टियों ने इस विवाद में पहले तो विल्सन का साथ दिया, परन्तु अब उसके विरोधी पक्ष मे जा मिले। कुछ समय के लिए इस प्रणाली के स्थान पर एक अन्य अधिक आवश्यक समस्या प्रमुख हो गई।

बहुत समय से प्रिन्सटन में एक स्नातक-विद्यालय की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। उसकी व्यवस्था डीन वेस्ट को सौंपने की योजना बना दी गई। स्नातक विद्यालय का संचालन विश्वविद्यालय के क्षेत्र के बाहर से संग्रहीत धन द्वारा होना था। विल्सन के प्रजातन्त्रीय विद्यामन्दिर के आदर्श का तिरस्कार करने का यह अवसर था।

डीन वेस्ट द्वारा स्नातक विद्यालय का नया भवन निर्माण किये जाने के निमित्त एक पुराने धनी विद्यार्थी ने पाँच लाख डालर देने का प्रस्ताव कर दिया। उसकी व्यवस्था और निर्देशन पूर्णरूपेण डीन के हाथों मे रहते। यह सोचकर कि इस प्रकार विश्वविद्यालय का एक भाग अध्यक्ष के अधिकार से बाहर चले जाने की सम्भावना हो सकती थी और धन के बल पर वह शाखा प्रतिद्वन्द्वी के रूप में संस्थान को मनमानी बातों के लिए बाध्य कर सकती थी, विल्सन ने वह दान स्वीकार करने का विरोध किया। फलतः प्रस्ताव वापस ले लिया गया।

विल्सन द्वारा इतना बड़ा दान अस्वीकार कर देना ट्रस्टियों को रुचा नही। आदर्श बड़ी अच्छी वस्तु है, परन्तु विद्यालयों का निर्माण तो धन से ही होता है। काम करने के लिए कल्पित सिद्धान्त की अपेक्षा स्थूल धन-राशि से भरा कोष ही सन्तोषप्रद हो सकता है। इस बीच यह प्रश्न उलझा रहा।

प्रिन्सटन वाद-विवाद के लिए एक न्याय-सभा बन गया था। एक ओर था

अध्यक्ष विल्सन, जो शिक्षा के क्षेत्र में जनतन्त्र प्रणाली की अपनी योजनाओं के लिए आग्रह कर रहा था। उसके साथ युवा प्रोफ़ेसर भी थे। युवक-समाज पर उसकी बातों का विशेष और गहरा प्रभाव पड़ता था। उसके विरोध में थे क्लब और विद्यालय के पुराने छात्रों का एक पक्ष, जिनके पास धन की ताकत थी। अन्त में धन की जीत हुई।

मई, १९१० में एक दिन प्रातःकाल एक सम्वाददाता ने विल्सन के अध्ययन कक्ष में प्रवेश किया। उसके पास वह महत्त्वपूर्ण सम्वाद था, जिससे सामने बैठे विल्सन के शिक्षा के आदर्श की हार हो सकती थी। समाचार था कि मैसाचुसेट्स का इसाक वाइमैन, जिसका निधन तभी हुआ था, ३० लाख डालर डीन वेस्ट के निरीक्षण में चलने वाले स्नातक-विद्यालय के लिए दान में लिख गया है, प्रिन्सटन के लिए नहीं। सम्वाद-दाता को आशा थी कि विल्सन यह सुन कर भड़क उठेगा, परन्तु उसे निराश होना पड़ा। मेज़ के सामने बैठे उस व्यक्ति ने इस सम्वाद पर कोई टिप्पणी ही नहीं की।

जब सम्वाददाता चला गया तो एलन विल्सन ने अपने पति के हँसने का शब्द सुना। उसे मालूम था कि वह अकेला बैठा था और उसकी हँसी में सदा की भाँति हर्ष-ध्वनि भी नहीं थी। जो कुछ हुआ था, विल्सन ने उसे बताया। उसने विशेष रूप से कहा—"जीवित लोगों से तो हम लड़ सकते हैं, परन्तु मृतकों से तो नहीं। खेल का अन्त हो गया है।"

अपने नेतृत्व की प्रत्यक्ष हानि का उसे दुःख नहीं था। उसे खटक रही थी सिद्धान्त की हार, जिस पर उसका विश्वास था और जिसके लिए उसने संघर्ष किया था। प्रजातन्त्री आदर्शों की सिद्धि के लिए प्रिन्सटन में कोई क्षेत्र नहीं रह गया था। यह आवश्यक नहीं था कि उसकी गतिविधियों के लिए केवल विद्यालय का जीवन ही सम्भावित क्षेत्र हो।

बीस वर्ष की लम्बी अवधि में विश्वविद्यालय की दीवारों के बाहर के जीवन का कोलाहल और उत्तेजना उसके लिए मद्धम पड़ चुके थे। परन्तु एक बार फिर व्यस्त संसार का जनरव उसके कानों में पड़ा और वह बेचैन हो गया। अभी कितना कुछ पड़ा था, जिसे वह करना चाहता था। प्रिन्स-

टन के इस संघर्ष से कई वर्ष पूर्व १९०६ की सर्दियों में वह लोटस क्लब, न्यूयार्क के एक भोज में सम्मिलित हुआ था। सायंकालीन कार्यक्रम में उसने एक भाषण दिया था, जिसमें उसने स्वभावानुसार राजनीतिक समस्याओं और सिद्धान्तों पर विचार व्यक्त किये थे। जब वह बोल चुका तो 'हारपर्स साप्ताहिक' के सम्पादक कर्नल हार्वे ने घोषणा कर दी थी कि १९०८ के राष्ट्रपति-पद-आन्दोलन में विलसन उनका उम्मीदवार होगा।

इन दोनों की पहली भेंट 'राष्ट्र की सेवा में प्रिन्सटन' वाले उस स्मरणीय भाषण के अवसर पर ही हुई थी। विलसन के विचारों से हार्वे बहुत प्रभावित हुआ था। उसने अनुभव किया कि विलसन में राष्ट्रपति बनने योग्य गुण हैं। परन्तु डेमाक्रेटिक दल पर अभी ब्रायन का प्रभुत्व बना था और उसकी ओर से १९०८ के आन्दोलन में जिसमें हॉवर्ड टेफ़्ट चुना गया था, वह उम्मीदवार था।

विलसन को राजनीतिक अखाड़े में ढकेलने का हार्वे का प्रस्ताव उसे बहुत रुचिकर नहीं लगा था। उसके जनता के समक्ष दिए गए भाषणों के स्वर में उससे कोई अन्तर नहीं आया। उसने अपनी धारणाएँ दल-अधिष्ठाताओं की परम्पराओं तथा अहम्मन्यता के अनुसार नहीं साधीं। एक बड़े विश्वविद्यालय को जनतन्त्री बनाने के संघर्ष से वह देश भर में विख्यात हो गया था, परन्तु राजनीतिक क्षेत्र में उसका महत्त्व स्पष्ट नहीं हुआ था। क्लीवलैण्ड के बाद ह्वाईट हाउस में कोई डैमॉक्रेट नहीं आ पाया था।

हार्वे का विश्वास था कि जनमत की विचारधारा झकोले खा रही है। क्लीवलैण्ड-युग राजनीति में स्वतन्त्र विचारों की एक थाती छोड़ गया था। थिओडोर रूज़वेल्ट अपनी नयी राष्ट्रीयता का प्रचार कर रहा था और लोग उसे ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। सो वातावरण पल्टा खा रहा था। हार्वे सोचने लगा कि जो कुछ हो रहा था, उसे उचित रूप में चतुराई से विलसन के समान अन्य कौन प्रस्तुत कर सकता था?

'हारपर्स साप्ताहिक' का महत्त्वाकांक्षी सम्पादक दृढ़ता के साथ जुट गया। न्यूजर्सी के डैमॉक्रेटिक अधिष्ठाता, जेम्स स्मिथ जूनियर, से उसने भेंट की। उसने प्रश्न किया कि क्या विलसन का गवर्नर बनने के लिए

स्मिथ समर्थन करेगा ? स्मिथ का उल्टा प्रश्न था—किन शर्तों पर ? हार्वे ठिठका। उसका उम्मीदवार तो राजनीतिक सौदेबाज़ी करने वालों में से नहीं था।

हार्वे ने विल्सन से बात-चीत की। क्या भावी आन्दोलन में वह गवर्नर बनने के लिए खड़ा होना स्वीकार करेगा ? विल्सन ने अपनी रुचि प्रकट की। परन्तु समय का रंग देख कर चलने पर ही उसने सन्तोष किया हुआ था। हार्वे और स्मिथ के साथ बैठकर इन बातों पर विचार करने को वह सहमत हो गया। जब समय आया तो पता चला कि विल्सन तो शान्ति-पूर्वक ढंग से चर्च चला गया है। 'राष्ट्रपति-निर्माता' ने उसका पीछा किया और उसे लौटा लाने में सफल हुआ। क्या वह नामज़दगी स्वीकार करेगा ? यदि वह किसी प्रकार की प्रतिज्ञाएँ लिए बिना हो, तो विल्सन को स्वीकार होगा ?

राजनीतिक गुरु की स्थिति में स्मिथ के लिए यह एक नया अनुभव था। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता था। जो भव्य झाँकी स्मिथ प्रस्तुत करना चाहता था, उसके प्रदर्शन में विल्सन एक सुन्दर स्वरूप बन सकता था। इस विद्यालय अध्यक्ष से उसे कोई खटका नहीं था। विल्सन को अपना सुन्दर घर; विद्वानों का-सा ढंग; पुस्तकों से सज्जित ग्रन्थागार, मनहर उप-वन छोड़कर, उन अत्यन्त गन्दे कमरों वाले स्थानों के लिए तैयार हो जाना होगा जहाँ राजनीतिक आन्दोलन चलाये जाते हैं। चीख़ती-चिल्लाती; पसीने में डूबी, आधी बाहें चढ़ाये भीड़ वहाँ होगी; यह मानचित्र स्मिथ के मन में था।

१५ सितम्बर को डैमोक्रेटिक टिकट पर विल्सन का नाम गवर्नरी के लिए विधिवत् प्रस्तावित हो गया। विद्वान् और समाज-सुधारक के अपने सहज रूप में वह सम्मेलन के सामने आया। प्रतिनिधियों के कोलाहल में भी उसने कहा—"इस नामज़दगी के लिए मैंने माँग नहीं की थी। मैंने न कोई प्रतिज्ञाएँ की हैं और न ही वचन दिये हैं। यदि मैं चुन लिया गया, जैसी कि मुझे आशा है, तो मैं निष्ठापूर्वक मन लगाकर आपकी सेवा करने में स्वतन्त्र हूँगा। अब यह नवयुग है, जबकि ऐसी बातें कही जा सकती हैं।"

'गुरु' स्मिथ इससे घबराया नहीं। आगे चलकर नामज़द उम्मीदवार के आन्दोलन चलाने के ढंग को देखकर उसे विस्मय हुआ। अक्तूबर में विल्सन ने प्रिन्सटन विश्वविद्यालय से त्याग-पत्र दे दिया और भाषण देने के धन्धे में पड़ गया। वाक्पटुता और विचार्य विषय के कारण उसकी ख्याति न्यू जर्सी की सीमाओं के पार बहुत दूर फैल गई। नवम्बर में ४९,००० के बहुमत से वह निर्वाचित हो गया।

अपने उद्घाटन भाषण में उसने कहा—"एक ऐसे व्यक्ति के जीवन-काल में, जो अभी जीवन के तीसरे दशक में भी नहीं पहुँचा है, व्यापार जगत् और उसके कारण सामाजिक जीवन एवं राजनीतिक दुनिया, सारा संसार ही बदल गया है।" वह नव-युग के साथ था। मन्द गति से घिसे-पिटे मार्गों पर वह नहीं चलेगा। उसका शासन तो राजनीतिक उन्नति को बढ़ावा देने का यत्न करेगा।

उत्साही और शक्तिशाली व्यक्तित्ववाले उस भूतपूर्व विश्वविद्यालय-अध्यक्ष में नेतृत्व करने के निश्चित गुण प्रत्यक्ष होने लगे। 'गुरु' स्मिथ को सखेद ज्ञान होने लगा कि अपने उम्मीदवार को जाँचने में उसने भूल की थी। स्मिथ किसी पद के लिए नहीं खड़ा होगा, इस समझौते के विरुद्ध उसने सेनेट (विधान सभा) के लिए अपनी उम्मीदवारी की तुरन्त घोषणा कर दी। विल्सन ने विरोध किया। जब स्मिथ ने हठ की, तो गवर्नर ने यह विषय जनता के सामने रख दिया। स्मिथ की वहाँ हार हो गई, तो तिरस्कृत राजनीतिक चिल्ला पड़े—"कृतघ्न"! पर न्यू जर्सी के लोग अपने प्रशासक के कार्यक्रमों में रुचि लेने लगे।

दिखावे भर का वह उम्मीदवार अविलम्ब काम में जुट गया। राज्य के अतिनिन्दित दोषों में सुधार करने का कार्यक्रम उसने बना लिया था और शिक्षा-प्रणाली के सिद्धान्तों के साथ खिलवाड़ करनेवालों में से वह नहीं था। जब तक उसके विचारों ने वास्तविकता का रूप नहीं ले लिया, उसने चैन नहीं लिया। विल्सन की योजना-व्यवस्था में गवर्नर केवल दिखावे का व्यक्ति नहीं था। वह दल का ही नहीं, बल्कि राज्य का भी नेता था। वह मेज़ पर शान्ति से बैठे रहने को तैयार नहीं था कि समस्याएं उसके पास लाई जाएँ

और वह प्रतीक्षा करे।

इसके स्थान पर जो सुधार उसके मन में थे, उन्हें लेकर वह विधान सभा के सामने स्वयं पहुँच गया। उसके उद्‌घाटन के कुछ महीनों के भीतर ही उसके कार्यक्रम का अधिकांश कार्यान्वित होने लगा। सफलता की यह एक विस्मयकारी घटना थी—डाइरेक्ट प्राइमरी लॉ, करप्ट प्रैक्टिसिज़ एक्ट, एम्प्लायर्स लाइबिलिटी एक्ट, पब्लिक युटीलिटीज़ कमीशन और नगर व्यवस्था में सुधार। इसके अतिरिक्त ऐसे नियम भी बने, जिनका उद्देश्य ट्रस्टों के अनुचित शोषण से जनता की रक्षा करना था। जन-साधारण इन नियमों को "सात बहनें" कहने लगे थे। गवर्नर विल्सन जिस गति से काम आगे बढ़ा रहे थे, उसे देखकर न्यू जर्सी के लोग अवाक् थे।

इन गतिविधियों को देखकर कर्नल हार्वे को विश्वास हो गया था कि उसने राष्ट्रपति के पद के लिए आदर्श उम्मीदवार पा लिया है। परन्तु नायक स्मिथ के भाग्य में जो निहित था, उसे उसका पाठ अभी पढ़ना था। विल्सन को सँभालना दूसरे लोगों के वश की बात नहीं थी। आदि से अन्त तक वह तो नव-प्रजातन्त्र का प्रतिनिधि था।

१९११ के दिसम्बर के अन्त में अवश्यम्भावी अन्त आ गया। हार्वे को यह जानकर खेद हुआ कि यदि उसे वॉल स्ट्रीट का प्रतिनिधि रहना है, तो वह विल्सन का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकेगा। हार्वे का समर्थन जाता रहा। परन्तु, एक मास पूर्व विल्सन की भेंट टेक्सास के एक शान्त, श्वेत-केशी व्यक्ति से हो चुकी थी। उसकी कोई राजनीतिक आकांक्षा नहीं थी और न ही किसी उम्मीदवार से अनुचित लाभ उठाने की इच्छा थी। परन्तु, उन सिद्धान्तों पर जिनके लिए वह न्यू जर्सी का गवर्नर खड़ा हुआ था, वह इतना मुग्ध था कि उसने उसे वहाँ बिठाने का दृढ़ निश्चय कर लिया, जहाँ से इन क्रान्तिकारी राजनीतिक आदर्शों का अधिकाधिक प्रचार हो सके।

यह नया मित्र था कर्नल हाउस, जो तत्काल अपनी महती योजना पर जुट गया। परिणाम यह हुआ फि १९१२ में जब डैमोक्रैटों का सम्मेलन

बाल्टीमोर में हुआ, तो वुड्रो विल्सन का नाम २ जुलाई को छियालीसवें बैलेट पर युनाइटेड स्टेट्स के राष्ट्रपति-पद के लिए प्रस्तावित हो गया। और यह सब एक निराले संगठन की सहायता से हुआ। उसमें अधिकांश अपने राजनीतिक विश्वास पर दृढ़ विद्वान् थे। परन्तु व्यावहारिक राजनीति का उन्हें बहुत कम ज्ञान था। ऐसा लगता था कि प्रमुख उम्मीदवार चैम्प क्लार्क को पोषण देनेवाली सुदृढ़ व्यवस्था से लोहा लेने में वे एकदम अयोग्य थे।

परिच्छेद ५

राष्ट्रपति भवन में

विल्सन के राष्ट्रपति-पद का अभियान अधिकाँशतः वे उत्साही कार्य-कर्त्ता चला रहे थे, जो राजनीति के सक्रिय अनुभव में कोरे थे। धर्म-योद्धाओं की सेना की भाँति वे उसके नाम की अलख जगाने निकल पड़े और पश्चिम में जहाँ उसे प्रायः कोई नहीं जानता था, सर्वत्र वे अपने उम्मीद-वार के गुण-गान करने लगे। "विचित्र चिह्न वाली" एक नई राजनीतिक पताका सँभाले, उन धर्म-वीरों में से एक वॉल्टर हाइन्स पेज ने घोषित कर दिया कि मिसिसिपी के पश्चिम में विल्सन को लोग "अनन्ताकाश में एक प्रकार की स्वतन्त्र विचरनेवाली मुक्त चेतना" के रूप में देखते हैं। उसका विश्वास था कि थियोडोर रूज़वेल्ट के समय से मतदाता राजनीतिक प्रश्नों के स्थान पर मोहक व्यक्तित्व में अधिक आस्था रखने लगा था। फलतः इन शूरवीरों को विल्सन का मानवीय पक्ष और उसका व्यक्तित्व ही अम-रीकी लोगों के सामने उपस्थित करना था।

परन्तु बाल्टीमोर सम्मेलन के अधिकांश प्रतिनिधि चैम्प क्लार्क को समर्थन का वचन दे चुके थे। वह पुराने विचारों का राजनीतिज्ञ था और एक सुगठित व्यवस्था का समर्थन उसे प्राप्त था। ब्रायन, जो चिरस्थायी उम्मीदवार समझा जाता था, परन्तु जिसका नाम प्रस्तावित होने की आशा बहुत कम थी, सदा की भाँति बहुसंख्यक मत पाने का विश्वास बनाये हुए था। जब तक लोगों की भावना अधिक स्थिर नहीं हो पाई, उसने अपना विचार स्पष्ट नहीं होने दिया। अपने छोटे से राजनीतिक जीवन में विल्सन अधिकारियों के प्रति विद्रोही सिद्ध हुआ था। अपने मन का भेद वह किसी

पर प्रगट नहीं होने देता था, और जिन आदर्शों पर उसकी आस्था थी, उन्हीं के लिए लड़ता था। दल के नेता और अधिकारी के बीच का परम्परागत मेल निभाने की वह परवाह नहीं करता था। उसके व्यक्तित्व और स्वातन्त्र्य ने राजनीति की नई विचारधारा में रुचि रखने वालों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। मैदान में तीन उम्मीदवार थे। उदार रिपब्लिकन जो उग्र रूज़वेल्ट का समर्थन करने को अनिच्छुक थे, उनमें से अनेक के मत उसे मिलने की बहुत सम्भावना हो चुकी थी।

यह सब तो सन्दिग्ध था, परन्तु क्लार्क के पक्ष में बहुत कुछ कहा जा सकता था। तो क्या ब्रायन बोलेंगे?—किन्तु, वह मृदुभाषी वागीश मौन था। कोलाहल और शोर-गुल मचता रहा। डेमोक्रेटिक दल के नये और पुराने तत्त्व सब ही यह संघर्ष छोड़ने को तैयार नहीं थे। जब पाँसा निश्चित रूप से पलटने लगा, तो ब्रायन ने अपनी शक्तियाँ विलसन के पक्ष में लगा दी। एक नाटकीय प्रभाव में इलिनॉय के प्रतिनिधियों ने अपने मत प्रगतिशील उम्मीदवार के पक्ष में डाल दिये और विलसन निर्वाचित हो गया।

उसने अपना मन क्यों बदला, यह प्रश्न करने पर प्रतिनिधियों के प्रमुख ने बताया—"चूँकि मेरे आत्मज (पुत्र) ने मुझ से ऐसा करने को कहा।"

"परन्तु, उसका आप पर इतना प्रभाव कैसे पड़ा?"

उसने धीरे से उत्तर दिया—"चूँकि मैं समझता हूँ कि मेरा पुत्र अमरीकी युवकों की विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। यह आदर्शवादिता है, यही वास्तविकता है। मैं इससे बच नहीं सकता।"

विलसन के विद्याव्यसनी जीवन की मंथर गति भी अवरुद्ध हो गई। न्यू जर्सी के राज्यपाल की स्थिति में उसका समय नई समस्याओं में बीतने लगा। सार्वजनिक प्रश्नों के सम्बन्ध में उसकी वृत्ति और नवीन राजनीतिक विचारों के लिए उसकी सर्वविदित सहिष्णुता के कारण उसके नाम पत्रों की एक बाढ़-सी आ गई और उसके पास उनके ढेर लग गये। पत्रों की इतनी असाध्य भीड़ से कैसे निपटा जायगा, इस प्रश्न का उसने हँसते हुए उत्तर दिया—"मैं उस आयरवासी की तरह हूँ, जो रसा (सूप) काँटे से खा रहा था। किसी ने उसे चमचा पेश किया, तो उसने उसे परे हटा कर कहा था—'यह

ऐसे ही ठीक है, मेरा इससे काम चल रहा है'।"

जब वुड्रो विल्सन अमरीका का राष्ट्रपति बना, तो वह छप्पन वर्ष का था। वह पहला डेमोक्रैट था, जो बीस वर्षों में इस उच्च स्थान के लिए चुना गया था। मतदान में उसकी विजय पर उसके दल ने काँग्रेस के दोनों सदनों पर अधिकार प्राप्त कर लिया। फिर भी अपना नया कर्त्तव्य संभालते समय उसके चित्त में जीत का विशेष उल्लास नहीं था। अपने उद्घाटन भाषण में उसने स्पष्ट कहा,—"यह कोई विजय की घड़ी नहीं है। यह तो समर्पण की वेला है।" व्यवस्था में सुधार के एक विस्तृत कार्यक्रम की रूप-रेखा उसने उपस्थित की और आशा व्यक्त की कि उसके कार्य-काल में वह पूरी हो जायगी। जनश्रुति के अनुसार वह कभी भी शारीरिक रूप से सशक्त नहीं था। पेट के लिए एक पिचकारी और सिरदर्द की गोलियों की एक बोतल साथ में लिये उसने व्हाइट-हाउस में प्रवेश किया और अपने लिए एक असाधारण एवं अति दुष्कर कार्य उत्पन्न कर लिया। इस प्रकार उसके सुदृढ़ पूर्वाधिकारी और उसमें विशेष एवं अनोखा अन्तर था।

प्रतिष्ठापन संस्कार जब समाप्त हो गया तो, अवकाश प्राप्त सुशील राष्ट्रपति विलियम हॉवर्ड टैफ्ट ने विल्सन-परिवार का व्हाइट-हाउस में स्वागत किया। उसने उन्हें विश्वास दिलाया कि "यह भवन निवास के लिए अति सुखदायक है" और बिना किसी कटुता के विनोदपूर्वक यह भी कहा कि "अमरीकी जनता की सर्वसम्मत इच्छा से मैं इसे छोड़ रहा हूँ।"

विल्सन ने जब तक पदाधिकार वस्तुतः ग्रहण नहीं कर लिया, उसने उन आदमियों का संकेत तक नहीं किया, जिन्हें वह अपने मन्त्रिमण्डल के लिए चुननेवाला था। जनवाद और समाचारपत्रों ने इस अवसर पर अटकल लगाकर अपने-अपने नामों की सूचियों की धूम मचा दी। जब सरकारी तौर पर नियुक्तियाँ कर दी गईं, तो उनसे स्पष्ट हो गया कि राष्ट्रपति उस सिद्धान्त पर चला है, जिसके लिए उसने एक बार ग्रोवर क्लीवलैण्ड को सराहा था। विल्सन के अनुसार, "उसका विश्वास था कि प्रकट शिथिलता अथवा भ्रष्टाचार के समय में शासन के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह ऐसे नये रक्त का पुट दे, जो निरपेक्ष भाववाले और दलबन्दी की व्यवस्था

से मुक्त व्यक्ति हों।" नये मन्त्रिमण्डल के सभी लोग एक अपवाद को छोड़ जन-साधारण के लिए प्रायः अनजान थे।

मन्त्रिमण्डल की नियुक्तियाँ हो जाने पर उद्घाटन के एक दिन बाद ही एक व्यक्तव्य प्रकाशित कर दिया गया—"राष्ट्रपति को सखेद यह घोषित करना पड़ रहा है कि जब तक वे किसी को भेंट के लिए स्वयं आमन्त्रित न करें, सरकारी पद के प्रार्थियों से व्यक्तिगत भेंट का निषेध करना वे अपना कर्त्तव्य समझते हैं।" वह त्रासकारी भार जो प्रत्येक राष्ट्रपति पर लदा रहता था अन्ततः उठाया जाना ही था। राज्य-रूपी जहाज़ की छत साफ़ करके कार्य करने योग्य बनाई जा रही थी।

नये नियम का तर्क अकाट्य था। मुख्य व्यवस्थाधिकारी के लिए यह असम्भव था कि वह अपने अधिकारों के हज़ारों स्थानों के लिए सहस्रावधि प्रार्थियों के सम्बन्ध में पूर्णरूपेण निजी मत बना सके। पुरानी परिपाटी के अनुसार नियुक्तियाँ करने में अनावश्यक समय लगाने को वह बाध्य होता था और शासन के महत्त्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान नहीं दिया जाता था। इस सबमें परिवर्तन करना होगा। परिवर्तन सचमुच विल्सन के शासन का मूलमन्त्र बन गया—परिवर्तन और विकास।

उद्घाटन भाषण में की गई प्रतिज्ञाएँ किसी भव्य कल्पना-जगत् के प्रादुर्भाव का सम्भावित प्रभाव डालने वाला ओजस्वी शब्दजाल नहीं थीं। उसने जो भी आश्वासन दिया था, पूरा किया ही जायगा; विलम्ब के लिए अवकाश नहीं था। कांग्रेस में उस डेमोक्रेटिक बहुमत का मूल्य विल्सन भली-भाँति जानता था। दो वर्ष पीछे स्थिति बदल सकती थी। वह तुरन्त कार्य करने को तैयार हो गया।

अप्रैल के आरम्भ में उसने राष्ट्रीय व्यवस्थापिका सभा का विशेष अधिवेशन बुलाया। सेनेट और सदन दोनों की ८ अप्रैल को सम्मिलित बैठक हुई। उसके सामने एक नाटकीय अचरज उपस्थित होने वाला था। वुड्रो विल्सन स्वयं काँग्रेस में भाषण देने में उपस्थित था। वाशिंगटन और जॉन एडेम्स इसी प्रणाली पर चला करते थे। गत एक सौ बारह वर्षों में एडेम्स के समय से राष्ट्रपति के लिखित सम्वाद शासन की व्यवस्थापिका-

शाखा के नाम एक वाचक द्वारा काँग्रेस के रिक्त हॉलों में पढ़ने के लिए भेज दिये जाया करते थे और कालान्तर में वे काँग्रेसी रिकार्ड के मोटे-मोटे पोथों में छाप दिये जाते थे। सौ वर्ष पुराने इस चलन के स्थान पर अमरीकी व्यवस्थित शासन के आरम्भ काल का ढंग अपनाना नये व्यवस्थाधिकारी की विशेषता थी।

विल्सन के निराले कौशलपूर्ण कार्यों का वैसा ही प्रभाव हुआ, जैसी उसने आशा की थी। काँग्रेस में उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति ने सब का ध्यान उसके सन्देश पर केन्द्रित कर दिया और वह जन-मानस में बैठ गया। उसके प्रस्तावित सुधारों में मुख्य था तट-कर। उसने अपने सन्देश में इसी प्रश्न का विवेचन किया था। आयात पर चालू कर-सूचियाँ स्पष्टतया अप्रिय थीं। उसने आग्रह किया कि वे अविलम्ब बदल दी जायँ। तट-कर में घटोतरी और आय-कर से आवश्यक आय प्राप्त हो जायगी।

शक्तिशाली और अपने उपायों में मौलिक राष्ट्रपति तट-कर के अपने सन्देश के बल पर ही सन्तोष कर लेने को तैयार नहीं था। मई में उसने एक सार्वजनिक बयान द्वारा घोषित किया कि एक उपयुक्त सुधार-विधेयक के स्वीकार होने में बाधा डालने के लिए वाशिंगटन में एक कर-विरोधी पक्ष गतिशील था। देश को चेताया गया। कर-विरोधियों ने अपनी गति-विधियाँ रोक देना उचित समझा। फलतः ३ अक्तूबर को विल्सन ने अण्डरवुड सिम्मन्स टैरिफ़ पर, जो उसके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों से बहुत मेल खाता था, हस्ताक्षर कर दिये।

जून में मुख्य व्यवस्थाधिकारी पुनः काँग्रेस के समक्ष उपस्थित हुआ। उसके भाषण का विषय था मुद्रा-सुधार। निजी साहूकारा संस्थाओं को संदिग्ध उपयोगितावाली, जनसाधारण की सामूहिक रक्षा में असमर्थ और एकाधिपत्य से कुछ ही कम अधिकार प्राप्त मानते हुए उनके चालू ढंग का उसने विरोध किया।

उसने एक योजना प्रस्तुत की, जिससे राष्ट्र की असाधारण आर्थिक माँग की पूर्ति और आकस्मिक संकट का सफल निवारण हो सकता था। इससे उधार लेने-देने के मामलों में अधिक सुविधा सम्भव थी। विल्सन की

योजना, देश के साधनों को निजी बैंकों में केन्द्रित होने से रोकने के उद्देश्य से बनाई गई थी। सर्वाधिक महत्त्व की बात यह थी कि इस प्रणाली का नियन्त्रण स्वयं सरकार के हाथ में रहना था। योजना क्रान्तिकारी प्रतीत हुई, और थी भी। परन्तु काँग्रेस के सन्देहशील टॉमसों को विषय का अध्ययन करने पर स्पष्ट हो गया कि ऐसी साहूकारा प्रणाली वास्तव में वह सब कुछ कर देगी, जो उससे अभीष्ट था।

फिर भी सेनेट में घोर संघर्ष हुआ। अपने अधिकार को कम करने वाले परिवर्त्तन के अनिच्छुक बड़े-बड़े साहूकार देश के विभिन्न भागों से वाशिंगटन में एकत्र हो गये। उनके प्रभाव ने संघर्ष लम्बा कर दिया। राष्ट्रपति विल्सन स्वयं निर्धारित सिद्धान्तों पर आधारित 'ग्लास-ओवन फ़ेडरल रिज़र्व बैंकिंग लॉ' पर २३ दिसम्बर को ही हस्ताक्षर कर सके। यद्यपि फ़ेडरल रिजर्व ऐक्ट वास्तव में विल्सन ने स्वयं नहीं तैयार किया था, तो भी सेनेटर ग्लास ने बताया कि "फ़ेडरल रिज़र्व प्रणाली के लिए किसी भी अन्य जीवित व्यक्ति की अपेक्षा सर्वाधिक उत्तरदायी अकेला वही था। यह उसी का असीम धैर्य था, उसी का स्पष्ट भावी-ज्ञान था, अजेय साहस था और थी वुड्रो विल्सन की मानव-जाति की सेवा की प्रबल इच्छा, जो प्रत्येक बाधा को पार कर गई, प्रत्येक कठिनाई का निराकरण कर लिया और इस देश के संघीय शासन-विधान में फ़ेडरल रिज़र्व साहूकारा-प्रणाली अंकित कर दी गई।"

न्यू जर्सी की भाँति वाशिंगटन में भी कार्य करने-कराने का विल्सन का अपना ढंग था। परन्तु, गृह-समस्याओं के अध्ययन में अपने को पूर्णतया लगाने में वह स्वतन्त्र नहीं था। मध्य और दक्षिण अमरीका को ला ग्रान रिपब्लिका डेल नॉर्टे से आक्रमण करने और आधिपत्य जमाने की आशंका बनी रहती थी। मेक्सिको असाधारण रूप से उलझे हुए गृह-संघर्ष में बुरी तरह फँसा था और उसका प्रतिघात सीमा-पार को भी प्रभावित कर रहा था। विभिन्न कारणों से यूरोपियन देश भी अमैत्रीपूर्ण रुख अपनाये हुए थे।

स्पष्ट था कि अमरीकी विदेश नीति का पुनर्निर्माण गृह से ही आरम्भ

होना चाहिये था; अर्थात् युनाइटेड स्टेट्स और मेक्सिको एवं मध्य तथा दक्षिण अमरीका की जनता के बीच के सम्बन्धों में सुधार करना।

विल्सन का विश्वास था कि पानामा नहर विधेयक में अमरीकी जहाज़ों को कर-मुक्त करने की धारा से हे पॉन्स्फ़ोट सन्धि का उल्लंघन होता था। इस प्रकार जब तक यह विधेयक लागू रहेगा, इस के कारण ब्रिटेन की दुर्भावना बनी रहनी न्याय्य होगी। अपने चलन के अनुसार दोनों सदनों को सम्बोधित करते हुए यह मामला उसने काँग्रेस के समक्ष स्वयं उपस्थित किया। उसने विधेयक (जैसा कि उस समय था), में निहित अन्याय को दर्शाते हुए, उसे समाप्त करने की माँग की। प्रबल जनमत के समर्थन के कारण काँग्रेस ने वह माँग तुरन्त स्वीकार कर ली।

दक्षिण अमरीका के प्रति विल्सन की नीति परस्पर मैत्री और विश्वास की थी। दोनों महाद्वीपों के बीच, हस्तक्षेप न करना और सहयोग, नींव के वे पत्थर थे, जिन पर उसने अपने आदर्श का निर्माण किया। लेटिन अमरीकी लोकतन्त्र किसी प्रकार भी यांकी-निरपेक्षता के प्रति विश्वस्त नहीं थे। उसने उन्हें विश्वास दिलाने का यत्न किया कि युनाइटेड स्टेट्स "फिर कभी फुट भर अतिरिक्त धरती पर भी विजय द्वारा अधिकार पाने का उपक्रम नहीं करेगा।"

मोबाइल (एलबामा) में भाषण करते हुए उसने कहा—"स्वार्थ जातियों का गठ-बन्धन नहीं कराता; वह तो कभी-न-कभी उनके सम्बन्ध तुड़वा देता है।" समानता के व्यवहार को छोड़ किसी भी अन्य सम्बन्ध के बल पर तुम मित्र नहीं बन सकते।" दो वर्ष पश्चात् उसने घोषणा की—"आरम्भ से ही हमने सागर के इस पार स्वतन्त्रता के सब भागीदारों से समानता का बर्त्ताव किया है और स्वाधीन राष्ट्रों एवं स्वतन्त्र राजनीतिक लोगों के उपयोग के निमित्त अमरीका को सामूहिक रूप से अलग रखा है।"

विल्सन की महत्ता का यह एक रहस्य था, जो कभी-कभी दुर्बलता का कारण सिद्ध होता था। विस्तीर्ण सकल्पों के आधार पर वह तर्क करता था, इस विश्वास से कि परिस्थिति के अनुसार क्रियात्मक ब्यौरे अपने-अपने स्थान पर ठीक बैठ जायँगे। छोटे परिमाण पर वह काम कर

ही नहीं सकता था। प्रत्येक स्थिति का सामना करने में वह उससे सम्बंधित बड़े मामलों पर ध्यान देता था और उन्हीं में वह लीन हो जाता था।

संयुक्त राज्य अमरीका और दक्षिण अमरीका के सम्बन्धों के विषय में भी उसकी यही नीति थी। शान्ति, सद्भाव और परस्पर विश्वास होना ही चाहिये। इस में सब सहमत थे। भविष्य को गहराई से देखते हुए स्थायी शान्ति और "राजनीतिक स्वाधीनता एवं प्रादेशिक अखण्डता" में परस्पर विश्वास के सुनहले सपने का बिल्सन आनन्द लेने लगा। सारांश में उत्तर और दक्षिण अमरीका के महाद्वीपों को एक सूत्र में बाँध देनेवाला एक राष्ट्रसंघ, जैसा स्पेनिश विजेता और उपनिवेशवादी अँग्रेज अपने भव्य अद्भुत साहसिक अभियान के आरम्भ-काल से कभी नहीं बाँध पाये थे। ऐसा अमरीकी संघ था, जिस के लिए विल्सन ने प्रयत्न किया। उसके विचारों को मूर्त्त रूप देनेवाली सन्धि सचमुच तैयार कर ली गई, परन्तु इस के कारण होने वाले क्रान्तिकारी परिवर्त्तन के लिए सम्बन्धित सरकारें तैयार नहीं थीं। अन्ततः योजना त्याग दी गई।

इस बीच मेक्सिको ऊधम मचाने की राष्ट्रीय लीला में व्यस्त था। ऐसा लगता था कि प्रचण्ड गणतन्त्र का निरन्तर निरर्थक क्रान्तियाँ करने का स्वभाव बनता जा रहा था। थोड़े से ऐसे अधीर लोगों का, जो अनियन्त्रित शासन और युद्ध-कार्य की पुरानी परम्पराओं में पले थे, विश्वास था कि अमरीका को झपट कर इस क्रान्ति की स्थिति को वश में कर अधिकार प्राप्त कर लेना चाहिये।

पड़ोसी देश में क्या हो रहा था, यह जानना अमरीकियों के लिए कठिन था। सीमा-पार के जो भी समाचार हाथ लगते थे, कदाचित् ही एक दूसरे से मेल खाते हों। राष्ट्रपति को ऐसे समाचारों की अपेक्षा थी, जो एकदम विश्वसनीय और स्थिति पर पूर्ण प्रकाश डालने वाले हों। सदैव उसके निकट और बौद्धिक चिन्तन में पूर्ण सहयोगी उसकी पत्नी, मेक्सिको के इतिहास और इनके मामलों के अत्यन्त गम्भीर अध्ययन में जुट गई। तत्कालीन स्थिति से सम्बन्धित जो कुछ मिला, उसने पढ़ डाला। फिर छाँट कर अद्-भुत कौशलपूर्वक उसका सार निकाला। इस कार्य से उसने पति को अनेक

घण्टों के अनुसन्धान-कार्य के कष्ट-साध्य श्रम से बचा लिया।

इस सामग्री का अध्ययन करते हुए श्रीमती विल्सन को पता चला कि मेक्सिको का वैभव-काल वह था, जब भूमि छोटे-छोटे खण्डों में बँटी हुई थी और लोग अपनी-अपनी धरती के स्वामी थे। जब इन सब को एकत्र करके एक प्रकार से एकाधिकारवाली जागीर बना दिया गया, तो सारा उत्तर मेक्सिको आधे दर्जन आदमियों के हाथ में चला गया। इस पर संघर्ष खड़ा हो गया। धरती के इस परिवर्त्तित और सीमित स्वामित्व के फलस्वरूप जनता में असन्तोष और बेचैनी फैल गई। सदैव दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति रखनेवाला विल्सन उस दिन की आस करने लगा, जब हर देश में शासन करने वाले छोटे-छोटे गणों की अपेक्षा शासित जनता की बात सुनी जाया करेगी। सम्पूर्ण जनता मिलकर राष्ट्र बनाती है, न कि शासन, जो राष्ट्रीय आदर्शों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व प्रायः मिथ्या कर देते हैं। कालान्तर में जब उसे विशाल अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों का समाधान करना पड़ा, तो उसका यह दृष्टिकोण और भी स्पष्ट हो गया।

अपने इस सिद्धान्त के प्रकाश में उसने निरंकुश ह्यूएर्टा को मान्यता देना अस्वीकार कर दिया। उसका मत था कि उसने मेक्सिको के लोगों पर बलात् अधिकार कर लिया है। वह अपनी हस्तक्षेप न करने की नीति को 'जागरूक प्रतीक्षा' कहता था। दक्षिणी गणतन्त्र के मामलों पर अधिकार करने के किसी भी प्रयत्न की अनुमति देने को वह तैयार नहीं था। इस नीति के विरोध से अविचलित सहिष्णुता और धैर्य ने उसे प्रतीक्षा करने पर ही सन्तुष्ट रहने दिया। वह जानता था कि पुराने विचार के लोगों की समझ में यह बात नहीं आयगी। वह दृढ़ था कि मेक्सिको के लोगों को स्वराज्य का अवसर मिलना चाहिये।

८ जनवरी, १९१५ को इण्डियानापोलिस के अपने 'जैक्सन-डे' वाले भाषण में उसने कह दिया था :

एक बात के लिए मेरा बड़ा उत्साह है। मैं उसे उन्मत्त उत्साह भी कह सकता हूँ। वह है मानव की स्वतन्त्रता। मेक्सिको के प्रति हमारी वृत्ति के बारे में मैं एक बात कहना चाहता हूँ। मैं इसे आधारभूत सिद्धान्त मानना

हूँ कि प्रत्येक देश को अपने शासन का ढंग निर्धारित करने का अधिकार है। मेक्सिको के अस्सी प्रतिशत लोगों को, यह निश्चय करने में कि, उनके गवर्नर कौन बनने चाहियें अथवा उनका शासन कैसा होना चाहिये, "पास भी फटकने" नहीं दिया जाता था। यह सब, मेक्सिको की भी अभी की क्रांति तथा डायज शासन के अन्त तक था। और मैं उन अस्सी प्रतिशत का समर्थक हूँ। यह न मेरा काम है, न ही आप में से किसी का कि वे अपना काम कैसे चलाते हैं। देश उनका है। स्वतन्त्रता, यदि वे प्राप्त कर सकें—भगवान् करे कि वे शीघ्र ही उसे पालें—उनकी ही होगी। और जब तक मैं राष्ट्रपति हूँ, जितना मेरा बस चलेगा, उनके मामले में कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर पायेगा········मुझे जिस सबल राष्ट्र का होने का गर्व है, वह कहता है—'यह देश जिसे हम कुचल सकते थे, उसे अपने मामलों में उतनी ही स्वन्तत्रता प्राप्त होगी, जितनी हमें है।' यदि मैं बलवान् हूँ, तो दुर्बल को डराने-धमकाने में मुझे लज्जा आयगी।

यद्यपि मेक्सिको की पहेली उसे व्यथित करती रही तो भी राष्ट्रपति ने अपने उद्घाटन भाषण में दिये गये कार्यक्रम के अनुसार कार्य करने में देर नहीं लगाई। तटकर और मुद्रा के सुधार तो निश्चित रूपेण हो ही गये। रह गईं श्रमिकों की समस्याएँ और न्यासों (ट्रस्टों) की विभीषिका। रूजवेल्ट ने बड़े-बड़े व्यापार संघों से लोहा लिया था, अब विल्सन को आशा थी कि वह सरकार द्वारा उनके नियन्त्रण का निश्चित आधार स्थिर कर देगा। उसके प्रयत्नों के फलस्वरूप क्लेटन एण्टी-ट्रस्ट एक्ट बना। उसमें न्यासों को नियमित करने के व्यावहारिक ढंग की रूप-रेखा और श्रमिकों के रक्षार्थ विभिन्न आवश्यक व्यवस्थाएँ दे दी गईं। इस प्रकार हड़तालें और बाइकॉट, नियम का उल्लंघन नहीं रह गये। उनके विरुद्ध निषेधाज्ञाएँ अवैधानिक ठहरा दी गईं और न्यासों के सरकारी निरीक्षण और प्रतिबन्धों से श्रमिक संघ मुक्त कर दिये गये। इस महत्त्वपूर्ण व्यवस्था के साथ ही फ़ेडरल ट्रेड कमीशन एक्ट भी पास कर दिया गया।

कालान्तर में जब रेलरोड हड़ताल की आशंका हुई तो 'ऐडम्सन लॉ' के रूप में, श्रम-विधान में बढ़ोत्तरी कर के, श्रमिक का दिन आठ घण्टे का

ठहरा दिया गया। शासन ने एक-एक सौदागरी बेड़े की मिल्कीयत सरकार को दिलाकर समाजवाद के एक प्रयोग की जोखिम मोल ली और उसके परिणाम अहितकर निकले।

इन महत्त्वपूर्ण और प्रायः गहन विषयों का गाम्भीर्य हल्का करने को यदा-कदा विनोद का पुट मिल जाता था। जीवन रुचिकर बनाने में हास्य का रस भरने को विल्सन की स्कॉच-आइरिश वंश परम्परा सदैव सहायक होती थी। जब वह, पत्र लिखने, भाषण करने, विधान की योजना और उसे गति देने आदि राष्ट्र सम्बन्धी कार्यों में व्यस्त होता था तो वाशिंगटन के लोगों की उस पर ऐसी दृष्टि रहती थी मानो वह कोई कुतूहलपूर्ण प्रदर्शन की वस्तु हो और दिन-प्रतिदिन अपने कार्यों सम्बन्धी आख्यान संग्रह करता रहता हो। राष्ट्रीय राजधानी के इस प्रिय मन-बहलाव की जानकारी होने के कारण, राष्ट्रपति ने एक दिन 'प्रेस क्लब' के अपने भाषण में टीका की थी कि जाने क्यों वह जन-जन के लिए इतने आकर्षण की वस्तु था। राष्ट्रपति तो एक व्यक्ति न होकर, अधिकार-पद होता है। राष्ट्र के कार्य से अवकाश के समय में वह वुड्रो विल्सन ही रहना पसन्द करता था। परन्तु जन-साधारण उसे ऐसा नहीं करने देता था।

अपने आनन्दित श्रोताओं को वह अपनी मौज में बताने लगा कि उसने अपने सम्बन्ध में अनेक विचित्र चित्र देखे हैं और अद्भुत कहानियाँ सुनी हैं। उनका वर्णन उसने इस प्रकार किया—

अनेक बार संकेत द्वारा जनता को यहाँ तक कह देने को विवश हो जाता हूँ कि "इन सब के पीछे यह 'मैं' ही तो हूँ"·········भाग्य से कभी ऐसा अवकाश मिल जाता है जब किसी निमित्त से भूल जाता हूँ कि मैं अमरीका का राष्ट्रपति हूँ। इस प्रकार भूलने का एक उपाय होता है, किसी अच्छी सनसनीपूर्ण जासूसी कहानी द्वारा किसी कल्पित अपराधी के पीछे दौड़ लगाना, विशेषकर इस महाद्वीप के अतिरिक्त किसी अन्य द्वीप में, क्योंकि इस महाद्वीप के विभिन्न भागों की स्मृतियाँ मेरे लिए दुःखद होती जा रही हैं। स्मृतियाँ, जिन्हें डाकघर और दूसरी बातें जगा देती हैं, "चिन्तन के झीने आवरण के कारण धुँधली पड़ गई हैं।"······

इस पद के दायित्व से मुक्त होने के बाद किसी दिन फिर आकर मैं वाशिंगटन को देखूंगा। तब तक तो मैं उसी श्रेणी में हूँ, जिसमें हैं अजायबघर, कीर्ति-स्तम्भ, स्मिथसोनियम इन्स्टिट्यूशन या कन्ग्रेशनल पुस्तकालय और प्रत्येक वह वस्तु जो यहाँ आती है और जिसे राष्ट्रपति दिखाना होता है। यदि मुझे रूप भरने आते होते—प्रत्यक्ष में तो मैं ऐसे रूप बना सकता हूँ, जिन से भीतर की स्थिति स्पष्ट नहीं होती—तो मैं यह बात बता देता। क्योंकि तब मैं दर्पण के सामने अभ्यास करके निश्चय कर लेता कि क्या मैं स्मारक नहीं दिख रहा हूँ। पूरे अमरीका के साथ हाथ मिलाने की अपेक्षा राष्ट्रीय प्रदर्शन की वस्तु समझा जाना अधिक सरल अभिव्यक्ति होगी।

विल्सन, जिसके बारे में अनेक विलासपूर्ण कथाएं प्रचलित हो गई थीं, अपने निष्कपट मोहक रूप में तो ऐसा था। उदाहरणार्थ, एक गल्प के अनुसार राष्ट्रपति अपने एक अनुचर के साथ घोड़े पर सवार जा रहा था। थोड़ा पीछे रह जाने पर जब उस सेवक से जा मिला तो गम्भीरतापूर्वक उसे बताया—"जानते हो, पीछे खड़े उस छोटे से लड़के ने मुझे देखकर मुँह बना दिया।"

"तो राष्ट्रपति महोदय, क्या मैं उसे जाकर डाँटूँ।"

विल्सन ने कहा—"नहीं, नहीं मैंने भी पलट कर उसकी ओर मुँह बिचका दिया था।"

उस परिवार के एक मित्र का कहना है कि एक बार जब विल्सन की पुत्री मार्गेरेट न्यूयार्क से वाशिंगटन आने को थी, तो उसने अपने पिता को तार द्वारा यह सूचना दिलवाई थी कि वह रेल के दूसरे भाग में मिलेगी। जैसे इन कामों के विचित्र ढंग होते हैं, उसके अनुसार ही सन्देश वहन में तार का संदेश बुरी तरह विकृत हो गया। अगले दिन नाश्ता करते समय विल्सन ने बताया—"मार्गेरेट! कल तुम्हारे सम्बन्ध में मुझे अत्यन्त भयानक संदेश मिला। सन्देश था कि तुम वाशिंगटन दो टुकड़ों में पहुँच रही हो!"

विल्सन का स्वभाव था कि वह अपने परिवार के लोगों के साथ मिलने,

छोटी-छोटी यात्राओं पर जाते समय उन्हें विदा करने आदि में वैसा ही आचरण करता था, जैसा कोई था सामान्य व्यक्ति अपने लोगों के साथ करता है। उसकी यह बात, उन लोगों की आलोचना का विषय बन गयी थी जो राष्ट्र के प्रधान अधिकारी को एक प्रकार की तारों द्वारा स्वयं चलने वाली ऐसी मशीन समझते थे जिसका मानव में मूल न हो और वह बिना शरीर का भावना-रहित प्राणी हो। बोस्टन की एक महिला को इस बात पर आपत्ति थी कि "राष्ट्रपति सदैव अपनी पत्नी और पुत्रियों को स्टेशन पर विदा करने जाता है। यह तो अत्यन्त अशोभनीय है।"

उसके विनोदी होने का नमूना, एक निरर्थक पद है जो प्रायः उसका बताया जाता है और जिसे वह अवसर आने पर प्रभावोत्पादक ढंग से प्रयोग करता था। वह इस प्रकार था—

नहीं तारिका हूँ मैं सुन्दरता में,
अन्य अधिक हैं मुझ से भी रमणीक।
पर मेरा मुख, इसकी चिन्ता न मुझे कोई,
कारण, मैं तो हूँ इसके पीछे;
कष्ट उन्हें होता है, जो देख रहे सम्मुख से।

परन्तु विल्सन ने अपने को स्वयं-चालित मशीन नहीं बनने दिया। उस के जीवन में विशेष आनन्द का समय वह था जो वह अपने परिवार के साथ बिताता था। एकान्त की घड़ियों में जो मौज थी उसे व्हाइट हाउस को राजनीतिक क्लब का रूप देने के अनिश्चित विशेषाधिकार से बदलने को तैयार नहीं था। राजनीतिज्ञ इसके विरोध में कहते थे, "निराला! असभ्य!" उनकी शिकायत थी कि राष्ट्रपति उनके साथ सामाजिक स्तर पर मिलने को तैयार नहीं था। इन आलोचनाओं का विल्सन कोई उत्तर नहीं देता था। राजनीतिज्ञों से अलग रहने का उसका कोई भाव नहीं था। हाँ, वह यह अनुभव करता था कि कार्यभार, जो शासनाधिकार का अविच्छिन्न अंग है, किसी प्रकार के विश्राम और एकान्त से ही हल्का किया जा सकता है।

इस काम के लिए भोजन का समय विल्सन को बहुत अनुकूल होता

था । उस समय राजनीति और व्यापार की बात-चीत एकदम भुला दी जाती थी । इनके स्थान पर बातचीत का विषय होता था—साहित्य, संगीत, कला अथवा उसकी रुचि के विविध विषयों में से कोई एक ।

एक दिन जब वह दोपहर के खाने पर बैठा तो उसके मुख पर आनन्द की झलक थी । वह बोला, "अभी-अभी मेरी पश्चिम के एक बड़े विनोदी व्यक्ति से बातें हुईं । उससे मिलकर मैंने अत्यन्त सुख अनुभव किया ।" उसके वर्णन ने उसके व्यवहार की निर्दोष स्वाभाविकता को विशेष रूप से सराहा । इस गुण का विलसन सदैव ग्राहक था और उसे यह बहुत कम मिलता था । उससे मिलने आने वाले, प्रायः अपनी वास्तविकता को पूर्ण-रूपेण छिपाने वाले, एक काल्पनिक आवरण में लिपटकर आते थे । और बात भी थी कि अमरीका के राष्ट्रपति से कौन स्वतन्त्रतापूर्वक बात कर सकता था ?

परन्तु, यह पश्चिमी युवक कुछ निराला था । राष्ट्रपति से बातें करते हुए, उसके पद से आतंकित होना तो दूर, एकाएक आगे बढ़कर उसने विलसन की टाई थाम ली और उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगा । तब उसने अपनी टाई सँभाली और दोनों ही बड़ी गम्भीरता से अपनी-अपनी टाई के गुणों का विवेचन करने लगे । यह ऐसा प्रसंग था जिसे विलसन पसंद करता था ।

उसे दिन-प्रति-दिन अनुभव होता जा रहा था कि सामान्य व्यक्ति का सहज, सुखकर व्यवहार, राष्ट्रपति के लिए उपयुक्त नहीं । स्निग्ध मैत्री, विश्वास दिलाना, उत्तरदायित्व से मुक्ति और सामाजिक आचरण आदि उसके लिए नहीं थे । विलसन का विशेष मित्र कर्नल हाउस, व्हाइट हाउस में प्रायः आया करता था । अपनी डायरी में उसने अपने आतिथेय के साथ एक सायंकालीन सम्भाषण दिया है । उसने राष्ट्रपति से विश्राम लेने का आग्रह किया तो, वह लिखता है कि विलसन ने कहा "कि लोग उसकी हत्या करने का यत्न कर रहे हैं और उसने अपने पद के कारण सूनेपन की जो चर्चा की, वह बड़ी दुःखद थी ।"

सबसे पृथक् रहने का बोध उसे व्यथित करता था । एक दिन दोपहर के खाने पर उसने अपनी जेब से उस भाषण की प्रति निकाली जो लिंकन

के जन्मस्थान पर पढ़ने के लिए उसने तभी लिखा था। वह अपने परिवार को पढ़कर सुनाने लगा—

"प्रत्येक वह व्यक्ति, जो दूसरों के मामलों में और अपने लिए भी, राष्ट्र के हित में और व्यक्तियों के भाग्य-निर्माण में लगा रहता है, उसकी आत्मा अति पवित्र और निविड़ एकान्त चाहती है। कोई दूसरा उस एकान्त में प्रवेश की अनधिकार चेष्टा नहीं कर सकता। सत्य के लिए आत्मा की एकान्त खोज में शायद दूसरा कोई सहायक भी नहीं हो सकता।"

जब वह अपना भाषण पढ़ चुका तो देर तक सब मौन रहे। फिर उसकी पुत्री मार्गरेट ने प्रश्न किया कि वह लिंकन को इतनी अच्छी तरह कैसे समझ सका। उसके पिता ने उत्तर दिया, "शायद, यदि मैं उसे समझ पाया हूँ तो इस कारण कि मैं उस महत्त्वपूर्ण एकान्त को जानता हूँ जो किसी नेता के जीवन के लिए सदैव आवश्यक होता है।"

इन वर्षों में विल्सन को एक नये प्रकार के एकान्त, एक मर्मान्तक दुःख का अनुभव करना पड़ा। १९१४ के अगस्त में उसकी पत्नी का देहान्त हो गया। मृत्यु निकट आने पर उसे अपने पति की चिन्ता लगी थी। परिवार के चिकित्सक को कहे उसके अन्तिम शब्द थे—"मुझे वचन दो कि मेरे चले जाने पर, वुड्रो की देख-भाल तुम करोगे।" ऐसा लगता था कि एक युग बीत गया, जब एलन एक्सन से उसका प्रथम मिलन रोम के छोटे से गिरजाघर में हुआ था। तभी से विल्सन ने निरन्तर उसकी उपासना की थी। उसका चले जाना, उसके लिए एक भयंकर दुर्घटना हो गई। बहुत कम विवाह सम्बन्ध इतने सुखी हुए होंगे। और बहुत ही कम दम्पति होंगे जिनके स्वभाव में उनके जितना साम्य रहा हो। महीनों, राष्ट्रपति का शोक असह्य बना रहा, यहाँ तक कि उसके परिवार के लोग सचमुच भयभीत हो उठे। उन्होंने उनसे एकान्त छोड़कर फिर से लोगों से मिलने-जुलने का आग्रह किया। अन्ततः उसके शुभचिन्तकों को यह जानकर सुख हुआ कि उसके पारिवारिक जीवन में एक नया अध्याय आरम्भ होने वाला था। दिसम्बर, १९१५ में वर्जीनिया की श्रीमती एडिथ बोलिंग गॉल्ट से उसने विवाह कर लिया। वह पोकेहोन्टाज़, जिन्होंने अमरीका के निर्माण के आरम्भ

काल में भाग लिया था, के वंश में से थी।

१९१२ के डैमोक्रेटिक आन्दोलन के समय से राष्ट्रपति के कार्यकाल की उचित अवधि के सम्बन्ध में निरन्तर आन्दोलन चलता आ रहा था। अनेक ६ वर्ष की अवधि के पक्ष में थे और यह भी कि वह पुर्निर्वाचन का अधिकारी नहीं होगा। विल्सन ने स्वयं घोषणा की थी :

"उस राष्ट्रपति के लिए जो जनता का सच्चा मुखिया नहीं है, और जो उस पर लादा गया है एवं उसका नेतृत्व नहीं करता, चार वर्ष की अवधि बहुत लम्बी है। और उस राष्ट्रपति के लिए जो सुधार का महान् कार्य कर रहा है अथवा यत्न कर रहा है तथा जो अपने कार्य-काल में कार्य समाप्त नहीं कर पाया है, यह अवधि अत्यन्त अल्प है।"

उसने चार वर्षों में बहुत कुछ कर लिया है, परन्तु अभी और इतना अधिक करने को पड़ा है! कर्नल हाउस ने राजदूत पेज को लिखा था :

"लिंकन के समय से अन्य किसी भी राष्ट्रपति का दायित्व भार उसके जितना नहीं रहा। मेरा विश्वास है कि यदि इस देश के सर्वाधिक महान् नहीं तो महत्तम राष्ट्रपतियों में से एक के रूप में उसका नाम इतिहास में अमर रहेगा।"

१९१६ का डैमोक्रेटिक सम्मेलन, कर्नल के निरूपण से सहमत था। जब सेंट लुई में अधिवेशन हुआ तो जून १६ को विल्सन का नाम जयघोष के साथ पुनः प्रस्तावित किया गया।

परिच्छेद ६

दो लपटों के बीच में

१९१४ के ग्रीष्म के साथ सदा की भाँति ग्रीष्मकालीन सुस्ती आ गई थी। अवकाश काल में स्टेट और फ़ैडरल विधान सभाएँ विश्राम करती हैं। राजनीतिज्ञ लोग भी चैन से बैठ जाते हैं। गति विधि बहुत कम हो जाती है। समाचारपत्रों के पाठकों को ऐसी हत्याओं और निन्दित कृत्यों के समाचार, जो शताक्षी सम्वाददाता के दृग्जाल में फँस जाएँ, पढ़ने को मिलते हैं। इस प्रकार २८ जून को एक हत्या हुई जिसके साथ कुछ विचित्र पठनीय धटनाएँ जुड़ी थीं। ऑस्ट्रिया के एक राजकुमार—फ़र्डिनेण्ड और उसकी पत्नी की, घात लगाकर, सर्बिया में हत्या कर दी गई थी।

किसने कभी राजकुमार फ़र्डिनेण्ड का नाम सुना था? निश्चय ही उसका नाम अमरीका में तो किसी को आकर्षित नहीं कर सकता था। अतः बड़ा विस्मय हुआ जब एक मास पीछे फ़र्डिनेण्ड की हत्या के लिए दण्ड-स्वरूप ऑस्ट्रिया ने सर्बिया पर युद्ध की घोषणा कर दी। और फिर आश्चर्यजनक तथा व्याकुल करने वाली बातें होनी आरम्भ हो गई। जहाँ पहले सब ओर शान्ति का राज्य था, वहाँ दुनिया को अब रक्त दिखाई देने लगा।

३० जुलाई को रूस सरकार ने अपनी सेनाएँ युद्ध के लिए तैयार कर दीं। १ अगस्त को जर्मनी ने रूस से युद्ध घोषित कर दिया। दो दिन पीछे फ्राँस से और अगले दिन ग्रेट ब्रिटेन ने जर्मनी से युद्ध ठान लिया। यूरोप एक नगण्य व्यक्ति की मृत्यु पर पागल हो उठा था। बेल्जियम पर आक्रमण कर दिया गया। संसार भय और घृणा से सहम गया। राष्ट्र

शान्ति-शान्ति चिल्लाते रहे थे और अब युद्ध को छोड़ अन्य कुछ नहीं था। समस्त यूरोप अकस्मात् सेनाओं का अखाड़ा बन गया, मानो यह जो कुछ भी था, उसके लिए वे सब तैयार खड़े थे और प्रतीक्षा कर रहे थे।

वे कारण जो विद्युत् के समान इस परिवर्तन के पीछे थे और जिन्होंने यूरोप के एक बड़े भाग को अस्त-व्यस्त कर डाला था, पहले तो सब ओर के परस्पर-विरोधी समाचारों की भरमार में स्पष्ट नहीं हो पाये। जो प्रत्यक्ष रूप से आज उत्तेजनापूर्ण एवं•विश्वस्त समाचार समझा जाता वही दूसरे दिन घटनाओं की नई लहर और व्याख्या में बहकर, भुला दिया जाता। जो कुछ हो रहा था, उसका विवेकपूर्ण ज्ञान तथा इस सब का कारण जानना असम्भव था; कारण कि किसी सही विवेचन के निमित्त आवश्यक शान्त तटस्थता, घृणा एवं जातीय पक्षपात के तल में गाड़ दी गई थी। द्वेष, उत्तेजक गतिविधियों एवं सब प्रश्नों को मलिन कर देने वाले प्रचार को युद्ध जन्म देता है। इसके परिणाम में सत्य कदाचित् ही प्रगट हो पाता है।

निश्चय ही यह सब कुछ ऑस्ट्रिया के राजकुमार की हत्या के प्रतिशोध के रूप में नहीं हुआ था। यह तो शक्ति-सन्तुलन के पुराने संघर्ष का पुनरुद्धार लगता था। पुरानी व्यवस्था का यह युक्तिसंगत अन्त था।

इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस और कालान्तर में इटली, एक ओर थे और दूसरी ओर जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी। प्रचण्ड बाल्कन वासी (यूगोस्लाविया, रूमानिया, बल्गेरिया, अल्बानिया, ग्रीस तथा यूरोपियन टर्की के लोग) अगल-बगल, डाँवाँडोल झकोले खा रहे थे। वे सब गुप्त कूट-नीति के जाल में इतने उलझे हुए थे कि सारे ढाँचे को उलट-पुलट किये बिना, किसी एक को छुआ भी नहीं जा सकता था।

अमरीका में घटना-चक्र पर जो बिस्मय प्रकट किया गया था उसने बेल्जियम के शहीद होने पर रोष का रूप ले लिया। तिस पर भी अमरीका का इन सब से कोई सम्बन्ध नहीं था। इस गणतन्त्र के संस्थापकों के समय से अमरीका यूरोप की कठिनाइयों से अछूता रहा था। भौगोलिक रूप से भी वह विदेशी संघर्ष के भँवर की पहुँच से बहुत दूर था।

१८ अगस्त को राष्ट्रपति विल्सन ने अमरीकी जनता के नाम एक चेतावनी की घोषणा की :

"आजकल जबकि मानव की आत्मा कसौटी पर है, अमरीका को तटस्थ रहना होगा। विचार और कर्म में भी हमें निष्पक्ष रहना होगा। हमें अपनी भावनाओं और प्रत्येक व्यवहार पर, जो दूसरों के साथ झगड़े में किसी एक के प्रति पक्षपात समझा जा सकता हो, रोक लगानी होगी।"

राष्ट्रपति अमरीका के उन गिनती के व्यक्तियों में से थे, जिनके लिए विश्वयुद्ध का समाचार कोई अचम्भे की बात नहीं थी। यूरोप के सैनिकवादी दल की भड़भड़ाहट का दबा-घुटा शब्द उनके कानों में बहुत पहले पड़ चुका था। विल्सन, अमरीका को "संसार में मध्यस्थता करने वाला राष्ट्र" समझते थे। अपनी इस धारणा की परीक्षा करने को वे उत्सुक थे। १९१४ की बसन्त के आरम्भ में, जब सब शान्त प्रतीत हो रहा था, उन्होंने कर्नल हाउस को विदेश भेजा; अधिकारी की स्थिति में नहीं, बल्कि अपने निजी मित्र और प्रतिनिधि के रूप में; और यूरोप के हलचल भरे राष्ट्रों से सैनिक शक्ति घटाने की आवश्यकता के लिए आग्रह किया। अपने दूत से राष्ट्रपति को जो विवरण मिले वे उत्साहवर्द्धक नहीं थे। हाउस ने निश्चित रूप से उन्हें बताया कि यूरोप का प्रत्येक देश, दूसरों से भयभीत है। दूसरे शब्दों में "सैनिकवाद एकदम पागल हो उठा है।"

सर एडवर्ड ग्रे (कालान्तर में लार्ड ग्रे), जिससे उसने इंग्लैण्ड में बातचीत की, अकेला व्यक्ति था जो मानो बियाबान में चिल्ला रहा था। ग्रे सब बातों से पहले शान्ति चाहता था। उसका कहना था कि यदि जर्मनों से बातचीत कर पाता ! यदि वे केवल एक बार मिल बैठना स्वीकार कर लें तो सब ठीक हो जायगा। विल्सन की भाँति वह इंग्लिश राजनीतिज्ञ मध्यस्थता में विश्वास करता था और उसकी क्षमता जाँचने को उत्सुक था। इतना होने पर भी उसका विश्वास था कि स्थिति इतनी गम्भीर और भयावह नहीं हो सकती, जैसा कि हाउस का अनुमान था। दोनों विरोधी पक्षों के प्रमुख राष्ट्रों का समागम कराने की इच्छा से कर्नल ने बर्लिन को प्रयाण किया।

क़ैसर से उसकी लम्बी भेंट हुई। उसका कहना था कि इंग्लैण्ड के लिए उसके मन में बड़े मधुर भाव हैं और वह शान्ति का इच्छुक है। परन्तु जर्मनी "चारों ओर से आतंकित है।" ऐसे संकट के होते हुए और ऐसी महत्त्वाकांक्षाओं के विरुद्ध, जो दिन-प्रतिदिन दृढ़तर एवं विवेक-शून्य होती जा रही हों, शान्ति की चर्चा करना व्यर्थ है। यूरोप एक बारूद-घर बना हुआ था जिसे दियासलाई दिखाने भर की देर थी। राजकुमार की हत्या ने उसकी पूर्ति कर दी।

शासन तटस्थता की नीति पर चाहे जितनी दृढ़ता से कार्य करे; उस पहली अगस्त की घातक रात्रि के बाद, यूरोप की घटनाओं की उपेक्षा करना असम्भव था। दिसम्बर तक यह बात स्पष्ट हो गई थी कि अमरीका के विदेश व्यापार में बाधाएँ आ खड़ी हुई थीं; जिनके संकट का रूप ले लेने की आशंका थी। यह विचित्र बात थी कि पहली ही मुठभेड़ ग्रेट ब्रिटेन से हुई। अमरीकी जहाज़ तलाशी के लिए रोक दिये गये और जर्मनी जाने वाला माल निकाल लिया गया। प्रतिबन्ध स्थापित कर दिया गया।

लन्दन की घोषणा का प्रमाण देते हुए, विल्सन ने ब्रिटेन को तुरन्त पत्र भेजा और तटस्थ राष्ट्र के व्यापारी जहाज़ के मार्ग में बाधा डालने के विरुद्ध शिकायत की। अन्तर्राष्ट्रीय नियम की जो बात उठाई गई, उसके विरोध का कोई यत्न नहीं किया गया। परन्तु ब्रिटेन ने कहा कि एक नये तत्त्व, पनडुब्बी जहाज़ ने समुद्र की स्थिति बदल दी है। इस कारण, प्रति-रोध के उपायों में भी तदनुसार अंग्रेज़ों को परिवर्तन करना होगा। तब फरवरी में, जर्मनी ने ब्रिटिश आइल्स के चारों ओर युद्ध घोषित कर दिया; इससे तटस्थ राष्ट्रों का मार्ग और भी दुस्तर हो गया।

राष्ट्रपति को राज्य की गाड़ी कठिन परिस्थितियों में से निकाल ले जानी पड़ी। जैसे-जैसे समय बीतता गया, उनका काम अधिक दुष्कर होता गया, क्योंकि यूरोपीय युद्ध, जिसने संसार के नाश की आशंका खड़ी कर दी थी, उसमें अमरीका के लोग प्रायः एक अथवा दूसरे पक्ष के साथ सहानु-भूति जताने लगते थे। एक युद्ध-पिपासु दल ऐसा था जिसका विश्वास था कि अमरीका को बेल्जियम के साथ किये गये अनाचार का बदला चुकाने

के लिए अविलम्ब शस्त्र सँभाल लेने चाहियें। एक दूसरे दल का मत था कि इस देश का विदेशों में क्या हो रहा है, उससे कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि यूरोप आत्मघात के मार्ग पर है, तो यूरोपीय राष्ट्रों को स्वयं संभावित विपत्ति को टालना चाहिए। गिनती मे इन सबसे अधिक सबल एक तीसरा दल था, जो सारे मामले की ओर से उदासीन था।

विल्सन जानते थे कि जनता का अधिकांश मध्यस्थता के पक्ष में नहीं था, वह तो तटस्थता की सुरक्षित पतवार सँभाले रहना चाहता था। एसो·सिएटेड प्रेस के वक्तव्य में उन्होंने कहा :

"नित्य जब मैं परेशानियों से बुरी तरह घिर जाता हूँ, तो यह स्मरण रखने का यत्न करता हूँ कि मेरे अपने लोग क्या सोचते हैं······किसी स्वार्थ की भावना से मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ कि जो भी हो, वर्त्तमान में तो हमारे पूर्ण कर्त्तव्य का इस एक आदर्श वाक्य में सारा सार आ जाता है—"पहले अमरीका।"

इंग्लैण्ड से अपने वाग्युद्ध के अनन्तर विल्सन ने जर्मनी को उस राष्ट्र की पनडुब्बी सम्बन्धी गतिविधियों के विरोध में शिकायती पत्र भेजा। उन्होंने सूचित किया कि अमरीका उस सब क्षति के लिए, जो युद्ध की इस नई शैली से अमरीका के लोगों तथा अमरीकी जहाज़ों को होगी, जर्मन सरकार को "पूर्णतया उत्तरदायी" ठहरायेगा। परन्तु पनडुब्बियाँ जर्मनी के लिए अति महत्त्व की होने के कारण, वह उसे कैसे छोड़ सकता था! यदि तटस्थ राष्ट्रों को इनसे आपत्ति है तो वे उनसे बच कर रहें। समुद्रतल के दानव की विनाशकारी प्रवृत्तियाँ जारी रहीं। ७ मई, १९१५ को यह इस भयावह स्थिति में पहुँच गई कि ब्रिटिश पताका फहराता, अन्ध महासागर के पार जाने वाला एक पोत 'लुसिटेनिया'—जर्मन पनडुब्बी के विनाशकारी अस्त्र से डुबा दिया गया। ग्यारह सौ प्राणी मारे गये। इतना बड़ा नाश; निर्दोष प्राणियों का जिनमें एक सौ चार अमरीका के थे, सोच-समझ कर की गई हत्या से, चारों ओर रोष की लहर फैल गयी।

तीन दिन पीछे उन लोगों के एक समूह से जो तभी अमरीका के नागरिक बने थे, एक भाषण में राष्ट्रपति ने कहा—"ऐसा होना है कि कोई

व्यक्ति लड़ना, अपने गौरव के लिए उचित नहीं समझता। ऐसा भी होता है कि कोई राष्ट्र इतना सत्य पर होता है कि वह अपनी सत्य धारणा दूसरों को बलात् समझाने की आवश्यकता नहीं अनुभव करता।" उनका भाषण दूर-पास खूब पढ़ा गया और "लड़ना गौरव के लिए उचित नहीं" वाक्यांश की नीति का अनेकों ने, जिन्हें न इसकी समझ थी और न सहानुभूति, तिरस्कार किया। दूसरे भी थे जो विलसन के अदम्य उत्साह से प्रभावित हुए। उनका विश्वास था कि वह शासन की तटस्थता की नीति की रक्षा करेगा और साथ ही, उस क्षति का जो जर्मनी की अविवेकपूर्ण युद्ध-नीति द्वारा अमरीकियों को उठानी पड़ी थी, बदला लेगा। अन्ध महासागर से शान्त महासागर तक अमरीका एक विवाद में उलझ गया और उसके घटने के कोई लक्षण नहीं दिखाई दे रहे थे।

इस उत्पात के मध्य विलसन अकेले खड़े थे। उनका विश्वास था कि वे सत्य पर थे और यह भी कि वे बहुमत का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। परन्तु, जो बात उनके मन में पूर्ण स्पष्ट थी, उसे दूसरों को समझाना कठिन हो रहा था। हो सकता है, राष्ट्रपति के कोई मित्र न हों। जिस एकान्त भावना का वर्णन उन्होंने लिंकन के लिए किया था, वही उन पर छाई हुई थी। उनके अपने परिवार ने इसे विशेष रूप से अनुभव किया। जैसा उन्होंने कुछ विनोद में और कुछ गम्भीर भाव से कहा :

"मैं राजकुमार हल की तरह हूँ। हेनरी पंचम बन जाने के पश्चात् यद्यपि उसका अनुराग फ़ाल्स्टाफ और उसके निर्लज्ज साथियों के प्रति बना रहा, तो भी वह उनके कौतुकों में साथ नहीं दे सकता था। उसने एक नया, गम्भीर कर्त्तव्य ले लिया था और वह उसे निभाना चाहता था।"

यद्यपि अन्त तक अमरीकी तटस्थता निभाने की उनकी इच्छा रही होगी, परन्तु दबकर आत्मसमर्पण, वुड्रो विलसन के स्वभाव में नहीं था। 'लुसिटेनिया' को डुबो देने पर, जर्मनी को भेजे उसके पत्र का भाव इतना तीखा था कि ब्रायन ने, जो सदैव शान्ति का समर्थक था, सेक्रेट्री ऑफ़ स्टेट के पद से त्याग-पत्र दे दिया। वह ऐसी स्थिति को बढ़ावा नहीं देना चाहता था जो अन्ततः युद्ध को अनिवार्य करती जान पड़ती थी।

कर्नल हाउस पुनः १९१५ में यूरोप गया। उसका उद्देश्य था कि वह वहाँ की गतिविधियों का निकट से निरीक्षण करके युद्ध में रत राष्ट्रों के सम्बन्ध में सामर्थ्यानुसार अमरीकी भावना स्पष्ट कर सके। जर्मनी में उसे धमकियाँ सुनने को मिलीं कि यदि अमरीका अपनी तटस्थता की नीति से तनिक भी विचलित हुआ तो वहाँ के अनुमानतः ५ लाख जर्मन-अमेरिकियों का दल, आइरिश लोगों के साथ मिलकर वहाँ क्रान्ति कर देगा। इंग्लैण्ड में हाउस ने लार्ड ग्रे के साथ युद्ध के परिणामों पर विचार-विमर्श किया। इस निर्दयतापूर्वक वध का परिणाम क्या कुछ भला हो सकता है? लार्ड ग्रे ने कहा था कि शान्ति हो जायेगी, जो फिर भंग नहीं होगी। उन्होंने राष्ट्रपति विल्सन के विचारों पर बात-चीत की। चालू युद्ध की अपेक्षा भविष्य की निश्चित शान्ति, विल्सन के मन में कहीं अधिक महत्त्व रखती थी। उपयुक्त समय आने पर अमरीका को मध्यस्थता के लिए स्वतन्त्र रहना होगा। इसी कारण अमरीका तटस्थ था।

यूरोप के राजनीतिज्ञों में लार्ड ग्रे पहला था जिसने इस स्थिति के महत्त्व को अनुभव ही नहीं किया वरन् उसका स्वागत किया। वह जानता था कि अन्ततः जब कभी भी वह प्रत्याशित अवसर आयेगा तो केवल अमरीका ही शान्ति-स्थापना में सहायक होने के निमित्त उत्तेजना और पक्षपात रहित रह सकता है।

परन्तु अपना यह नीति, विल्सन अपने देशवासियों को सरलता से नहीं समझा सके। अक्तूबर में अमरीकी क्रान्ति की पुत्रियों को भाषण देते हुए उन्होंने पुनः इसका यत्न किया। "हम आपत्ति से बचकर चलने का यत्न नहीं कर रहे हैं; हम तो उन नींवों को, जिन पर शान्ति का पुनर्निर्माण हो सकता है, सुरक्षित रखने की चेष्टा कर रहे हैं।"

एक मास पश्चात्, न्यूयार्क की मैनहैट्टन क्लब में भाषण करते हुए उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा की नीति के पक्ष में अपनी पहली घोषणा की। जो कुछ उन्होंने कहा उसमें कोई नाटकीय ढंग नहीं था। अपने जीवन के निर्णयात्मक क्षणों में, जब उन्हें कोई विशेष महत्त्व की बात अपने श्रोताओं को बतानी होती थी तो उस विषय के भावात्मक तत्त्व की अपेक्षा वस्तु-स्थिति

पर वह अधिक बल देता था। पूर्व में उसके वचनों का हार्दिक स्वागत हुआ। इस प्रकार यूरोप की ओर से अकस्मात् अमरीका पर आक्रमण होने की स्थिति में वह अकेला नहीं रहेगा। परन्तु मिसिसिपी के पश्चिम में लोग इससे प्रसन्न नहीं थे। अमरीका सुरक्षित था। युद्धक्षेत्र से कितने सहस्र मील दूर था।

तीव्र मतभेद केन्द्रित होकर कार्य करने में संकट उपस्थित करता था। राष्ट्रपति ने मध्य-पश्चिम की ओर प्रयाण किया—

"······अपने साथी देशवासियों को यह बताना है कि नई परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाने के कारण अब यह अत्यन्त आवश्यक हो गया है कि देश को युद्ध के लिए नहीं बल्कि उपयुक्त राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए तैयार हो जाना चाहिये।"

२७ जनवरी, १९१६ को न्यूयार्क के एक भाषण में विल्सन ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि उनका मत बदल गया है। उन्होंने कहा—

"शायद जब आपको पता चला; मैं कह सकता हूँ कि आप को पहले ही मालूम हो गया था कि मैं तैयारी के विषय में आप को बताऊँगा। चौदह महीने पूर्व संसद् (काँग्रेस) में दिया गया मेरा भाषण आपको स्मरण हो आया होगा। तब मैंने सैनिक तैयारी के प्रश्न को अति आवश्यक नहीं माना था। परन्तु उस समय को एक वर्ष से ऊपर हो गया है और चौदह महीनों में यदि मैं स्थिति को नहीं समझ पाया हूँ, तो यह मेरे लिए लज्जा की बात होगी। जिस क्षण, संसार की सब परिस्थितियों में परिवर्तन हो जाने के साथ मैं अपना मन नहीं बदल सकूँगा, तो मैं पिछड़ जाऊँगा।"

पश्चिम की यात्रा में उन्होंने अपनी स्थिति की कठिनाइयाँ बताईं—

"आपने मुझ पर यह दोहरा दायित्व डाल दिया है : "राष्ट्रपति महोदय, इस युद्ध से अलग रखने के लिए हम तुम पर भरोसा करते हैं, परन्तु राष्ट्रपति महोदय ! हम इसके लिए आश्वस्त समझते हैं कि तुम राष्ट्र के मान को बट्टा नहीं लगने दोगे।"······"शान्ति का मूल्य चुकाना बहुत महँगा बैठता है और वह मूल्य एक शब्द में बताया जा सकता है। आप स्वाभिमान का मूल्य नहीं चुका सकते······मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि

यह बात सच है कि किसी देश के लोग, किसी दूसरे देश के लोगों के साथ युद्ध नहीं ठानते युद्ध तो शासन, एक दूसरे से करते हैं।"

विल्सन के मन में सदैव देश के लोग रहते थे। वे जानते थे कि इसी देश के लोग नहीं, बल्कि सब देशों के लोग शान्ति से प्रेम रखते हैं। उन्होंने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा कि जब तक पूर्णतया असन्दिग्ध रूप से समग्र राष्ट्र युद्ध-पक्ष में संगठित नहीं हो जाता, अमरीकी सरकार अपनी तटस्थता की नीति बनाये रखेगी। प्रजातन्त्र के अर्थ हैं कि वहाँ के लोग शासक हैं। निरंकुश शासन का भाव स्पष्टतया और दृढ़तापूर्वक, कैसर के साथ हुई एक भेंट में कर्नल हाउस के सामने आ गया था। विल्हैम ने स्पष्ट कह दिया था, "मैं और मेरा चचेरा भाई जार्ज और निकोलस समय आने पर शान्ति स्थापित कर लेंगे।" जनता और सम्बन्धित राष्ट्रों का इन विशिष्ट बातों से क्या नाता ? उनके सर्व बुद्धिमान शासक निर्णय कर लेंगे और जीत का माल आपस में बाँट लेंगे।

मार्च में एक जर्मन पनडुब्बी ने एक और जहाज़, 'ससैक्स' डुबो दिया। अमरीकी मत में परिवर्तन अधिक तीखा हो चला और पुकार भी तेज़।

पूर्व के लोगों ने पुनः माँग की, "राष्ट्रपति अब क्या करेंगे ? कब तक हमें यह अपमान सहने होंगे ?"

पश्चिम के लोग चिल्ला पड़े "युद्ध नहीं होगा।" राष्ट्रपति ने जर्मनी को चेतावनी देते हुए लिख भेजा कि यदि यह निर्दय पनडुब्बी युद्ध मानवता की मर्यादा में न लाया गया तो अमरीका दोनों देशों के बीच राजनीतिक सम्बन्ध विच्छेद कर देगा। वे शान्ति के लिए उग्र रूप से संघर्ष कर रहे थे, स्थायी शान्ति के लिए और उस शान्ति के लिए जो स्वेच्छाचारी सरकारों द्वारा न प्राप्त की गई हो बल्कि जनता की अपनी इच्छा और आदेश के बल पर की गई हो।

वे सिद्धान्त जिन पर अमरीका एक राष्ट्र के रूप में बँधा था, सर्व अमरीकी संघ के लिए आधार के रूप में पहले ही सुझाये जा चुके थे। सब राष्ट्रों का एक संघ बनाने के उद्देश्य से यही आदर्श क्यों न सामने रख लिया जाये ? शान्ति स्थापनार्थ संघ की बैठक में, २७ मई को विल्सन ने खुले

तौर पर घोषित कर दिया, "हम भले ही चाहें अथवा नहीं, हम विश्व के जीवन में भागीदार हैं।" अमरीका की विदेश नीति के मार्ग-दर्शक के रूप में, अमरीका के अलग-थलग रहने का ऐतिहासिक महत्त्व, घटती पर जान पड़ रहा था। विल्सन ने स्पष्ट कह दिया—

"जब विश्व के महान् राष्ट्र, सर्व-हित-साधन के मूलाधार सम्बन्धी किसी प्रकार का समझौता कर लेंगे और यदि कोई एक राष्ट्र अथवा राष्ट्रों का समूह उन मौलिक बातों में विक्षेप करेगा तो अन्य सब एक साथ मिल-कर कार्य करने का कोई व्यवहार्य ढँग निकाल लेंगे, तब ही हम अनुभव कर सकते हैं कि अन्ततः सभ्यता अपना अस्तित्व सिद्ध कर रही है और निश्चित रूप से स्थापित हो गई है। यह स्पष्ट है कि भविष्य में, राष्ट्रों पर भी प्रतिष्ठा की वही श्रेष्ठ संहिता लागू होगी, जो हम व्यक्तियों के व्यवहार में बरतते हैं।"

राष्ट्रपति के भाषण मे जिन तीन बातों पर बल दिया गया वे थीं—

१. प्रत्येक राष्ट्र के लोगों को अधिकार है कि वे जैसी भी प्रभुसत्ता के आधीन रहना, अपने लिए चाहें, चुन लें।

२. संसार के छोटे राज्यों का यह अधिकार है कि उनकी प्रभुसत्ता और राष्ट्रीय मर्यादा को वही आदर प्राप्त हो जिसकी, महान् और शक्ति-शाली राष्ट्र अपेक्षा और माँग करते हैं।

३. विश्व का यह अधिकार है कि उसकी शान्ति किसी भी ऐसे प्रत्येक विघ्न से मुक्त रहे जिसका मूल, राष्ट्रों और उनके लोगों के अधिकारों के अनादर और आक्रमण में हो।

इस सब में अमरीका के योग के लिए :—

जब मैं कहता हूँ कि इन उद्देश्यों की पूर्ति और उनके उल्लंघन से सुरक्षित रखने के निमित्त निर्मित किसी भी व्यवहार्य राष्ट्रीय संगठन में भागीदार बनने को अमरीका सहमत है तो मेरा विश्वास है कि मैं अमरीका के लोगों की इच्छा और उनके मन की बात कह रहा हूँ।

बहुत पहले, सन् १९०१ में ही विल्सन ने लिख दिया था कि अमरीका को अपनी तटस्थता का अन्त करना होगा तथा राजनीतिक सिद्धान्तवादी

भले ही इसके विरुद्ध कुछ भी कहें, अमरीका को विश्व के मामलों में सक्रिय भाग लेना पड़ेगा। उसी समय के आस-पास वाशिंगटन के विदाई भाषण की, जिस पर अलग रहने की नीति आधारित थी, उसने व्याख्या की थी। उसने बताया था कि, वाशिंगटन के कहने का अर्थ यह था—"मैं चाहता हूँ कि तुम नियन्त्रण में रहते हुए शान्ति से रहो और अच्छे बच्चे बने रहो जब तक कि तुम प्रौढ़ न हो जाओ; इतने बड़े कि विदेशों से प्रतियोगिता में होड़ बद सको, यहाँ तक कि विस्तृत संसार में जाने योग्य सामर्थ्य प्राप्त कर लो।" विल्सन के मतानुसार वह समय आ गया था।

यद्यपि राष्ट्रपति पद के अपने प्रथम कार्यकाल में, जब कि विश्व-युद्ध यूरोप का नाश कर रहा था, हर सम्भव उपाय से उन्होंने दूसरे राष्ट्रों के प्रति अमरीका के परम्परागत व्यवहार में यह परिवर्तन लाने की बात दोहराई; परन्तु तटस्थता की नीति के प्रति अपनी स्थिति में वे दृढ़ बने रहे। उनकी धारणा थी कि एक ऐसे युद्ध में, जिसके कारण और उद्देश्य कम-से-कम इस समय तो इतने उलझे हुए और अस्पष्ट हैं, सक्रिय योग देने की अपेक्षा भली प्रकार शान्ति स्थापित करने में सहायक होना अमरीका का धर्म है।

उन 'जेफ़रसोनियन' आदर्शों को, जिन पर विल्सन का सिद्धान्त आधारित था, पूर्णतया कार्यान्वित करने का उन्होंने यत्न किया। उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा :

"टॉमस जेफ़र्सन को सम्मान देने का मात्र उपाय यही है कि हम उनकी भावना को चरितार्थ करें तथा उनके जीवन का अनुसरण करें। उनका उदाहरण, मनुष्यों के अधिकारों के लिए पहले अमरीका में और फिर अमरीका के उदाहरण से विश्व में सर्वत्र सुगठित कार्य करने तथा संगठन का उदाहरण था।"

अमरीका और सारा विश्व घृणा और रक्तपात, जातीय पक्षपात तथा विद्वेष की दृष्टि से सोच रहा था। परन्तु विल्सन के विचार केवल पूर्ण शान्ति और मौलिक सम्बन्धों पर केन्द्रित थे। किसी भी मूल्य पर, वे कृत-संकल्प थे कि अमरीका को उनकी बात सुन कर उस पर विचार करना

चाहिये। किसी अन्य प्रसंग में उन्होने कहा था : "यदि चुपचाप बैठ कर कोई तुम्हारी बात नहीं सुनता तो उसके सिर पर सवार हो जाओ और उसे सुनाओ।" और अमरीका ने सुना।

१५ जून, १९१६ को जब डैमोक्रेटिक कन्वेन्शन सेंट लुई में हुई तो इसमें कोई सन्देह नहीं रह गया कि युद्ध के सम्बन्ध में अमरीकी लोगों का मत जानने में विल्सन का अनुमान ठीक ही था। जयघोष के साथ उनका पुनर्निर्वाचन हो गया। सेनेटर ऑली जेम्स ने अपने मुख्य भाषण में कह दिया—

"एक भी बच्चे को अनाथ किये बिना, किसी भी अमरीकी माता को विधवा बनाये बिना तथा बन्दूक की एक भी गोली चलाये अथवा रक्त की एक भी बूंद बहाये बिना, ऐसे घोर युद्धलिप्सु से जो सदैव युद्ध-क्षेत्र की बात सोचता हो, उन्होंने अमरीकी माँगें और अमरीकी अधिकार ऐंठ लिए।"

विदेशी मामलों को संभालने में विल्सन की नीति की एक तरह से यह पहली प्रशंसा थी। उन लम्बे तीखे पत्रों के क्रम का, जो राष्ट्रपति ने जुझारू राष्ट्रों को भेजे थे, यह पहला फल था। सेंट लुई का वह कोलाहल-पूर्ण उल्लास उस आदमी की याद दिला रहा था जिसका नाम अमरीका के इतिहास में अमिट हो गया है। विल्सन ने कहा था :

"जब मैं विलियम पेन के सम्बन्ध में सोचता हूँ, तो लगता है कि वह एक प्रकार का आध्यात्मिक योद्धा था, जिसके हाथों में मशाल थमा दी गई थी। उसे लेकर वह अपनी साहसपूर्ण यात्रा पर इसलिए चल पड़ा था कि न्याय और स्वतन्त्रता की ओर ले जानेवाला मार्ग दूसरे लोगों के लिए रोशन हो उठे।"

१९१६ के राष्ट्रपति पद के अभियान में विल्सन ने प्राय: बस इसी बात को बताने का यत्न किया कि उन्होंने अपने पहले शासन में क्या कुछ किया था, अपना वचन कहाँ तक निभाया था। उन्होंने बताया, "हमने प्रोग्रेसिव मंच को अपना लिया है।" डैमोक्रेटिक दल ने, विशेषकर पश्चिम में, यह नारा लगा कर खूब लाभ उठाया, "उसने हमें युद्ध से बचाये रखा।"

रिपब्लिकन लोग उभय संकट में पड़ गये थे। दो वर्षों तक युद्ध के प्रति उनकी धारणा के लिए उन्होंने उनकी भर्त्सना की थी। उन्होंने आग्रह किया था कि अमरीकी सरकार को यूरोप के मामले में हस्तक्षेप करना चाहिये। और यह कि राष्ट्र की प्रतिष्ठा और न्याय का गला घोंटे बिना, शासन की तटस्थता की नीति चलाना असम्भव था।

परन्तु, अब यह स्पष्ट था कि उनका यह विचार देश के अधिकांश लोगों की भावना से मेल नहीं खाता। लोग युद्ध करने के लिए तैयार नहीं थे। पूर्वी राज्यों को छोड़ अन्यत्र, लोग यूरोप की आग में सैनिक मध्यस्थता पसन्द नहीं करते थे।

चुनाव के दिन परिणाम धीरे-धीरे आये। पूर्वी मतदाताओं की गणना पहले हुई। रिपब्लिकन उम्मीदवार—चार्ल्स ई० ह्यूज़ बहुत आगे था। विल्सन ने समझा कि वे हार गये। उन्होंने भविष्य का ध्यान किया। यदि वे हार गये तो नये राष्ट्रपति के प्रतिष्ठित होने तक देश में उत्पात मचा रहेगा। इस सम्भावना से देश की रक्षा करने के लिए उन्होंने एक उपाय निकाला जिससे ह्यूज़ तत्काल बागडोर सम्भाल ले। परन्तु उनकी योजना अनावश्यक रही। जब सब मत आ गये तो विल्सन पुनः निर्वाचित हो गये थे। एन्ड्रयू जैक्सन के बाद वह पहला डैमोक्रेटिक राष्ट्रपति था जो अपना उत्तराधिकारी स्वयं बना।

जनता का ध्यान फिर यूरोप की ओर मुड़ा। स्थिति अधिकाधिक निराशापूर्ण होती जान पड़ी। अमरीका क्या करेगा? क्या विल्सन सभ्यता का नाश होने देगा? १८ दिसम्बर को एक वज्र गिरा। सब जुझारू राष्ट्रों से युद्ध करने के अपने-अपने कारणों का एक बयान विल्सन ने माँगा था। उत्तर आये। उनके अनुसार मित्र देशों और केन्द्रीय यूरोप के राष्ट्रों के उद्देश्यों में भारी अन्तर था। इसमें कोई सन्देह नहीं था कि यदि अमरीका ने शस्त्र सम्भाल लिए, तो युद्ध में वह किस पक्ष में होगा।

२२ जनवरी, १९१७ को राष्ट्रपति विल्सन ने एक भाषण दिया। उसमें सुझाव दिया था कि "सब राष्ट्र एक होकर राष्ट्रपति मनरो के सिद्धान्त को विश्व के सिद्धान्त के रूप में अपना लें।" "विजय-रहित शान्ति"

को उन्होंने यूरोप के युद्ध का वांछित उत्कर्ष बताया।

परन्तु "विजय-रहित शान्ति" न तो सराही गई और न ही समझी गई। पश्चिमी राज्यों में और पूर्व में भी अमरीका जर्मनी को पराजित देखना चाहता था। यह उभरता भाव और भी उग्र हो गया जब ३१ जनवरी को जर्मनी ने अबाध पनडुब्बी युद्ध की नीति घोषित कर दी। तीन दिनों के भीतर विल्सन ने जर्मनी से राजनीतिक सम्बन्ध विच्छेद कर दिये। चौथे दिन जर्मन राजदूत, काउन्ट वॉन बर्न्सटॉर्फ, अमरीका से चला गया। उसके बाद वाशिंगटन मौन था। देश भर में विरोध ज़ोर पकड़ता गया। अन्ततः युद्ध-भावना जाग उठी थी।

प्रतिष्ठापन के दिन विल्सन ने अपनी नीति स्पष्ट की। उत्सव में उपस्थित श्रोताओं के सामने उसने धीरता और गम्भीरतापूर्वक घोषणा की—

"हम सशस्त्र तटस्थता पर दृढ़ हैं, क्योंकि ऐसा लगता है कि जिस बात का हम आग्रह करते हैं और छोड़ नहीं सकते, उसे हम और किसी भी तरह समझा नहीं पा रहे हैं।"

परिच्छेद ७

युद्धकालीन राष्ट्रपति

वाशिंगटन से भी ऊपर कैपिटॉल हिल पर स्थित विशाल गुम्बदवाले भवन में ह्वाइट हाउस से एक सन्देशवाहक पहुँचा। राष्ट्रपति की ओर से एक आवश्यक सन्देश देना था। एक सम्मिलित बैठक में कांग्रेस के दोनों सदनों को वे भाषण देना चाहते थे।

वह क्या कहेगा, इस बात का अनुमान लगाया जा रहा था। यह २ अप्रैल, १९१७ की बात है। एक महीने तक खामोशी रही थी। ह्वाइट हाउस के पुरुष ने, अपने उद्घाटन भाषण में, मध्यस्थता की नीति दोहराई थी। क्या वह उसमें कोई परिवर्तन करने की बात कांग्रेस से कहने जा रहा था? अन्ततः अन्धमहासागर से शान्त महासागर तक अमरीकी राष्ट्र, जर्मनी के निर्दयी पनडुब्बी युद्ध पर रोष करने में एकमत था। तटस्थता अब और अधिक काम नहीं देगी। कांग्रेसमैन और सेनेटर लोग, हाउस ऑफ़ रिप्रीज़ैन्टेटिव्स के बड़े कमरे में एकत्र हो गये। गलियारों में इतनी भीड़ हो गई जितनी अमरीका के इतिहास में पहले कभी नहीं हुई थी। विदेशी राजनीतिज्ञ अपने औपचारिक वेश में; सर्वोच्च न्यायालय के जज काले चोगों में; पत्रों के सम्वाददाता; देश के मुख्य समाचार-पत्रों के सम्पादक; जल और थल की सेनाओं के मुख्य अधिकारी, सुनहरी लेस से टँके उनके वेप, आशा में बैठी भीड़ के रंग को चमक दे रहे थे। प्रजातन्त्र ने ऐसा चमकीला, सुस्पष्ट तथा नाटकीय गम्भीरता वाला दृश्य शायद ही कभी उपस्थित किया हो!

प्रतीक्षा का समय ख़त्म हुआ। एक लम्बा व्यक्ति, दुर्बल शरीर,

तपस्वी, विद्वान् की-सी आकृति, जिसे देखकर सहज भान होता था कि गम्भीर समस्याओं की चिन्ता में प्रायः रातें काली करता होगा, व्यासपीठ पर आ उपस्थित हुआ। हर्ष की लहर दौड़ गई। अध्यक्ष ने ज़ोर से अपनी मुँगरी की चोट लगाई और घोषणा की, "अमरीका का राष्ट्रपति !"

सन्नाटा छा गया और वुड्रो विल्सन ने, लिखित भाषण हाथ में लेकर, सुन्दर व्यवस्थित स्वर में पढ़ना आरम्भ किया—

"मैंने संसद् (कांग्रेस) का असाधारण अधिवेशन बुलाया है क्योंकि नीति के प्रश्न पर हमें गम्भीर, अत्यन्त गम्भीर निर्णय करना है और वह भी तत्काल…"

हाँ, तो कोई महत्त्वपूर्ण विषय सामने आने वाला था। तटस्थता, जिससे ऐसी बातें जुड़ी हुई थीं, जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती, वह त्याग दी जायेगी। अमरीकी स्वतंत्रता सिद्ध करके दिखानी होगी। उस वैभवपूर्ण स्थान पर जहाँ सुननेवालों की भीड़ साँस रोके बैठी थी, विश्व के इतिहास में एक मोड़ लिया जा रहा था। राष्ट्रपति ने आगे कहा—

"एक मार्ग है जो हम स्वीकार नही कर सकते और न ही करने में समर्थ हैं। हम अधीनता का मार्ग न चुनकर, अपने राष्ट्र के लोगों की उपेक्षा और उनके पुनीत अधिकारों का उल्लंघन नही सहन कर सकते। वे अन्याय जिनके विरोध को हम तैयार खड़े हैं, साधारण अन्याय नहीं हैं। वे मानव-जीवन की जड़ें खोद रहे हैं।

"तो फिर युद्ध ! हाँ युद्ध की प्रतिबन्ध-रहित घोषणा समस्त राष्ट्र को सैनिक बना देगी।

"मेरी सलाह है, कांग्रेस यह घोषित कर दे कि साम्राज्यवादी जर्मन सरकार का हाल का व्यवहार वास्तव में किसी प्रकार भी अमरीका की सरकार और उसके लोगों के विरुद्ध युद्ध से कम नहीं है। और यह कि युद्ध-रत होने की स्थिति, जिसके लिए हमें विवश किया गया है, औपचारिक रूप से स्वीकार कर ली जाये। और यह कि तत्काल देश की रक्षा-व्यवस्था अधिक पूर्ण करने के कदम ही न उठायें वरन् अपनी सम्पूर्ण शक्ति और समस्त साधन इस प्रकार लगायें कि जर्मन साम्राज्य की सरकार समझौता

करने और युद्ध का अन्त करने को बाध्य हो जाये···हमारी जर्मन लोगों से कोई लड़ाई नहीं है। उनके प्रति हमारे मन में सहानुभूति और मैत्री को छोड़ अन्य कोई भाव नहीं हैं। यह उनकी प्रेरणा नहीं थी जो उनकी सरकार ने युद्ध छेड़ा। यह उनकी पूर्व जानकारी अथवा अनुमति से नहीं हुआ......।

"शान्ति के लिए दृढ़ संगठन, बिना प्रजातन्त्र राष्ट्रों की सहकारिता के, अन्य किसी प्रकार भी नहीं निभ सकता। किसी निरंकुश सरकार पर भरोसा नहीं किया जा सकता कि वह अपना विश्वास बनाये रखेगी अथवा अपने समझौतों का पालन करेगी। वह तो मर्यादा का संगठन होना चाहिए और विचार में सहकारिता···

"विश्व में प्रजातन्त्र सुरक्षित कर देना होगा। इसकी शान्ति राजनीतिक स्वतन्त्रता के परीक्षित आधारों पर स्थापित करनी होगी।

"हमें कोई स्वार्थ नहीं साधने हैं। हमें न तो विजय और न ही किसी उपनिवेश की चाहना है। हम अपने लिए कोई क्षति-पूर्ति नहीं चाहते और न ही कोई भौतिक मुआवज़ा; उन बलिदानों के लिए जो हम स्वेच्छा से दे रहे हैं। हम तो मानव जाति के रक्षकों में से एक हैं। जब राष्ट्रों की स्वतन्त्रता और निष्ठा, उन अधिकारों को सामर्थ्य भर सुरक्षित कर देगी तो हम सन्तुष्ट हो जायेंगे।

"परन्तु शान्ति की अपेक्षा अधिकार अधिक मूल्यवान है तथा हम उन बातों के लिए लड़ेंगे जो हम सदैव अपने हृदयों के अन्तराल में लिए रहे हैं—प्रजातन्त्र के लिए तथा उनके लिए जो अपनी हुकूमतों में अपनी आवाज़ रखने के निमित्त सत्ता की अधीनता स्वीकार करते हैं; छोटे राष्ट्रों के अधिकारों और स्वतन्त्रता के लिए, अधिकार के सार्वलौकिक प्रभुत्व के लिए ऐसे स्वतन्त्र राष्ट्रों के संगठन के द्वारा जो सब राष्ट्रों को शान्ति तथा रक्षा दिलायेगा एवं अंततः स्वयं विश्व को स्वतन्त्र बना देगा।

"ऐसे कार्य के लिए हम, अपना जीवन, अपना ऐश्वर्य, वह सब कुछ जो हम हैं और जो कुछ भी हमारे पास है, उत्सर्ग कर सकते हैं। वे जो जानते हैं कि समय आ गया है जब अमरीका अपना रक्त तथा शक्ति; उन

सिद्धांतों के लिए जो उसके जन्म का कारण है एवं सुख और शान्ति जिसे उसने मूल्यवान समझा है, व्यय करने मे हर्ष का अनुभव करेगा।

"परमात्मा सहायता करें। वह इसके अतिरिक्त कुछ और नही कर सकता।

"हाँ, अमरीका के लोगों का अन्ततः विश्व-युद्ध में योग होगा, तटस्थ लोगों के रूप में नही, न ही दर्शकों की तरह जो जुझारू देशों मे से कभी एक को और कभी दूसरे को यदा-कदा पत्र लिख दिया करेगे बल्कि विश्व में प्रजातन्त्र को सुरक्षित करने के महान् आदर्शों के पोषक के रूप में।"

६ अप्रैल को कांग्रेस ने जर्मनी से युद्ध की घोषणा कर दी। साधारणतया यह आशा नही की जाती थी कि अमरीका यथार्थ लड़ाई में अधिक भाग लेगा। निस्सन्देह इस देश को तो मित्र राष्ट्रों के अबाध उपयोग के लिए रसद, धन तथा सामग्री का भण्डार बनना था।

परन्तु, विल्सन का अभिप्राय यह नही था। जब उसने युद्ध कह दिया तो उसका अभिप्राय था—युद्ध, जिसमे सेनाएँ सजाई जाएँ और समस्त संकट एवं पराक्रमवाले युद्ध लड़े जाये। वे अनथक शक्ति से, व्यवस्था तथा योजना में व्यस्त, एक शान्त देश को वृहत् सैनिक शिविर में परिवर्तित करके उद्योगों का जाल बिछाने को व्यग्र हो उठे थे। उनकी गति तथा अविश्वसनीय परिणाम लाने वाली कार्यक्षमता, युद्ध के इतिहास मे अतुलनीय है।

युद्ध की घोषणा के दूसरे दिन से ही उन्होंने अनिवार्य सैनिक भर्ती की आवश्यकता के लिए आग्रह आरम्भ कर दिया। उपयुक्त आयु प्रतिबन्ध तथा अन्य विवरणो पर विवाद होने के कारण कांग्रेस ने आवश्यक कानून, सिलेक्टिव सर्विस एक्ट १८ मई तक स्वीकार नही किया था। राष्ट्रपति ने, जो योजना वह चलाना चाहते थे, उसकी मर्यादा और रूप उस दिन स्पष्ट किया। उन्होंने बताया, "यह कोई सेना नही जिसे हम युद्ध के लिए सिखाये और सजाएँ, वह तो एक राष्ट्र है।"

१९१६ के आरम्भ में जब उन्होंने तैयारी की आवश्यकता के लिए शिक्षण अभियान चलाया तो विल्सन ने अपने भाषणों के मध्य, स्पेनिश-

अमरीकन युद्ध-सम्बन्धी एक छोटे से हास्यकर पद्य का उद्धरण सुनाया था—

बर्बर और अशिष्ट युद्ध है होता,
किसी राष्ट्र को उलट सर्वथा देता,
निर्मित है, कुछ सप्ताहों के रण से,
बात-चीत में वर्षों तक ले लेता।

इस युद्ध को यथासम्भव बातचीत के वर्षो से मुक्त रखना उनका आशय था।

प्रथम विचारणीय विषय था, सेना और वह यूरोपीय युद्ध में लडने की दशा में नहीं थी। गिनती में वह थोडी थी तथा सुगठित भी नही थी। सैनिक निर्णयों को प्रायः आधा दर्जन विभागों में से, जो प्रत्येक स्वतन्त्र रूप से कार्य करता था तथा कभी-कभी विरोध में भी, छनकर निकलना होता था। गृह-युद्ध मे जब तक ग्राण्ट ने सेना का सब कार्य नही सम्भाला था, यूनियन की सेनाओं की अक्षमता को स्मरण करके विल्सन ने शीघ्र ही देख लिया था कि सेना केवल एक अविभक्त अधिकार के अधीन ही भली प्रकार काम कर सकती थी। एक अधिकारी—जनरल पेर्शिग, जो रूजवेल्ट के समय में कप्तान के पद से उन्नति करके ब्रिगेडियर जनरल बना दिया गया था उसे पसन्द आया। १९१७ में जनरल पेर्शिग को व्यवस्थित सेना में मे पहली टुकड़ियाँ लेकर फ्रास भेज दिया गया।

इस प्रकार सैनिक शासन अनुभवी, सक्षम हाथों में सौपकर, सेनाएँ यथार्थ में यूरोप के मार्ग पर भेज तथा अनिवार्य सैनिक शिक्षण चालू करके विल्सन ने राष्ट्र को सामूहिक रूप से युद्ध में सक्रिय भाग लेने की दूसरी और कदाचित् अत्यन्त कठिन समस्या की ओर ध्यान दिया। महान् धर्म-युद्ध में देश को उपयोगी बनाने के लिए उद्योग कर्म को सरकार की ओर से किसी प्रकार का निर्देशन होना चाहिए। स्पर्धा को घटाकर उत्पादन को बढ़ाना होगा। यह बात सामने रखकर राष्ट्रीय रक्षा और कल्याण के निमित्त उद्योगों तथा अन्य साधनों में समन्वय स्थापित करने को काउन्सिल ऑफ़ नेशनल डिफ़ेन्स खड़ी की गई। कालान्तर में वार इण्डस्ट्रीज़ बोर्ड

बनाया गया जिसके नियन्त्रण अधिकार में प्रतिबन्ध कम करके उसे और भी विस्तृत कार्यभार सौंप दिया गया।

युद्धकालीन राष्ट्रपति के लिए, सब कार्य किसी भी प्रकार निर्विघ्नता-पूर्वक पूरे नहीं हो गये थे। जनता का अत्यन्त प्रबल जनमत उनकी पीठ पर हो सकता है—था भी। परन्तु काँग्रेस के भीतर व बाहर उनके राजनीतिक शत्रु जो थे। सितम्बर १९१७ में उनकी नीतियों का खुल कर विरोध होने लगा, १९ जनवरी को न्यूयॉर्क में एक लञ्च के बहाने इसकी व्यवस्था की गई थी। उस समय जो योजना बनाई गई उसके अनुसार काँग्रेस को एक वार-कैबिनेट की नियुक्ति करनी थी और राष्ट्रपति का युद्ध-संचालन कार्य यथार्थ में उसे अपने हाथ मे लेना था।

कुछ समय तक तो लगा कि यह कैबिनेट योजना चल जायेगी। फिर जनता का मत निश्चित रूप में सुनाई देने लगा। अन्ततः फरवरी में विलसन ने सेनेटर ओवरमैन द्वारा काँग्रेस में एक प्रस्ताव उपस्थित करा दिया। उस में वे सब अधिकार, जो तथाकथित 'वार कैबिनेट' के प्रस्तावक माँग रहे थे, तथा उन के अतिरिक्त अन्य अधिक, राष्ट्रपति को दिए जाने की व्यवस्था थी। 'ओवरमैन एक्ट' के नाम से यह प्रस्ताव, लम्बे विरोध के पश्चात् १३ के विरुद्ध ६३ के मत से २९ अप्रेल को सेनेट ने पारित कर दिया। शीघ्र ही सदन ने उसकी सम्पुष्टि कर दी। विलसन के शत्रु शान्त हो गये। सर्वोच्च कमान उनके हाथ में थी, जैसी इसके पूर्व किसी राष्ट्रपति को प्राप्त नहीं हुई थी।

नये कानून द्वारा जो अधिकार उन्हे प्राप्त हुआ, उनमे वे अपने कथनानुसार "इतिहास में सर्वाधिक सत्ताधिकारी" बन गये।

सामान के बँटवारे की व्यवस्था कर देना ही पर्याप्त नहीं था। यह भी आवश्यक था कि वह समुचित्र मात्रा में उपलब्ध किया जाना चाहिए। यूरोप की सर्वाधिक आवश्यकता थी, खाद्य सामग्री। युद्धक्षेत्र में सर्वत्र अन्न उपजाना रुक गया था। अमरीका में संभरण घटता जा रहा था। तदनुसार विलसन ने हर्बर्ट को बुलाया। बेल्जियम की सहायता के अवसर पर खाद्य स्थिति सम्भालने में अपनी कार्य-क्षमता के लिए उन्होंने अच्छी

ख्याति प्राप्त की थी। थोड़े महीनों में ही आधुनिक प्रचार की पूरी शक्ति से, उत्पादन की आवश्यकता पर बल दिया जाने लगा था। जनता के लिए राशन कर दिया गया था, जिस से कुछ भी नष्ट न किया जाये एवं जितना भी सम्भव हो अधिकाधिक मात्रा में खाद्य सामग्री यूरोप भेजी जाये।

अपनी पुस्तक एण्ड्रे तारद्यु 'फ्रांस और अमरीका' में विल्सन के नेतृत्व में राष्ट्र की युद्ध-सम्बन्धी गतिविधियों का सुचित्रित ढंग से वर्णन करता है—

"अपने जीवन-भर मुझे उस समय के अमरीका की स्मृति बनी रहेगी। देश-प्रेम से गतिवान एक विशाल युद्ध-व्यवस्था, उसकी आत्मा देदीप्यमान, दस करोड़ पुरुष, स्त्रियाँ तथा बच्चे जिनके शरीर का एक-एक तार माल लादने वाली बन्दरगाहों से जुड़ा हुआ था, धुआँ उगलती चिमनियाँ, रातों में तेज़ी से झपटती रेलगाड़ियाँ, युद्ध पर जा रहे सेनानियों को गर्म कॉफ़ी पिलाती स्त्रियाँ; आकाश गुँजाते राष्ट्रीय गीत, प्रत्येक गली के कोने पर, प्रत्येक नाट्यघर में, प्रत्येक गिर्जे में 'लिबर्टी लोन' के लिए हो रही सभाएँ तथा दीवारों पर चिपके अन्यान्य पोस्टर—"तुम इस में हो, तुम्हें इसे जीतना ही होगा।" परम संकट की स्थिति और उद्देश्य की न्यायपरायणता के कारण तैयारी में सप्ताह तथा महीने लग जाने पर अपार एवं अप्रत्याशित सिद्धि। एक दूसरे को समझने के लिए, सिद्धान्तों और उनके प्रयोगों में समन्वय के निमित्त अनुकूल बनना, समझाना और एक क्रम में बंधना आवश्यक था। इस समन्वय की विजय में ही सफलता थी। विश्रृंखलित उपायों का परिणाम होता—असफलता।"

जैसे-जैसे समय बीतता गया, समस्याएँ बढ़ती गईं। जब सम्भरण तथा उसके बटवारे का निश्चय हो गया तो उसके परिवहन (ढुलाई) का प्रश्न रह गया। दिसम्बर, १९१७ में विल्सन ने रेलमार्ग लेकर, उन्हें युद्ध-व्यवस्था के अधीन सरकार के अधिकार में दे दिया। परिवहन के मामले में एक दूसरे से होड बदने वालों में अब कोई अन्य स्पर्धा नहीं हो सकती थी। रेल कर्मचारियों तथा अन्य उद्योगों के श्रमिकों के लिए

एक बोर्ड की स्थापना कर दी गई। उत्पादन अबाध गति से बढ़े इस कारण श्रम और पूंजी के बीच जो भी कठिनाई खड़ी हो, उसे वह बोर्ड सुलझाये। 'युनाइटेड स्टेट्स शिपिंग बोर्ड' द्रुत गति से काम में जुट गया। रात-रात भर में जहाज़ों और मरम्मत के ठिकाने तैयार हो गये। नारा लगने लगा "एक सप्ताह में तीन जहाज़, अन्यथा कुछ नहीं!"

यह एकदम अपूर्व प्रमाण था। वर्षों विल्सन ने शान्ति बनाये रखने के लिए संघर्ष किया था। उन्हें ऐसा शान्तिवादी बताकर—जो पुरुषत्व की अपेक्षा कोई भी अपमान सह लेगा—उनकी हँसी उड़ाई गई थी। अब तो वे सब प्रकार से ऐसे 'युद्ध-राष्ट्रपति' हो गये थे जो मूल भाव में राष्ट्र के सर्वोच्च सेनाधिकारी (कमाण्डर-इन-चीफ़) थे। अन्य कोई भी उनसे बढ़ कर श्रम नहीं करता था।

दैनिक कार्यों का भार असह्य होने पर भी, राष्ट्रपति भाषण देने के लिए समय निकाल लेते थे। इनमें उनका एक लक्ष्य था जो तत्काल स्पष्ट नहीं हो रहा था। वे उन विचारों की व्याख्या करते थे, जो युद्ध लड़ने की अपेक्षा शान्ति-स्थापन से अधिक सीधा सम्बन्ध रखते थे। न्याय और स्थायी शान्ति—"विजय रहित शान्ति" के अपने मूल लक्ष्य को उन्होंने अपनी दृष्टि से ओझल नहीं होने दिया। धीमे स्वर में तथा नाटकीय न होने पर भी उनके शब्दों ने युद्ध को उस स्तर पर पहुँचा दिया जहाँ वह पहले कभी नहीं पहुँचा था। उसे सैनिक प्रवृत्ति के विरुद्ध, धर्म-युद्ध बना दिया। धीरे-धीरे वे एक नई आशा उत्पन्न कर रहे थे, मानव-जाति के व्यवहार में एक नया उद्देश्य ला रहे थे। यहाँ तक कि महीनों के बीतने के साथ वुड्रो विल्सन, एक युद्ध लड़ने वाले राष्ट्र के सर्वोच्च सेनाधिकारी ही नहीं रह गये, वरन् मानव-समाज के आध्यात्मिक नेता माने जाने लगे।

अमरीकी सेना में कुल ४,२७२,५२१ जवानों ने काम किया और इन में से १,९५०,५१३ समुद्र-पार भेजे गये थे। "इसके पूर्व इस प्रकार सेनाएँ ३००० मील, समुद्र-पार कभी नहीं भेजी गई थीं; जिनके पीछे उपयुक्त साज-सामान भी भेजा गया था। और वह भी आक्रमण के

असाधरण संकटों में से सुरक्षित ले जाया गया था। "यह एक विशाल कार्य था जो बड़ी चतुराई से निभाया गया। उसमें बेईमानी का कोई धब्बा नहीं लगने पाया। अरबों डालर के व्यय के सौदे में गबन का सन्देह तक नहीं हुआ। परन्तु इतनी कार्य-क्षमता प्राप्त होने पर भी, यह अनुभव किया गया कि जर्मनी के साथ, उसके मित्र राष्ट्रों से नाम मात्र को शान्ति सम्बन्ध रखते हुए, युद्ध लड़ना असाध्य होगा। फलतः, दिसम्बर १९१७ में अमरीका ने सरकारी तौर पर ऑस्ट्रिया-हंगरी से युद्ध की घोषणा कर दी।

जबकि युद्ध-सम्बन्धी जनश्रुतियों का ज़ोर था तो विलसन शान्ति तथा प्रजातन्त्र एवं विश्व की जातियों के अपना शासन सँभालने के अधिकार पर बातचीत करने का समय निकाल लेते थे। अगस्त १९१७ में शान्ति की शर्तों के विषय में, युद्ध-रत राष्ट्रों को पोप ने सम्बोधित किया था। विलसन ने असंदिग्ध शब्दों में कह दिया था कि मित्र राष्ट्रों की, जर्मन सरकार की अपेक्षा स्वयं जर्मन जनता से बातचीत करने की इच्छा थी। दिसम्बर में, कांग्रेस के नाम अपने सन्देश में, उन्होंने इस उद्देश्य को दोहराया था। उनके भाषणों की प्रतियाँ, जिनमें उन्होने इन आदर्शों की रूप-रेखा दी थी, शत्रु के प्रदेश में वायुयानों द्वारा डाली जा रही थीं और वे ठीक उनके पास, जिनके लिए वे थीं, पहुँच रही थीं। यह युद्ध-कौशल की विलक्षण पर धीरे प्रभाव करने वाली नीति जान पड़ती थी। परन्तु वे भाषण सचमुच जलती-लकड़ी पर पानी सिद्ध हुए। जिनके हाथों में वे भाषण पड़ गये, उन्होंने उस देश के प्रति जिससे कि वे लड़ रहे थे, शत्रुतापूर्ण भावना होते हुए भी, उन्हें पढ़ा, उन पर विचार किया तथा ध्यान दिया।

१९१७ में पोप ही अकेले नहीं थे, जो शांति के लिए अरण्य-रोदन कर रहे थे। मार्च में केरेन्सकी ने रूस में ज़ारशाही का तख्ता उलट दिया था। नये शासन को स्वीकार करते समय, एक और देश का, जिसने बीते युग के निरंकुश राज्यक्रम की बेड़ियाँ तोड़कर स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली थी; विलसन ने स्वागत किया। नवम्बर में ही, एक दूसरी क्रान्ति ने रूस की जड़ें हिला दीं और फलस्वरूप बोलशेविकों की जीत हुई। पहला काम जो उन्होंने

किया वह युद्ध-रत देशों से शान्ति स्थापित करने की प्रार्थना थी। इसके बाद ही उन्होंने वे गुप्त सन्धियाँ, जो पैट्रोग्रैड के सरकारी ग्रन्थ रक्षा-गृहों में थीं, प्रकाशित कर दीं। यह एक साहसपूर्ण कार्यवाही थी; कूटनीति के इतिहास में यह एक अनोखा उपक्रम था। राष्ट्रों के बीच गुप्त समझौते जितने संकटपूर्ण थे इससे वे उतने ही कठिन भी हो गये।

युद्ध के उद्देश्यों तथा अमरीका द्वारा प्रस्तावित शान्ति की शर्तों का, ८ जनवरी को पुनः राष्ट्रपति विल्सन ने काँग्रेस के सम्मिलित अधिवेशन के सामने विवेचन किया।

"उनके वर्तमान नेता विश्वास करें या नहीं, यह हमारी हार्दिक कामना है और हम आशा करते हैं कि कोई ऐसा मार्ग निकल आयेगा जिससे रूस के लोगों का, उनकी स्वतन्त्रता एवं व्यवस्थित शान्ति की आत्यन्तिक आशा पूरी करने में सहायक होने का, हमें गौरव प्राप्त हो......

"इस युद्ध में हमारी माँग, हमारी अपनी निराली नहीं है। हमारी माँग है कि यह संसार जीने योग्य तथा सुरक्षित बना दिया जाये। विशेष रूप से प्रत्येक शान्ति-प्रिय राष्ट्र, जो हमारी तरह अपने ढंग का जीवन बनाना तथा अपनी कार्यप्रणालियाँ निश्चित करना चाहता हो उसे विश्व के अन्य देशों द्वारा आश्वस्त कर दिया जाये कि बल एवं स्वार्थपूर्ण आक्रमण के विरुद्ध उसे न्याय और उचित व्यवहार प्राप्त होगा।"

विल्सन ने जो शर्तें पेश कीं, वे प्रसिद्ध चौदह सूत्र थे। उनमें व्यवस्था थी कि :

(१) शान्ति के खुले समझौते, जो खुल्लमखुल्ला तय होंगे। उसके बाद किसी प्रकार का भी कोई गुप्त अन्तर्राष्ट्रीय समझौता नहीं होगा वरन् राजनीतिक बात-चीत खुले दिल से जनता की जानकारी में हुआ करेगी।

(२) प्रादेशिक सागर की सीमा के पार, समुद्रों में जहाज़रानी के लिए युद्ध और शान्ति की स्थिति में, समान रूप से पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त होगी।

(३) शान्ति स्वीकार करने वाले तथा उसे स्थिर बनाने में सहयोग देने वाले सब राष्ट्रों के बीच यथासम्भव समस्त आर्थिक बन्धन दूर करने

होंगे एवं व्यापारिक व्यवहार में समानता स्थापित करनी होगी।

(४) इस बात का उपयुक्त आश्वासन देना और लेना होगा कि आन्तरिक सुरक्षा के हिसाब से राष्ट्रीय शस्त्रास्त्र घटाकर, न्यूनतम कर दिये जायेंगे।

(५) उपनिवेश सम्बन्धी सब प्रकार की माँगों का पूर्ण निष्पक्ष हिसाब, स्वतन्त्र रूप में खुले दिल से इस सिद्धान्त के आधार पर होगा कि प्रभुसत्ता के ऐसे सब प्रश्नों को निर्णय करने में सम्बन्धित लोगों के हितों का उतना ही ध्यान रखा जायेगा जितना उस सरकार के न्याय्य अधिकारों का—जो निश्चित किये जाने होंगे।

(६) समस्त रूसी क्षेत्र का परित्याग एवं रूस को प्रभावित करने वाले सब प्रश्नों का ऐसा निपटारा कि उनको राजनीतिक विकास और राष्ट्रीय नीति के स्वतन्त्र निश्चय में बाधा एवं उलझन रहित अवसर दिलाने में विश्व के दूसरे राष्ट्रों का सर्वोत्तम तथा मुक्त सहयोग प्राप्त हो।

(७) समस्त संसार इसमें सहमत होगा कि बेल्जियम प्रदेश का परित्याग कर उसे पुनः स्थापित कर दिया जाये तथा उसकी प्रभुसत्ता, जिसका अन्य सब स्वतन्त्र राष्ट्रों के साथ वह समान रूप मे उपभोग करता है, सीमित करने का यत्न न किया जाये।

(८) समस्त फ्रेंच प्रदेश मुक्त कर दिया जाये, आक्रान्त भागों को पुनः स्थापित कर दिया जाये तथा अल्सेस लौरेन के मामले में 'प्रशा' द्वारा १८७१ में फ्रांस के साथ जो अन्याय हुआ है, जिसने प्रायः पचास वर्ष तक संसार की शान्ति अस्थिर बनाये रखी है, उसका निराकरण किया जाये।

(९) राष्ट्रीयता के स्पष्ट, स्वीकार करने योग्य क्रम के अनुसार इटली की सीमाओं का पुनः सुधार कर दिया जाये।

(१०) आस्ट्रिया-हंगरी के लोगों को स्वायत्त विकास के मुक्त अवसर सुलभ कर दिये जायें।

(११) रूमानिया, सर्बिया तथा मॉन्टीनीग्रो से सब को हट जाना चाहिए और अधिकृत क्षेत्र उन्हें सौंप दिये जायें; सर्बिया को समुद्र में स्वतन्त्र एवं सुनिश्चित प्रवेश का मार्ग दिलाया जाये; और अन्यान्य बाल्कन

राज्यों के पारस्परिक सम्बन्ध, निष्ठा तथा राष्ट्रीयता के इतिहास-सिद्ध क्रम के अनुसार मित्रतापूर्ण परामर्श द्वारा स्थिर किये जायें; और इन बाल्कन राज्यों की राजनीतिक एवं आर्थिक स्वतन्त्रता तथा प्रादेशिक समग्रता के अन्तर्राष्ट्रीय आश्वासन स्थिर कर दिये जायें।

(१२) वर्तमान आॅटोमैन साम्राज्य के टर्किश भागों को सुनिश्चित प्रभुसत्ता का आश्वासन देना होगा, परन्तु दूसरी राष्ट्रीयताओं के, जो इस समय टर्की के अधिकार में हैं, जीवन की असंदिग्ध सुरक्षा तथा स्वायत्त विकास का पूर्ण बाधारहित अवसर सुनिश्चित कर देना चाहिये और डार्डनेल्स को अन्तर्राष्ट्रीय आश्वासनों के आधीन सब राष्ट्रों के व्यापार के लिए जहाज़ों का आवागमन स्थायी रूप से निःशुल्क कर देना चाहिये।

(१३) एक स्वतन्त्र पोलिश राज्य स्थापित कर दिया जाये। उसमें निर्विवाद रूप से पोलिश लोगों की बस्ती के प्रदेश सम्मिलित करने चाहियें।

(१४) विशेष शर्तों के अधीन छोटे-बड़े राज्यों को समान रूप से राजनीतिक स्वतन्त्रता एवं प्रादेशिक समग्रता के पारस्परिक आश्वासन दिलाने के उद्देश्य से, विशेष शर्तों के अधीन, राष्ट्रों की सामान्य संख्या बना देनी होगी।

यह था अमरीका द्वारा प्रस्तुत ठोस, शान्ति कार्यक्रम। चारों ओर इसे समर्थन मिला और उन उच्च आदर्शों को जिनके कारण राष्ट्र को युद्ध में कूदना पड़ा था, नवीन उत्साह मिला। विल्सन के भाषण के सम्बन्ध में न्यूयार्क के ट्रिब्यून ने कहा था—

"अमरीकी इतिहास के महत्त्वपूर्ण प्रमाण-पत्रों तथा विश्व-स्वातन्त्र्य के लिए स्थायी योगदान के रूप में यह सदा बना रहेगा······एक प्रकार से राष्ट्रपति ने घोर आपत्ति-काल में अमरीका का कर्तव्य स्थिर करके समस्त विश्व को दिखा दिया है।"

उसके बाद से विल्सन का आध्यात्मिक नेतृत्व सुनिश्चित हो गया था। उनके उच्च आदर्शवाद ने सारे राष्ट्र में उत्साह भर दिया। उन्होंने भविष्य की भव्य आशा चित्रित कर दी एवं उस जीवन का सपना दिखा दिया जो अन्ततः शान्ति और परस्पर विश्वास का गम्भीर रूप ले लेता। एक प्रकार

से उनके शब्द केवल उनके अपने देशवासियों से ही नहीं कहे गये थे। वे मित्र राष्ट्रों के नेताओं को उतनी ही चेतावनी और चुनौती के रूप में भी सुनाये गये थे। उनके कहने का सार यह था कि — यह है शान्ति का वह उपाय जो हम देख रहे हैं। ये हैं, वे शर्तें जिन्हें हम न्याय्य समझते हैं। केवल इस आधार पर तुम हमसे सहायता की आशा कर सकते हो। और मित्र राष्ट्रों ने उसका भाव एवं अभिप्राय समझा। विल्सन केवल अपने देश के ही नहीं, वरन् मानवता की उद्देश्य पूर्ति के भी नेता बन गये।

जब मध्य-कालीन चुनाव होने को थे, तो वर्ष के आरम्भ में उनकी युद्ध-नीतियों का जो विरोध हुआ था और जिन्होंने २९ अप्रैल को 'ओवरमैन एक्ट' का पारण आवश्यक कर दिया था, निश्चय उनकी स्मृति से प्रेरित होकर राष्ट्रपति ने अक्तूबर, १९१८ में होने वाले चुनाव के पूर्व अमरीका की जनता से डैमोक्रेटिक काँग्रेस को जिताने की अपील की ताकि उसके पीछे देश का मत विभक्त होने के कारण विदेशों से व्यवहार करने में कोई उलझन न हो। स्पेनिश-अमरीकी युद्ध में मेकिन्ले ने भी ऐसा ही उपाय किया था। वर्तमान स्थिति में अपील सफल नहीं रही। रिपब्लिकनों ने तुरन्त बात पकड़ ली तथा विल्सन पर आरोप लगाया गया कि वह ऐसी स्थिति से लाभ उठाने का यत्न कर रहा था जिसमें दलीय राजनीति को नहीं आने देना चाहिये। परिणामस्वरूप सेनेट एवं सदन, दोनों में रिपब्लिकनों को भारी लाभ रहा। वे इतने प्रबल हो गये कि अगले दो वर्षों में विल्सन ने अपने को अल्पमत दल का नेता पाया।

अपने देश में दलीय संघर्ष के कारण विदेशों में उनके प्रभाव को कोई क्षति नहीं हुई। जर्मन सरकार एवं जर्मन जनता के बीच पड़ी दरार को दृढ़ करने में उनका आग्रह सफल रहा। और फिर खाइयों में स्थान ग्रहण करने को उत्सुक और ताज़ादम, प्रायः दो लाख प्रतिमास के हिसाब से अमरीकी सिपाहियों की अनन्त सेना यूरोप में बराबर पहुँच रही थी। वे दुर्दान्त दृढ़ता के साथ आगे बढ़ रहे थे। जर्मनी के सेनानायकों के सामने निराशा का दृश्य था। कैसर ने पद त्याग दिया और लिबरल (उदार) दल

ने शासन सम्भाल लिया। अन्ततः जर्मन लोग अपने स्वर में चिल्ला पड़े--"हम १४ सूत्रों के अनुसार समझौता कर लेंगे।" मित्रराष्ट्रों ने शर्त्तें स्वीकार कर लीं।

११ नवम्बर, १९१८ को ११ बजे यूरोप के युद्धक्षेत्रों में अचानक एकदम शान्ति छा गई। चार वर्ष तक जिस कोलाहल को कोई विराम नहीं मिला था, शान्त कर दिया गया। युद्ध-विराम की घोषणा कर दी गई। शान्ति का समय आ गया था।

परिच्छेद ८

"समझौते के छल-छिद्र"

१४ दिसम्बर को प्रातः साढ़े दस बजे एक मास पूर्व युद्धविराम पर हस्ताक्षर करते समय जैसी उत्तेजनापूर्ण, आतुर, शोर मचाती भीड़ से पेरिस के बाज़ार भर गये थे, इस समय उसमें एक अन्तर था। यह कोई हर्षोन्माद नहीं था। झकोरे मारती, धक्का-मुक्की करती, चीख़ती-चिल्लाती भीड़ का ध्यान एक आदमी पर केन्द्रित था। पिचके गाल और लम्बे जबाड़े वाला, मुस्कान बिखराता लम्बा आदमी, अभिनन्दन स्वीकार करता, अपना रेशमी हैट हिलाता, स्वच्छन्द एवं चामत्कारिक अभिवादन स्वीकार करता हुआ बाज़ारों से गाड़ी में चला जा रहा था। वे अमरीका के राष्ट्रपति, वुड्रो विलसन थे, जिन्होंने युद्ध-विराम सम्भव कर दिया था। वे प्रथम अमरीकी राष्ट्रपति थे जो स्वदेश के पार यूरोप के लिए बाहर निकले थे, वे पेरिस में थे।

फ्रांस में विलसन के आगमन पर जी खोल कर उनका मनोहर स्वागत किया गया; परन्तु अपनी इस यात्रा की योजना उन्होंने लोक-प्रिय आदर पाने की भावना से प्रेरित होकर नहीं बनाई थी। वे एक नई परम्परा डाल रहे थे, इसका उनके सामने कोई महत्त्व नहीं था। पहल करने में तो वे पुराने हठी थे। परन्तु, जिस प्रकार की शर्तें यूरोप में की जाने वाली थीं, उनका अपार महत्त्व वे जानते थे। यद्यपि अमरीका को युद्ध में शत प्रति-शत कार्यक्षम बना देने के यत्न में वे लीन थे; परन्तु उनके विचारों पर अन्त में होने वाला समझौता छाया हुआ था। यदि समझौता न्यायोचित हो सका तो पिछले चार वर्षों के दुःख एवं सन्ताप का कुछ शमन हो

सकेगा और उसकी पुनरावृत्ति होने के संकट से रक्षा हो जायेगी।

दिसम्बर के आरम्भ में, उन्होंने काँग्रेस को सम्बोधित किया था। उन्होंने अपने श्रोताओं से कहा था कि जैसी समस्याओं पर शीघ्र ही पेरिस में विचार तथा निर्णय होने वाला था, उतने महत्त्व का अपने देश में कोई काम नहीं था। मित्र राष्ट्रों ने तथा जर्मनी ने भी युद्ध के उपरान्त उन आदर्शों को जो उन्होंने प्रस्तुत किये थे, अपनाना स्वीकार कर लिया था। उन्होंने यह भी कहा कि अब "उनके प्रति मेरा यह दायित्व है कि अपनी शक्ति भर इस बात का यत्न करूँ कि उन आदर्शों का कोई झूठा अथवा गलत मतलब न लगाया जाये और उन्हें पूरा करने में कोई कसर न उठा रखी जाये।" उस शान्ति सम्मेलन में स्वयं उपस्थित होने का उनका विचार था ताकि वे एक न्यायोचित एवं स्थायी शान्ति के अमरीकी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व कर सकें तथा उसके लिए आग्रह कर सकें। परन्तु काँग्रेस किसी प्रकार भी सन्तुष्ट नहीं हुई थी।

जब विलसन ने न्यूयॉर्क से यात्रा आरम्भ की, तो काग़ज़ की झंडियों से बैट्री सफ़ेद हो गई थी। बन्दरगाह में भौंपुओं की आवाज के मारे कानों पड़ा शब्द भी नहीं सुनाई देता था। ऊपर वायुयान छा गए थे और सब प्रकार के जहाजों की भीड़ लग गई थी। इन सबसे अधिक थी गवर्नर के टापू से दी गई इक्कीस तोपों की सलामी। यह पहला अवसर था जब कि विदेश जाते राष्ट्रपति के सम्मान में राष्ट्रपति की सलामी की तोपें चलाई गई थीं।

वह अपने पीछे विवाद की एक ज्वाला छोड़ गये थे। क्या राष्ट्रपति को देश के बाहर जाना चाहिए? क्या उसे शान्ति सम्मेलन में उपस्थित होना चाहिये? वह प्रचार और आदर जो इस उत्तेजनापूर्ण समय में अमरीकी राष्ट्र के नेता को मिलना अवश्यम्भावी था, क्या उसकी चाह में वह नहीं जा रहा था? इन प्रश्नों के उत्तर में सचिव लेन ने ओजपूर्ण शब्दों में कहा था—

वह व्यक्ति जो संसार के सर्वोत्तम प्रजातन्त्र का प्रतिनिधि है, यूरोप जा रहा है, इसलिए नहीं कि बैकुण्ठ का आनन्द लूटेगा, इसलिए भी नहीं

कि फ्रेंच समाज में बड़ाई मिलेगी। बल्कि वह तो अमरीकी आदर्शों के समर्थक के रूप में जा रहा है, क्योंकि वह चाहता है कि युद्ध में से कोई मतलब की बात निकले। वह सिद्धान्त जिसे हम प्यार करते है और वे प्रवृत्तियाँ जो संसार भर में फैलते देखने की हम आशा करते है, यदि वह पेरिस में जाकर इनका स्वयं समर्थन न करता तो वह कर्त्तव्यच्युत एवं प्रमादी होता तथा उसके सम्बन्ध में हमारी जो धारणाएँ हैं; झूठी पड़ जातीं।"

अन्धमहासागर-पार की यात्रा में थोड़े समय के लिए राष्ट्रपति को अमरीकी राजनीतिक मतभेदों के कलह से मुक्ति मिली, परन्तु यूरोप को अस्त-व्यस्त करनेवाली समस्याएँ उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। उस अपेक्षित कार्य के महत्त्व के सम्बन्ध में वह किसी धोखे में नही था। उसकी तैयारियों में अवकाशकालीन विहार का कोई आभास भी नहीं था। सेक्रेट्री ऑफ़ स्टेट—लेसिंग; जनरल टास्कर एच० ब्लिस; फ्राँस के भूतपूर्व राजदूत हेनरी व्हाइट तथा कर्नल हाउस; जो उन्होंने शान्ति सम्मेलन में अमरीका का प्रतिनिधित्व करने के लिए कमिश्नर नियुक्त किए थे, उनके साथ जा रहे थे। विशेषकर कर्नल हाउस की दूरदर्शिता के कारण, परामर्शदाताओं तथा विभिन्न प्रकार के विषयों के विशेषज्ञों की, जिनके विशेष ज्ञान एवं मत की अपेक्षा हो सकती थी, एक बड़ी संख्या भी साथ में थी।

सामने आने वाली समस्याओं से निपटने के लिए इतनी विशाल तैयारियाँ होने पर भी राष्ट्रपति का लक्ष्य सीधा-सा था। सब बातों से अधिक उनकी आस्था उस अमरीकी धारणा पर थी जिसकी कल्पना एवं चर्चा वे कर चुके थे, तथा उस विचार को वे अपनी सीमाओं के पार, संसार भर में पहुँचाना चाहते थे। उनके पास कोई नई योजना नही थी। उसके स्थान पर वे तो स्वतन्त्रता का संविधान, उसकी घोषणा, वर्जिनिया बिल ऑफ़ राइट्स, अमरीका की आत्मा ही यूरोप में लिए आ रहे थे। राष्ट्र संघ एवं आत्म-निर्णय—यही उनका कार्यक्रम था।

पेरिस में राष्ट्रपति विल्सन के आगमन पर उनका जो अभिनन्दन किया गया, वह स्वागत से कहीं अधिक उत्साहपूर्ण था एवं वह अमरीकी जनता के प्रतिनिधि के नाते ही नहीं था। वह तो उस राष्ट्र के प्रति, जिसने

मित्र राष्ट्रों की विजय में महत्त्वपूर्ण भाग लिया था, श्रद्धा का उपहार था। क्षण भर के लिए, संसार में एक नई आशा फैल गई, एक विश्वास हो गया कि राजनीतिज्ञों की माँगों तथा निजी हितों को ध्यान में रखते हुए, न्याय होने वाला था। युद्ध एवं निर्धनता, घृणा तथा उत्पीड़न से ऊबे हुए स्त्री-पुरुष उस आध्यात्मिक स्तर तक उठ गये थे, जो मानव जाति के इतिहास में कदाचित् ही हुआ हो। मानवता और परस्पर विश्वास के आधार पर विश्व के पुनर्निर्माण मे वे भाग लेने को तत्पर थे।

इस आशा की मार्ग-दर्शक शक्ति और प्रतिरूप थे, वुड्रो विलसन। यदि शान्ति सम्मेलन उसी समय कार्य आरम्भ कर सका होता, जब यह धार्मिक उत्साह अपने शिखर पर था, तो इतिहास बड़े यशस्वी रूप में लिखा गया होता। परन्तु, विलसन कार्यक्रम तो मित्र राष्ट्रों का नहीं था और न ही विल्सन की शान्ति उन्हें रुचिकर थी। विश्वयुद्ध, ऐसे परोपकारी अन्त के लिए थोड़े ही आरम्भ किया गया था, तथा इतने दुःखद काल के लिए घसीटा गया था। "विजय रहित शान्ति"—कैसी मूर्खता, एक आदर्शवादी का सपना।

विलसन के आगमन पर जिस उत्साह की लहर यूरोप में सहसा फैल गई थी, उसके कारण मित्र-राष्ट्रीय सरकारों के प्रतिनिधियों की शंका अनुचित नहीं थी। भीड़ के मनोविज्ञान को समझने में सधे हुए, वे भली-भाँति जानते थे कि समूह की भावनाएँ थोड़ी देर ही टिकती हैं तथा हर्षोन्मत्त लोगों का यह अनुमान कि मसीहा के रूप में विलसन एक नवयुग ला देगा, जिसमें अत्याचार का अन्त हो जायेगा एवं दरिद्रता मिट जायेगी, ठहर नहीं सकेगा। चतुर राजनीतिज्ञ नेता इस तिरस्कृत वृत्ति से परिचित थे कि समय पाकर लोग अपनी मनोदशा को प्राप्त हो जायेंगे। अतः उन्होंने शांति सम्मेलन स्थगित कराने के लिए जो कुछ बन सका, किया। इन यथार्थ-वादियों की भविष्यवाणी के अनुसार, जैसे-जैसे समय बीतता गया, जन समूह का मन बदलता गया। लोगों को अपने दुःख और क्षतियाँ स्मरण होती आईं। पुराने द्वेष फिर से उमड़ पड़े। वे राष्ट्र जिन्होंने युद्ध लड़ा और जीता था, उनका लाभांश ठगा नहीं जा सकता था।

फ्राँस, इंगलैण्ड, इटली आदि मित्र देशों में सर्वत्र विल्सन का उत्साह-पूर्ण स्वागत किया गया। राजकुल ने उन पर आदर-सत्कार की बौछार कर दी तथा सामान्य जन ने श्रद्धा एवं अपूर्व उल्लास से स्वागत में आँखें बिछा दीं। परन्तु एक स्थान पर जाना उन्होंने अस्वीकार कर दिया। फ्रांस का वह क्षेत्र, जो युद्ध से नष्ट-भ्रष्ट हो गया था, उसका निरीक्षण उन्होंने नहीं किया। उनके विचार से, क्रोध से उत्तेजित मन लेकर, शान्ति-स्थापना का महान् कार्य आरम्भ नहीं करना चाहिए।

क्रिसमस का बड़ा दिन उन्होंने फ्राँस में स्थित अमरीकी सैनिकों के साथ बिताया। निरीक्षण यात्रा उन्होंने जनरल पैशिंग के साथ की। उस बीच सैनिकों की साज-सज्जा की कार्य-क्षमता पर टिप्पणी करते हुए जनरल ने एक सैनिक के सामान में से तम्बू का मुड़ने-तुड़ने वाला डण्डा उठाया और उसे काम में लेने का ढंग समझाया। जब वह बता चुका तो विस्तृत सामान में, जहाँ सब वस्तुएँ यथा-स्थान रखी हुई थीं, वह डण्डा फेंक दिया।

श्रीमान् विल्सन ने जनरल से प्रश्न किया—"मेरे चले जाने के बाद क्या इन जवानों का और निरीक्षण नहीं होगा?"

"जी हाँ, हो सकता है।"

राष्ट्रपति ने फिर प्रश्न किया—"जनरल, एक बात और। मैं सेना का सर्वोच्च अधिकारी हूँ तथा तुम्हें आदेश देने का अधिकार रखता हूँ। क्या ऐसा नहीं है?"

"निश्चय ही, श्रीमान्।"

"तो जनरल, तम्बू का वह डण्डा जहाँ से उठाया था, वहीं रख दो।"

जनरल ने मुस्कराते हुए घुटनों के बल बैठकर तम्बू का डण्डा मोड़कर यथा-स्थान रख दिया। सामान वाले सिपाहियों में से कुछ ने बताया कि राष्ट्रपति ने उन्हें सैन मारी थी।

१८ जनवरी को शान्ति सम्मेलन की प्रथम पूरक बैठक हुई। अफसरों के चमकीले वेशों तथा पूर्वीय प्रतिनिधियों में से कुछ के आकर्षक पहनावों से यह अवसर शोभायमान हो उठा था। परन्तु यह बात तत्काल प्रत्यक्ष हो गई कि सम्पूर्ण सभा में कोई कार्य-सम्पादन नहीं हो सकेगा। विभिन्न

भाषाओं में कोलाहल करते हुए प्रतिनिधि अत्यधिक संख्या में थे। भाषाओं का अनुवाद करने में ही घण्टों नष्ट हो जायेंगे। स्पष्टतया कार्यप्रणाली अत्यन्त जटिल थी। अतः सम्मेलन समितियों में बाँट दिया गया। इनमें से मुख्य थी, "दी काउन्सिल ऑफ़ टैन" जिसमें फ्रांस, ब्रिटेन, अमरीका, इटली, जापान प्रत्येक के दो-दो प्रतिनिधि थे। एक विरोध उठा, जिसमें पत्रों ने योग दिया। यदि महान् शक्तियों के विवेचन में से छोटे राष्ट्रों को इस प्रकार निकाल दिया जायगा, तो उनकी बात कहाँ सुनी जा सकेगी? खुले इकरारनामों का क्या होगा? विल्सन ने स्पष्ट किया कि परामर्श के लिए बुलाये गये विशेषज्ञों की निरन्तर उपस्थिति के कारण छोटी बैठकों में भी भीड़ हो जाती थी। समाचार-पत्रों को उसने बताया कि खुले इकारनामों से उसका अभिप्राय यह नहीं था कि विचार-विनिमय एकान्त में नहीं होंगे, बल्कि यह था कि इन विचार-विमर्शों के परिणाम खुले में, स्पष्ट रूप से लोगों के लिए प्रकाशित कर दिये जाने चाहियें।

विजय-रहित शान्ति? मित्र राष्ट्रों को यह प्रलाप प्रतीत हुआ। उन्होंने युद्ध जीता था। बर्लिन पर चढ़ाई न करने की, उन्होंने उदारता दिखाई थी। अब लूट का माल, जीतने वालों का है। सम्मेलन में छोटी और बड़ी शक्तियों के भी प्रायः प्रत्येक प्रतिनिधि की, क्षति-पूर्ति, उपनिवेशों तथा प्रदेश की माँग थी।

व्यवस्थित होने के साथ ही "दी काउन्सिल ऑफ़ टैन", काम में जुट गई। बैठकों की अध्यक्षता तो क्लिमेन्शू ने की, परन्तु इन सब लम्बे सम्मेलनों में केन्द्रीय व्यक्ति था, वुड्रो विल्सन। कोई भी प्रश्न विचाराधीन हो, अमरीकी राष्ट्रपति की प्रतिक्रिया पर विशेष ध्यान दिया जाता था। विचार-विवेचन के समय, उस शान्त विद्वान् की मुखाकृति की चेष्टा का अध्ययन किया जाता था।

इस सम्मेलन में भाग लेने के उद्देश्य से विल्सन ने इतनी लम्बी यात्रा की थी। मामलों के महत्त्व घटाने के पक्ष में वह नहीं था। उसने घोषणा की कि शान्ति की स्थापना निष्पक्ष और चिरस्थायी आधारों पर होनी चाहिए। उसकी नींव का पत्थर राष्ट्रसंघ ही होगा। प्रतिनिधि बड़बड़ाये। शान्ति

की शर्तें तो पहले आने दो। संघ की बात पर विचार करने के लिए तो फिर पर्याप्त समय होगा। परन्तु इस विषय पर विलसन वज्र-सा दृढ़ था। शान्ति तो संघ में गर्भित थी। विवरण पीछे आना चाहिये। बहुत अच्छा, संघ को सन्धि का मुख्य भाग बना दो। इस सामले को संभालने वाली समिति का अध्यक्ष विलसन को नियुक्त कर दिया गया।

बहुत पहले, सोलहवीं शताब्दी में "स्वप्न दर्शकों" ने राष्ट्र संघ का समर्थन किया था। युद्ध के आरम्भ से इंग्लैण्ड में लार्ड ग्रे और अमरीका में भूतपूर्व राष्ट्रपति टैफ़्ट ने ऐसी संस्था की सिफ़ारिश की थी। परन्तु आशा से आगे बढ़कर ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय संघ को, जो युद्ध को असम्भव कर दे, स्वरूप देने का काम किसी ने नहीं किया था। परन्तु विलसन सिद्धान्तों से संतुष्ट नहीं था। ऐसे समय में, जब प्रत्येक सरकार अपने पड़ौसी को अप्रत्यक्ष शत्रु समझती थी, तो वह एक ऐसी योजना पर अग्रसर था जिसका लक्ष्य सब राष्ट्रों को एक भाईचारे में लाना था।

१४ फरवरी को शान्ति-सम्मेलन के सम्पूर्ण सत्र की एक बैठक में अमरीका के राष्ट्रपति ने समिति द्वारा रचित लीग कॉवेनेन्ट का प्रारूप उपस्थित किया। शान्त भाव से सुन कर उसे सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। संघ का तात्पर्य उसकी प्रस्तावना द्वारा इस प्रकार स्पष्ट कर दिया गया था—

"अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को बढावा देने और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा प्राप्ति के उद्देश्य से, नैतिक बन्धन स्वीकार करके युद्ध का आश्रय न लेना; राष्ट्रों के बीच खुले, न्याय्य एवं सम्मानित सम्बन्धों की व्यवस्था करना; अन्तर्राष्ट्रीय विधि के ज्ञान की दृढ़ स्थापना के आधार को सरकारों के बीच आचार का निश्चित नियम मानना तथा व्यवस्थित देशों के, एक दूसरे के साथ व्यवहार में, न्याय की रक्षा एवं सब सन्धि बन्धनों का विधिपूर्वक समादर होना; राष्ट्र संघ के इस विधान को इस संश्राव पर हस्ताक्षर करने वाली शक्तियाँ स्वीकार करती हैं।"

अगले दिन विलसन ने अपने देश के लिए समुद्र यात्रा कर दी। काँग्रेस सत्र की समाप्ति के कारण विधेयकों पर उनके हस्ताक्षर अपेक्षित

थे तथा गृहनीति के मामलों में उनकी उपस्थिति आवश्यक थी। यूरोप में बहुत काम हो गया था। सम्मेलन ने संघ संश्राव स्वीकार कर लिया था। वह दुनिया जिसका जेफ़र्सन ने सपना देखा होगा, निर्माण के क्रम में जान पड़ती थी। मेज़िनी के आदर्श भौतिक रूप धारण कर रहे थे।

फ्रांस को लौटने के पूर्व, महीने भर में जो उन्होंने अमरीका में बिताया उन्हें पता चल गया था कि पेरिस की कार्यवाही के प्रति ही नहीं, उससे भी अधिक, संघ में अमरीकी सहयोग के लिए विरोध की गुप्त भावना बन रही थी। सेनेट की वृत्ति अमैत्री की थी। सक्रिय विरोध की चर्चा थी। यूरोप की अपनी दूसरी यात्रा पर चलने के पूर्व विल्सन ने न्यूयार्क में एक भाषण दिया। संघ का विरोध करने वालों को उसने ललकारा। उसने रूखेपन से स्पष्ट कहा—

"जब वह सन्धि आपके सामने आयेगी तो इस ओर के महानुभाव देखेंगे, यही नहीं कि संश्राव उसमें है बल्कि सन्धि के इतने सूत्र संश्राव से बंधे हैं कि सम्पूर्ण मर्मस्थल नष्ट किये बिना संश्राव का संधि से विच्छेद किया ही नहीं जा सकता।"

पेरिस में पुन: "काउन्सिल ऑफ़ टैन" के साथ विल्सन काम में जुट गया। जब काउन्सिल, कार्यक्षमता की दृष्टि से अत्यन्त जटिल प्रतीत होती तो कभी-कभी वह "चार बड़ो" में से एक होता। विल्सन, लॉयड जॉर्ज, क्लीमेन्शू एवं आर्लैंडो के हाथों में सभ्य जगत् का भाग्य था—सीमाओं का पुर्ननिरूपण, नई सरकारों की स्थापना, आर्थिक सम्बन्धों को फिर से क्रमबद्ध करना।

एक-दूसरे के प्रति उनकी वृत्तियों में कोई वीरता की हुंकार नहीं थी। अपर्याप्त गरम भवन में, गर्म बना रहने को विल्सन इधर-उधर चलता रहता था; लॉयड जॉर्ज एक कमरे से यह कहते हुए तेज़ी से बाहर निकल आया कि लुई फ़िलिप के समय से वहाँ की हवा ही नहीं बदली गई है। मिलनसार एवं प्रसन्नचित्त ऑर्लैण्डो किसी भी प्रकार की भावना के शीघ्र ही अनुकूल हो जाता था। बूढ़ा शेर क्लीमेन्शू धीमे स्वर वाला तथा शिष्ट. अपने साधारणतम विचारों पर लौह दृढ़ता से डटा हुआ था।

फ़र्श पर फैले एक बड़े मानचित्र पर खचित गहन सीमा-रेखाओं की सूक्ष्मदर्शी दृष्टि से छान-बीन करने के लिए ये प्रतापी प्रतिनिधि कभी-कभी हाथों और घुटनों के सहारे उस पर इधर-उधर रेंगते भी थे।

बड़े चार राष्ट्र शान्ति की शर्तें तैयार करेंगे। विल्सन का नारा था "विजय रहित शान्ति।" खुले इकरारनामे, न्याय, छोटे राष्ट्रों के अधिकार—ये सब माँगें मूल में सरल और क्रम से एक के बाद दूसरी-तर्कसंगत जान पड़ती थीं। परन्तु इतिहास के आदि से अब तक के चलन के अनुसार वे राजनीतिक कौशल के विपरीत थीं। विल्सन के कार्यक्रम का विरोध करने वाले तीनों में से प्रत्येक व्यक्ति को अपने लिए विशेष सुविधाएँ लेनी थीं। उनकी सफलता पर उन की अपनी ही नहीं, बल्कि उस सरकार की भी, जिसके वे प्रतिनिधि थे, प्रतिष्ठा निर्भर करती थी।

राष्ट्रपति को जल्दी ही पता चल गया कि उसकी कठिनाइयाँ बढ़ाने को, न्याय्य निर्णय के मार्ग में गुप्त संधियाँ बाधक थीं। एक प्रकार से, राष्ट्रों ने शान्ति होने के पूर्व ही युद्ध के पुरस्कारों की बाँट कर रखी थी।

वर्साई के स्थान पर, चार बड़ों ने, कुछ ही सप्ताहों के समय में विश्व के प्रायः प्रत्येक देश की, क्षति-पूर्ति से लेकर युद्ध-जनित आर्थिक समस्याओं का समाधान करने का यत्न किया। यह कार्य यूरोप को नया रूप देने से कुछ कम नहीं था। वैज्ञानिक तथा इतिहास से लेकर अर्थशास्त्र तक की प्रत्येक शाखा के विशेषज्ञ उनकी सेवा में थे। परन्तु उत्तरदायित्व एवं निर्णय उनके ही थे।

वर्साई की सन्धि तैयार करने में विल्सन तथा क्लीमेन्शू की प्रणालियों का संघर्ष मुख्य बाधा था। नवीन एवं प्राचीन राजनीति कौशल के अन्तर का वह संक्षिप्त रूप था। कठोर नियम संहिता जो बीते समय में काम आती थी वही भविष्य में लागू होनी चाहिये। उग्र मार्शल फ़ौच द्वारा समर्थित क्लीमेन्शू, जर्मन सरकार के विनाश से कम किसी बात से सन्तुष्ट नहीं था। जर्मनी, उसके प्रिय फ्राँस का, परम्परा से शत्रु था। जब तक जर्मनी के पास सेना तथा सैनिक सामान रहेगा, फ्रेंच सभ्यता को संकट

बना रहेगा।

विल्सन का "विजय रहित शान्ति" वाला सिद्धान्त, अमरीकी राज-नीतिज्ञ की जर्मन गण-राज्य का नाश रोकने की इच्छा, अत्यधिक क्षति-पूर्तियों का विरोध; बूढ़े, बुद्धिमान् एवं म्लान क्लीमेन्शू की समझ में नहीं बैठता था। क्लीमेन्शू का सिद्धान्त था, "शान्ति के गर्त हों, चाहे युद्ध के उत्पात, फ्राँस सर्वोपरि रहेगा।" इससे उसे हटाया नहीं जा सकता था। एक संघ, यदि तुम चाहते हो तो ज़रूर बनाओ। परन्तु हम सुरक्षा चाहते हैं तथा हमें पुराना ढँग सब प्रकार, सर्वाधिक सुरक्षित लगता है। यह विश्वास करते हुए कि जर्मनी की आर्थिक एवं सैनिक शक्ति नष्ट करने से ही सुरक्षा प्राप्त हो सकती है; समस्त शान्ति सम्मेलन की इच्छा के कारण चौदह सूत्रों को स्वीकार करते हुए, जर्मन उपनिवेशों का हस्तांतरण, जर्मन निःशस्त्रीकरण, विशाल क्षति-पूर्तियाँ तथा ऐसे इकरारनामे जिनसे जर्मन व्यापार का नाश सुनिश्चित हो जाये, फ्रेंच माँगें थीं। ऐड्रियाटिक के व्यापार पर अधिकार करने के उद्देश्य से इटली, फ्यूम माँगता था। जापान शानतुंग चाहता था।

अमरीका कुछ नहीं माँगता था, न तो प्रदेश, न क्षति-पूर्तियाँ और न ही किसी शत्रु को अशक्त बनाना।

इन व्यक्तियों के कठिन श्रम से अन्ततः जो संधि तैयार हुई, इसमें विल्सन जैसा चाहते थे, उसका अभाव था। जो कुछ इसमें था, उसके अधिकांश से वे असहमत थे। तथापि यह अपेक्षाकृत अधिक अच्छा, अधिक मानवीय, अधिक न्याय्य समझौता था, जो उनके अथक यत्नों के बिना सम्भव न होता।

संघर्ष, मतभेद, तीखा विवाद सब ही इस लम्बे काम के अंग थे। जब स्थिति गति अवरोध को प्राप्त होती जान पड़ी तो राष्ट्रपति ने, उन्हें वापिस अमरीका ले जाने के लिए 'जॉर्ज वाशिंगटन' पोत को तैयार रहने का आदेश दिया। ऑर्लैण्डो, वापिस लौटने के लिए सम्मेलन से अलग हो गया था; चीनी प्रतिनिधि एशिया के लिए चल चुके थे और फिर फ्राँस में नहीं दिखाई

दिये। शान्ति का मार्ग सचमुच उद्दण्डतापूर्ण था।

'लूसीटेनिया' के डूबने की बर्सी पर ७ मई को जर्मन प्रतिनिधि शान्ति-सन्धि की प्रति लेने आये। दृश्य गम्भीर था तथा नियन्त्रित, परन्तु पुराने शत्रुओं के आमने-सामने होने से विषाद-पूर्ण हो गया था। जर्मनों के "शान्ति सम्बन्धी विचार" विरोध में थे। तब २८ जून, १९१९ को वर्साई के हॉल ऑफ मिरर्स में शान्ति-सन्धि पर हस्ताक्षर हो गये। युद्ध समाप्त हो गया था।

परिच्छेद ९

"आदर्श रहते हैं; मनुष्य चले जाते हैं"

अमरीका लौटते समय विल्सन की यात्रा अवकाश की थी। राष्ट्रपति अपनी सामर्थ्य से कहीं अधिक काम करते रहे थे। यह अत्यन्त आवश्यक प्रतीत हो रहा था कि उन चिन्ताओं से मुक्त होकर, जो उन पर लदी थीं, वे कुछ दिन विश्राम करें। उनके निजी सचिव जोज़ेफ़ पी० ट्यूमल्टी ने, जो वाशिंगटन से अपने अध्यक्ष की गतिविधियों में साथ रहा था, उनके दैनिक कार्यक्रम की सूची देख कर चिन्ता व्यक्त की थी तथा स्वास्थ्य पर अधिक दबाव न पड़ने देने के लिए आग्रह कर भेजा था। विल्सन ने उत्तर दिया था—"मेरा शरीर ? क्यों, मैं तो पहले ही अपने उपनियमों पर जी रहा हूँ।"

संयुक्त राज्य से प्रायः ६ मास अनुपस्थित रहने के पश्चात् थके हुए राष्ट्रपति ८ जुलाई को न्यूयार्क पहुँचे। इस लम्बे समय में विभिन्न राजनीतिक दल चुप नहीं बैठे रहे थे। जब कि विदेश में बृहत् अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से उसकी रक्षा की जा रही थी, स्वदेश में सदा बने रहनेवाले दुःखद विवादों के लिए एक क्षेत्र तैयार हो गया। तो यह राष्ट्र-संघ क्या था, जिस के लिए राष्ट्रपति ६ महीने पहले घर से निकले थे। उसे स्थापित करने के लिए उन्होंने बहुत से उन सिद्धान्तों को जो उनके मूल कार्यक्रम का विशेषांश थे, बलि चढ़ा दिया था। शान्ति सम्मेलन की गुप्त बैठकें अब अपनी फ़ीस वसूल कर रही थीं। अमरीकी लोगों ने संघ का उद्देश्य नहीं समझा था; तथा जिस चीज़ को वे नहीं समझते थे, उस से वे डरते थे। मिथ्या वर्णन एवं प्रतिकूल प्रवाद ने उसे द्रोह का रूप दे दिया। बीच

में न पड़ने और उलझन में न डालने वाले सम्बन्धों की पुरानी नीतियों पर कुछ लोग दृढ़ थे। उन लोगों ने कह दिया कि अमरीका का संघ से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता। दूसरों का मत था कि किसी प्रकार का संघ तो अनिवार्य था, परन्तु ऐसा नहीं। अन्ततः एक छोटा सा दबंग एवं अत्यन्त वाचाल दल निकला, जिसने इसका विरोध किया, क्योंकि यह "विल्सन का संघ" था।

लौट आने के दो दिन पश्चात् राष्ट्रपति ने सन्धि सेनेट के सामने रखी। उसके समर्थित होने के सम्बन्ध में उनके मन में कुछ सन्देह था। उन्होंने कहा—"पुराने ढंग के विचारों में नयों की कलम लगाना सरल नहीं था तथा इस पैबन्द लगाने के फल—मुझे भय है—कुछ समय के लिए कड़वे हो सकते हैं······मंच तैयार है, भाग्य का निपटारा हो चुका है।"

इस सन्धि में, जो समर्थन के लिए अब सेनेट के सामने उपस्थित की गई थी, सन्धि का संश्राव उस से कुछ भिन्न था, जो विल्सन के पहली बार संयुक्त राज्य लौटने के पूर्व शान्ति-सम्मेलन में स्वीकार किया गया था। वे परिवर्तन, अमरीकी मत के लिए रियायतें थीं। ऐसा उन्होंने अनुभव किया था तथा वहाँ ठहरने के उस थोड़े समय में लोगों को यही कहते सुना था। तब लोगों को संशय था कि उन्हें कार्य करने की अपनी स्वतन्त्रता यूरोप के लिए बलिदान कर देने को बाध्य हो जाना पड़ेगा तथा विदेशी झगड़ों एवं युद्धों में उन्हें निरन्तर फँसना पड़ेगा। भूतपूर्व राष्ट्रपति टैफ़्ट संघ के उत्साही समर्थकों में से एक थे। उन्होंने राष्ट्रपति को समुद्री तार भेजा था। उसमें उन बातों की रूप-रेखा दी गई थी, जो उसके मतानुसार कोई इकरारनामा स्वीकार करने के पूर्व सेनेट देखना चाहेगा। इन बातों में, मनरो सिद्धान्त सम्बन्धी एक वक्तव्य मुख्य था। उसके अनुसार समझौते पर हस्ताक्षर करनेवालों को उस सिद्धान्त को मान्यता देनी होगी। ये संशोधन तुरन्त जोड़ दिये गये तथा संघ का संश्राव पुनः शान्ति सम्मेलन द्वारा स्वीकार कर लिया गया।

मास के अन्त तक सेनेट की विदेशी मामलों की समिति, शान्ति-सन्धि का निरीक्षण करने बैठ गई। १९ अगस्त को उस महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़

में कुछ बातों पर विचार-विमर्श के लिए, समिति राष्ट्रपति से मिली। विलसन सम्मेलन छोड़ कर चला आया, उसने समझा कि जाँच सन्धि की नहीं, उसकी अपनी हो रही थी। १० सितम्बर को जब विदेशी मामलों की समिति ने अपना विवरण उपस्थित किया तो समस्त देश के सामने यह वृत्ति स्पष्ट थी। विवरण में, मुख्य रूप से राष्ट्रपति, उसके शान्ति वार्ता चलाने के ढंग, सेनेट के प्रति उसके अनादर तथा उसके दोषों को एक 'सैन्य-दल' समझ कर, आक्षेप किया गया था। शान्ति सन्धि बिलकुल तुच्छ वस्तु थी। समिति ने स्वीकृति देने के लिए प्राय: चौलीस आरक्षणों एवं संशोधनों की माँग की। यह बात महत्त्व की थी कि माँगे गये परिवर्तन, अधिकांश में सन्धि के अपने दोषों की अपेक्षा उन विषयों से अधिक सम्बन्धित थे जो विशेष रूप से राष्ट्रपति के अधिकार के थे।

यह स्पष्ट था कि समर्थन, जिसकी विलसन को आशा थी, नहीं मिलने वाला था। राष्ट्र-संघ को अप्रमाणित सिद्धान्त बताया गया। उन्होंने विरोध में कहा कि यह तो बिलकुल इसके विपरीत है। संघ तो अमरीका के असली सिद्धान्तों पर आधारित था—वह आदर्श, जिस पर अमरीका का निर्माण हुआ था, वही नमूना अन्तत: यूरोप के सामने प्रस्तुत किया गया था कि वह भी इस के अनुसार अपना निर्माण कर ले। उन्होंने सोचा कि निश्चय ही अमरीकी लोग यह बात समझ नहीं पाये।

बहुत पहले, बाल्यकाल में उन्होंने एक उपकरण साध लिया था, जिसे वे बहुत ही अच्छी तरह काम में ले सकते थे। वाक्चातुर्य की प्रतिभा उनके पास थी तथा उनकी क्षमता में कोई कमी नहीं आई थी। अमरीका-भर को अपना संदेश देने को वे निकल पड़े। उनकी पत्नी एवं ह्वाइट हाउस का चिकित्सक, डाक्टर ग्रेसन, जो उनके निरन्तर श्रम से चिन्तित था, साथ में थे।

यह पश्चिमी यात्रा ऐसा कठिन शारीरिक श्रम था, जो बहुत कम आदमी सह सकते थे। वाशिंगटन से, कैलिफ़ोर्निया और फिर लौट कर कन्सास; बीस दिन में, तीस अथवा इससे भी अधिक भाषण राष्ट्रपति ने दिये। यह ऐसी परीक्षा थी जिसमें कदाचित् ही कोई बराबरी करे। कोई

आश्चर्य नहीं कि डाक्टर ग्रेसन, अपने ह्वाइट हाउस अधिकारी के इस दुष्कर कार्यक्रम को, बड़े उद्विग्न मन से, पूरा करते देखता था। उन्हें क्षण भर का भी अवकाश नहीं मिलता था। वे देश में इस पार से उस पार निरन्तर चलते रहते थे। अधिकांश में उन्हें उदासीनता मिलती थी, जो उनका उत्साह अवश्य ठण्डा कर देती होगी।

महान् सिद्धान्तों की सामर्थ्य में, अपनी उत्कट आस्था के बल पर, विल्सन अपनी शक्ति तथा दुर्बलता को तौलते थे। यदि लोग एक बार जान जायें कि राष्ट्र संघ, अमरीकी आदर्श का विस्तार करेगा, न कि उसे विदेशी प्रभावों के अधीन करेगा, तो वे समझते थे कि उनका सन्देश उत्साहपूर्वक स्वीकार करने का प्रश्न ही नहीं रह जाता। परन्तु लोग संश्राव के अधिकार और उस के क्षेत्र की स्पष्ट जानकारी न होने के कारण राष्ट्रीय तटस्थता का चिर-स्थापित सिद्धान्त छोड़ने को तैयार नहीं थे। विल्सन ने अपने पश्चिम के भाषणों में से एक में चर्चा की थी—

"वाशिंगटन की बातें कभी-कभी एकांगी रह जाती हैं। उस विचित्र नगर में, अमरीका की विशाल जनता के यथार्थ बोल, कभी-कभी शक्तिहीन तथा दूर पड़ जाते हैं। तुम्हें राजनीति सुनने को मिलती है। यहाँ तक कि तुम कामना करने लगते हो कि दोनों दल अहंकार की अपनी-अपनी हवा में खो जायें। मैंने चाहा कि बाहर निकल कर सरल अमरीकी बातें सुनूँ। ऐसी बातें सुनूँ जो मैं कहने का अभ्यस्त हूँ। केवल वैसी बातें जो मैं समझ सकता हूँ। मुझे केवल ऐसा वातावरण मिले जिस से मैं अपने फेफड़ों को भली प्रकार भर सकूँ। और तब प्रसंगवश कुछ दिशाओं में संकेत कर दूँ कि अमरीकी लोग विचार करने का ढंग अभी नहीं भूले हैं।"

केन्सास में उन्होंने अपने श्रोताओं से कहा था—

"पेरिस से मैं मानव इतिहास के महत्तम दस्तावेज़ों में से एक अपने साथ लेकर लौटा था। इसे महत्ता देने वाली बातों में से एक यह थी कि वह आद्योपान्त उन सिद्धान्तों से ओतप्रोत था जिनको अमरीका ने अपना जीवन समर्पण कर दिया है। समुद्र के उस पार काम की अत्यन्त सुखकर स्थितियों में से एक मैं तुम्हें शीघ्रता से बता दूं। मैंने देखा कि जिन्हें हम

अमरीकी सिद्धान्त कहते हैं, वे केवल यूरोप के महान् देशों के हृदय एवं मस्तिष्क में ही नहीं उतर गये हैं बल्कि उन महान् व्यक्तियों के मन में भी बैठ गये हैं जो उनका नेतृत्व कर रहे हैं। और जब ये सिद्धान्त इस सन्धि में लिखे गये थे तो वे सब की सहमति एवं दृढ़ विश्वास के आधार पर लिखे गये थे। तिस पर भी मेरे देशवासियो, यह सत्य है कि उस सन्धि में जो सिद्धान्त लिखे गये हैं, वे इससे पूर्व कभी किसी महान् अन्तर्राष्ट्रीय समझौते मे नहीं लिखे गये और उनका स्वाभाविक जन्म तथा विकास इस प्रिय देश में हुआ है जिसे हम ने अपना जीवन तथा अपनी सेवा अर्पण कर दी है।"

और एक अन्य अवसर पर—

"उस दिन मैंने सेनेट की विदेशी मामलों की समिति को स्मरण कराया था कि जो बातचीत मेरी उनसे हुई है, राष्ट्र संघ के सम्बन्ध में, मैंने पहली बार ही नहीं की है। जब पिछले मार्च में मैं अपने इस प्रिय देश में लौटा था तो ह्वाइट हाउस में मैंने विदेश सम्बन्धों की सेनेट कमेटी से इस पर बातचीत की थी। संश्राव की वाक्य-रचना में परिवर्तन करने के कुछ सुझाव उन्होंने दिये थे। वे सुझाव मैं वापिस पैरिस ले गया था तथा उनमें से प्रत्येक स्वीकार कर लिया गया था। मेरी समझ से यह पर्याप्त गारंटी है कि अपकार करने का कोई विचार नहीं था। सम्पूर्ण दस्तावेज़ उसी सरल, व्यावहारिक, स्पष्ट रूप में है। मेरे देशवासियो, यह शान्ति सुरक्षित करता है और यही अकेला मार्ग हैं जिसमे शान्ति सुरक्षित हो सकती है।"

ओमाहा में उन्होंने लोगों को सावधान किया था—

"···यह सन्धि हम फिर से नहीं लिख सकते। हमें इसे स्वीकार करना होगा अथवा त्याग देना होगा। सज्जनो, शेष समस्त विश्व ने भी तो इस पर हस्ताक्षर किये हैं। देखोगे कि दूसरी प्रकार की सन्धि तैयार करना बहुत कठिन है।"

पूर्व और मध्य पश्चिम की अपेक्षा प्रशान्त तट के लोगों ने उनकी बातें अधिक मित्र भाव से सुनीं तथा उन पर ध्यान दिया। स्पोकेन में उन्होंने आग्रह किया कि सन्धि को दलबन्दी अथवा व्यक्तिगत दृष्टि से बिल्कुल

अलग रक्खा जाये—

"अनेक लोगों ने मुझसे कहा है, 'मैं तो रिपब्लिकन नहीं हूँ, परन्तु राष्ट्र संघ के पक्ष में हूँ।' यह 'परन्तु' क्यों? मेरे देशवासियो, मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि इस सारे विचार-विवेचन में एक तत्त्व है जो इसमें नहीं होना चाहिये। यद्यपि मैं स्वयं कह रहा हूँ, इसमें व्यक्तिगत कटुता का तत्त्व है। कोई कल्पना करेगा कि राष्ट्र संघ का यह संभाव विल्सन नामक एक व्यक्ति ने पहली बार सोचा, सर्वप्रथम आविष्कार किया तथा पहले-पहल उसी ने लिखा था। काश, कि ऐसा होता! यदि मैंने ऐसा किया होता तो यह लिखित में लाना स्वीकार कर लेता कि मैंने ऐसा किया था और इससे अधिक कुछ नहीं। परन्तु मैंने तो ऐसा नहीं किया है। अपने सहस्रों देशवासियों के साथ, बीस वर्ष पूर्व, मुझे यह विचार मुख्यत: जनता के काम करने वाले रिपब्लिकन लोगों से मिला था। ...यदि मैं रिपब्लिकन होता तो मैं कह देता, "मैं रिपब्लिकन हूँ और इस कारण राष्ट्र संघ के पक्ष में हूँ।" इस समय तो मैं कहना चाहता हूँ कि इस उपस्थित वक्ता से राष्ट्र संघ न जोड़ा जाये। इसकी मूल कल्पना मैंने नहीं की थी। यह मेरी कारीगरी नहीं है। यह उन लोगों की आत्माओं तथा विचारों से उपजा है जो न्याय चाहते थे एवं पीढ़ियों के लिए शान्ति की कामना करते थे। इस से मेरा सम्बन्ध तो वैसा ही है जैसा कि प्रत्येक जन-सम्बन्धी प्रश्न के साथ होना चाहिये। यह सम्बन्ध तो वैसा है, जैसा एक व्यक्ति का अपने देश-वासियों के साथ होता है, जब वह उनके विचार एवं मूल भावना की व्याख्या करता है।

"मैं कल्पना कर सकता हूँ कि वाशिंगटन, हैमिल्टन, जेफ़र्सन तथा ऐडेम्सेज़ की पीढ़ी के पुरखाओं ने कितने विवेक से इस महान् शासन की नींव डाली थी। मैं इसकी भी कल्पना कर सकता हूँ कि विश्व पर अमरीकन भावना की विजय को अत्यन्त हर्ष तथा विस्मय से वे देख रहे हैं।"

यह थी विल्सन की युक्ति। वे देखना चाहते थे कि अमरीकी भावना ने जिस प्रकार अमरीकी राष्ट्र पर विजय पाई है, वैसे ही विश्व को भी वह जीत ले। वे चाहते थे कि वाशिंगटन तथा जेफ़र्सन के सिद्धान्तों को सार्व-

लौकिक मान्यता प्राप्त हो जाये। यही कारण था कि राष्ट्र संघ के यज्ञ में अपना अन्तिम रक्त बिन्दु होम देना चाहते थे।

उन्हें यह उत्तरोत्तर स्पष्ट होता जा रहा था कि विजय नहीं होने वाली थी, अभी नहीं। कारण कि उनके आदर्श में स्वतन्त्रता एवं प्रजातन्त्र के अमरीकी सिद्धान्त से अधिक, कहीं अधिक, कुछ था; इस में अञ्जील (न्यू टैस्टामेण्ट) द्वारा निर्धारित बन्धुत्व के सिद्धान्तों की सार्वभौम मान्यता उपलक्षित थी। उनके कार्य की विशालता उन्हें रोक न सकी। एक शुभ संघर्ष के लिए उन में धर्म-युद्ध करने वाले का उत्साह था। परन्तु उन्हें उदासीनता, उपेक्षा, अविश्वास धीरे-धीरे खाये जा रहे थे। उनके शरीर ने, जो कभी भी उस पर डाले गये भार को सहने योग्य नहीं था; उन्हें प्रायः धोखा दिया था; अब भी उन्हें बेकार कर दिया। उन्होंने प्रशान्त तट की ओर यात्रा की और वहाँ से लौटे। अपने चिकित्सक के सावधान करने पर भी वे अपना प्रत्येक वचन निभाते रहे यहाँ तक कि वह विचिता पहुँच गये और वहाँ वे बिस्तरे से उठने योग्य नहीं रहे। यात्रा स्थगित कर दी गई और राष्ट्रपति वाशिंगटन लौट आये।

सहानुभूति की एक लहर उठी, परन्तु उसे विद्रोही जन-प्रवाद ने रोक दिया तथा गत तीन सप्ताहों में उनके भाषणों की प्रतिध्वनि को भी दबा दिया। युद्ध के मध्य में उनके गिर पड़ने से व्यक्तिगत द्वेष को पोषण मिला। कानाफूसी में कहा गया कि राष्ट्रपति अब अन्य कुछ करने योग्य नहीं रह गये हैं।

विल्सन ने इन आक्षेपों का कोई उत्तर नहीं दिया। आलोचना को सदैव प्रत्यक्ष रूप से सहन कर लेना, उनके अटल सिद्धान्तों में से एक रहा था। उनके विपक्षियों को इससे आनन्द प्राप्त होता था तथा उनके मित्रों के लिए यह खीभ का कारण बनता था। सत्य की शक्ति में उन्हें एक अप्रकट आस्था थी। देर-सवेर यह सिद्धान्त स्वयं सिद्ध हो जायेगा, इसके लिए वे अधीर नहीं थे। अतः इस विद्रोही गुर्राहट के सामने अब वे मौन रहे। उनका बौद्धिक जीवन पूर्ववत् चलता रहा। स्वास्थ्य बिगड़ जाने के कुछ दिन बाद ही, उनकी पुत्री मार्गरेट, पास बैठी, उन्हें पढ़ कर कुछ सुना

रही थी। वह बताती है कि उनकी मानसिक शक्ति में कोई दौर्बल्य नहीं आया था। उस के शब्दोच्चारण को शुद्ध करने के लिए, उस के पाठ में वे निरन्तर विघ्न डालते रहे। यह लक्षण उसे अपने पिता से मिला था।

इस बीच सन्धि सेनेट के हाथों में थी। इस दस्तावेज़ के निर्माण में कुल मिलाकर प्रायः पाँच मास लगे थे। इतनी देर लगाने पर इसके निर्माताओं की आलोचना की गई थी। परन्तु इस पर तर्क, कटाक्ष एवं विचार-विवेचन आठ मास तक चलता रहा था। विदेशी मामलों की समिति का अध्यक्ष सेनेटर लॉज, राष्ट्र संघ का अत्यन्त अनथक विरोधी था। तिरस्कारपूर्वक इसे "विलसन का संघ" कहा जाता था। जब तक डैमोक्रेटिक राष्ट्रपति ने इस योजना का समर्थन नहीं किया था, लॉज ने ऐसी संस्था के विषय में, भविष्य की एक आवश्यकता के रूप में चर्चा की थी। नवम्बर के आरम्भ में रिपब्लिकन नेता ने सेनेट में चौदह आरक्षणों का एक क्रम उपस्थित किया था। विलसन के चौदह सूत्रों का उपहास करने को यह, चौदह ही रक्खे गये थे। सन्धि में, विशेष कर उसकी धारा १० में, यह सुधार थे। राष्ट्रपति ने आरक्षणों का अध्ययन किया तथा स्पष्ट कह दिया कि इनके हो जाने से यह सन्धि के सम्पुष्ट होने की बात न रह कर, उसे रद्द कर देना होगा। अतः उसने सेनेटरों को लॉज के सम्पुष्टि प्रस्ताव के विरुद्ध मत देने की सलाह दी।

सेनेट असमंजस में पड़ गया। ऐसे लोग कम थे, जो हृदय से सन्धि का अन्त चाहते थे। ऐसा होने से राजनीतिक एवं आर्थिक अशान्ति बनी रहती। परन्तु लॉज अथवा विलसन, दोनों में से कोई भी मानने को तैयार न था। राष्ट्रपति का दृढ़ मत था कि लॉज के आरक्षण स्वीकार कर लेने से सन्धि सत्त्वहीन हो जायेगी। अतः उन्होंने बड़ी दृढ़ता से विरोध किया। उन्हें विश्वास था कि जनता अपने उचित मत द्वारा इसका समर्थन करेगी। उन्होंने आग्रह किया कि यह मामला, अगले वर्ष होने वाले चुनावों में, सामान्य मतदान के लिए उठा रखा जाये। साथ ही एक सुझाव आया कि वर्साई सन्धि को छोड़ कर हम जर्मनी के साथ एक पृथक् सन्धि कर लें। १९ नवम्बर को लॉज का सम्पुष्टि प्रस्ताव गिर गया तथा इकरारनामा

स्थगित कर दिया गया।

बाद के कुछ महीनों में विवाद की लहर में ज्वार आ गया। विल्सन ह्वाइट हाउस में बेबस पड़े थे। काँग्रेस मे, जैसे वह बहुधा मिला करते थे, उससे मिलने, यहाँ तक कि अपने मन्त्रि-मण्डल से भी मिलने में भी वे असमर्थ थे। इस प्रकार वे जनता के मत का प्रवाह जानने की स्थिति में नहीं थे। संघ के विरोधियों ने सब कुछ मनमाना किया।

वाशिंगटन का विदाई भाषण, जेफ़र्सन का इंगलैंड का तिरस्कार, देश को स्मरण कराये गये। अमरीकी भावना तो एकान्तता की थी और वह वैसी ही बनी रहनी चाहिए। लोगों के अनथक उद्योग से, श्रमिक, किसान, मौलिक तत्त्व, नीग्रो लोग सब उपद्रवी दल बन गये और उस मत का समर्थन करने लगे जिसे वे "१०० प्रतिशत अमरीकीवाद" कहते थे। अतः १९ मार्च, १९२० को जब संयुक्त राज्य के सेनेट ने शान्ति-संधि को अस्वीकार कर दिया, तो यह कोई अप्रत्याशित आघात नहीं था। डैमोक्रेटिक सेनेटरों ने भी राष्ट्रपति का समर्थन नहीं किया। २४ उसके पक्ष में थे तथा २३ ने विरोध किया। फलतः शान्ति-सन्धि समर्थन के बिना ही उन्हें लौटा दी गई।

आगामी चुनाव के प्रति विल्सन की वृत्ति बहुत पहले से ही स्पष्ट थी। जनवरी में उन्होंने अपने 'जैक्सन दिवस' के पत्र में आग्रह किया था कि राष्ट्र-संघ का प्रश्न नवम्बर में सामान्य जनमत के सामने रखा जाये। जब जून में डैमोक्रेटिक नैशनल कन्वैन्शन सैनफ्रान्सिस्को में हुई, तो उम्मीदवार जेम्स एम० कॉक्स था। विल्सन को पुनः नामज़द करने का कोई सुझाव नहीं था। दल जिस अव्यवस्थित स्थिति में आ गया था, नेताओं ने उसकी उपेक्षा कर के पन्ना ही पलट दिया।

भावी राष्ट्रपति-निर्माता, कर्नल हार्वे, जो पहले विल्सन के झण्डे से सम्बद्ध रहा था, अब अपेक्षाकृत नरम उम्मीदवार वारेन जी० हार्डिंग के प्रस्तावन में रुचि ले रहा था। हार्वे डैमोक्रेटिक दल छोड़ कर रिपब्लिकन दल में चला गया था। सिद्धान्तों की अपेक्षा राष्ट्रपतियों में उसकी अधिक रुचि थी।

चुनाव में रिपब्लिकन दल की अद्वितीय विजय हुई। हार्डिंग की सर्वप्रियता का बहुमत प्राय: सत्तर लाख तक पहुँच गया। रीड, रूज़वेल्ट तथा लॉज दलों की भारी विजय हुई। जब ४ मार्च, १९२१ को प्रतिष्ठापन दिवस आया तो व्हाइट हाउस का परिश्रान्त पुरुष, उद्घाटन में अपना कार्य पूरा करने का निश्चय कर, अपने उत्तराधिकारी के साथ सवार होकर कैपिटोल गया। परन्तु अन्तिम क्षण में, यह देख कर कि संस्कार देखने के लिए कुछ सीढ़ियाँ चढ़ना पड़ेगा, विलसन ने अपना विचार त्याग दिया। अपने पुराने मनमौजी ढंग से उन्होंने कहा, "सेनेट ने मुझे नीचे फेंक दिया है परन्तु मैं गिरना नहीं चाहता।"

इस प्रकार वुड्रो विलसन ने वैयक्तिक जीवन में विश्राम ले लिया। उन का शरीर रोग से जर्जर हो गया था। परन्तु असफलता तथा उपेक्षा की निरन्तर चोटों से अपने आदर्शों के अन्ततः सफल होने के उनके विश्वास में, अन्तर नहीं आया था। राष्ट्र संघ में संयुक्त राज्य का प्रवेश देखना भले ही उनके भाग्य में न बदा हो, परन्तु उनका देश अन्ततः उस संस्था का सदस्य बनेगा, जिसका आधार उन्होंने अमरीकी आदर्शों पर रखा था; जिन पर उन्होंने कभी सन्देह नहीं किया। उन्होंने कहा, "आदर्श बने रहते हैं; मनुष्य चले जाते हैं।"

यह कैसी परस्पर विरोधी बात है कि विलसन जो सभ्य जगत् के अत्यन्त शक्तिशाली व्यक्ति रहे थे, वे सब से कम प्रसिद्ध थे। समाचार-पत्रों की रुचि, उनकी विद्वत्ता पर इस प्रकार बल देने में थी कि उनका व्यक्तित्व बौना लगे। पेज ने उन्हें "अनन्ताकाश में स्वतन्त्र विचरने वाली मुक्त चेतना" बताया था। इस पर कुछ विनोद भाव में उन्होंने स्वयं यह कह कर उसकी भर्त्सना की थी कि, कोई भी व्यक्ति "सम्पूर्ण मस्तिष्क" तो हो नहीं सकता।

वह निरंकुश वृत्ति के थे, परन्तु उनमें अहम्मन्यता नाम को भी नहीं थी। प्रत्येक वस्तु को वे निर्विवाद तर्क की बर्फ़ सी शान्त चमक में से देखते थे। तिस पर भी उन का समस्त जीवन उनकी भावनाओं से प्रवृत्त एवं रंगा हुआ था। मूलतः वे एक कारीगर थे, जो शान्ति के

लिए, प्रजातन्त्र के लिए, अपार कल्याणकारी प्रभाव वाले अमरीका का एक मन्दिर खड़ा करने का यत्न कर रहे थे। एक आदर्शवादी ? हाँ ! अन्त तक जिनका विश्वास था कि राष्ट्रों के सार्वभौम बन्धुत्व का उनका स्वप्न, एक सत्य बन जायेगा। कुछ भी हो, लिंकन के बाद, वही सर्वोत्तम व्यावहारिक राजनीतिज्ञ थे। मित्रों के लिए उन्हे परम उत्कण्ठा रहती थी, परन्तु मित्रता के कारण कभी कोई रियायत नही करते थे।

अपने परिवार, अपनी स्त्री एव बच्चों, अपने कुछ घनिष्ठ मित्रों पर विल्सन अपना प्यार उदारतापूर्वक उँड़ेलते थे। उनके लिए, उनका व्यक्तित्व, आनन्द का विस्तृत ससार बन जाता था। उन कुछ के लिए, जो उन्हें भली प्रकार जानते थे, उनके विनोदप्रिय, स्नेही, सौम्य व्यक्तित्व में, उदासीन, विरक्त विद्वान् की-सी कोई बात नहीं थी। कर्नल हाउस ने अपनी डायरी में, विल्सन के व्यक्तिगत आचरण के प्रभाव की, कुछ चर्चा की है—

"यह बात नही है कि राष्ट्रपति का केवल चेहरा ही बदल जाता हो। मेरी जानकारी मे, वह अत्यन्त जटिल और गहन चरित्रों में से एक है। वह इतना परस्पर विरोधी है कि उस के सम्बन्ध में कोई निर्णय देना कठिन है.........जब किसी की उस तक पहुँच हो जाये तो वुड्रो विल्सन मे बढ़ कर आकर्षक व्यक्ति कोई नही होगा। मुझे कोई भी ऐसा आदमी नहीं मिला जो उनके पास जाकर प्रभावित न हुआ हो। वे अपनी इस आकर्षण शक्ति को अमित व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक लाभ के लिए काम में ले सकते थे।"

एक आदमी, जो वाशिंगटन के बाज़ार में विल्सन के पास से निकला, उसका कहना है—"जैसे ही मैंने उनकी ओर देखा, उन्होंने अपना मुँह मेरी ओर मोड़ा और मेरी टोपी मेरे हाथ में थी। यह राष्ट्रीय ध्वज का वन्दन करने जैसा था।"

एक लम्बी तथा कष्टकर बीमारी के बाद ३ सितम्बर, १९२४ को वुड्रो विल्सन ने केवल ये शब्द कहे—"मैं तैयार हूँ।" ये उनके अन्तिम शब्द थे।

घटना-क्रम

१८०७—जेम्स विल्सन की अमरीका के लिए समुद्र-यात्रा।

१८३६—थॉमस वुड्रो की अमरीका के लिए समुद्र-यात्रा।

१८५६—दिसम्बर २८, थॉमस वुड्रो विल्सन का जन्म।

१८७५—उसका प्रिन्सटन को प्रस्थान।

१८७९—वुड्रो विल्सन के मन्त्रिमण्डल द्वारा शासन (केबिनेट गवर्मेण्ट) लेख का प्रकाशन। प्रिन्सटन से स्नातक उपाधि प्राप्ति और वर्जीनिया विश्वविद्यालय में प्रवेश।

१८८२— जून १, विल्सन का एटलान्टा जॉर्जिया को प्रस्थान। ई० जे० रेनिक के साथ वकालत में भागीदारी।

१८८३—सितम्बर १८, ज्हॉन हॉप्किन्स में उसका प्रवेश।

१८८५—जनवरी २४, उसकी प्रथम पुस्तक 'संसदीय शासन' (कॉंग्रेशनल गवर्मेण्ट) का प्रकाशन।

१८८५— जून २४, एलन एक्सन के साथ विवाह।

१८८५—ब्रायन मॉअर को प्रस्थान।

१८८८ — विल्सन परिवार का वेस्लियन को प्रस्थान।

१८८९—विल्सन द्वारा 'द स्टेट' का प्रकाशन।

१८९० — सितम्बर, प्रोफ़ेसर के रूप में प्रिन्सटन को प्रस्थान।

१८९३—(डिवीयन एण्ड रियूनियन) 'बटवारा और पुनर्गठन'; (मीयर लिटरेचर) 'विशुद्ध साहित्य'; (एन ओल्ड मास्टर) 'एक पुराना अध्यापक' उन्होंने प्रकाशित किये।

१८९६—'जॉर्ज वाशिंगटन' प्रकाशित किया। पहली विदेश यात्रा। प्रिन्सटन विश्वविद्यालय के अध्यक्ष के रूप में उद्‌घाटन भाषण।

१९०२—'अमरीकी लोगों का इतिहास' (हिस्ट्री ऑफ द' अमरीकन पीपुल) उन्होंने प्रकाशित किया।

१९०८—'वैधानिक शासन' (कन्स्टीट्यूशनल गवर्मेण्ट) उन्होंने प्रकाशित किया।

१९१०—सितम्बर १५, न्यू जर्सी के गवर्नर-पद के लिए उम्मीदवार प्रस्तावित।

१९१०—नवम्बर, गवर्नर-पद के लिए निर्वाचित।

१९११—जनवरी १७, गवर्नर के रूप में उद्‌घाटन।

१९१२—जुलाई २, वुड्रो विल्सन राष्ट्रपति पद के लिए ४६वें मत पर प्रस्तावित।

१९१२—नवम्बर ४, विल्सन संयुक्त राज्य के राष्ट्रपति निर्वाचित।

१९१३—मार्च ४, राष्ट्रपति पद पर प्रतिष्ठित।

१९१३—अक्तूबर ३, अण्डरवुडसिमन्स टेरिफ़ लॉ पर हस्ताक्षर किए।

१९१३—टैरिफ़ कमीशन (तटकर समिति) की स्थापना।

१९१३—दिसम्बर २३, विल्सन ने फेडरल रिज़र्व एक्ट पर हस्ताक्षर किये।

१९१४—जून २८, फ़र्डिनेण्ड के राजकुमार की हत्या।

१९१४—अगस्त १, जर्मनी द्वारा रूस के विरुद्ध युद्ध घोषित।

१९१४—अगस्त ३, जर्मनी द्वारा फ्राँस के विरुद्ध युद्ध घोषित।

१९१४—अगस्त ४, ग्रेट ब्रिटेन द्वारा जर्मनी के विरुद्ध युद्ध घोषित।

१९१४—अगस्त ६, एलन एक्सन विल्सन का निधन।

१९१४—अगस्त १८, विल्सन द्वारा तटस्थता की घोषणा।

१९१४—अक्तूबर, क्लटन एण्टी-ट्रस्ट बिल।

१९१५—फ़रवरी, जर्मनी द्वारा ब्रिटिश आइल्स के चारों ओर युद्ध घोषित।

१९१५—मई ७, 'लुसिटेनिया' डुबा दिया गया।

१९१५—दिसम्बर १८, श्रीमती गाल्ट के साथ विवाह।

१९१६—जनवरी २७—फ़रवरी ३, तैयारी पर भाषण देते हुए विल्सन द्वारा मध्य-पश्चिम की यात्रा।

१९१६—मार्च २४, 'ससेक्स' डुबा दिया गया।

१९१६—जून १५, विलसन पुनः उम्मीदवार प्रस्तावित।

१९१६—नवम्बर, पुनः राष्ट्रपति निर्वाचित।

१९१६—दिसम्बर १८, युद्धरत देशों से युद्ध के कारण जानने को विलसन ने पत्र भेजे।

१९१७—जनवरी ३१, जर्मनी द्वारा अबाध पनडुब्बी युद्ध की घोषणा।

१९१७—मार्च ४, विलसन का दूसरी पारी के लिए प्रतिष्ठापन।

१९१७—अप्रैल २, विल्सन का युद्ध-संदेश।

१९१७—अप्रैल ६, अमरीका द्वारा जर्मनी के विरुद्ध युद्ध-घोषणा।

१९१७—मई १८, सिलेक्टिव सर्विस एक्ट पारित।

१९१७—जून, अमरीकी सेना के साथ जनरल पर्शिंग का फ्राँस को प्रस्थान।

१९१७—नवम्बर, बोल्शेविकों ने केरेन्स्की सरकार का तख्ता पलट दिया।

१९१७—दिसम्बर ११, अमरीका द्वारा ऑस्ट्रिया-हंगरी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा।

१९१७—दिसम्बर २६, रेल मार्गों पर सरकारी नियन्त्रण।

१९१८—जनवरी ८, चौदह सिद्धान्तों पर विलसन का भाषण।

१९१८—मई २०, ओवरमैन एक्ट पारित।

१९१८—नवम्बर ११, युद्ध विराम घोषित।

१९१८—दिसम्बर १३, विलसन ब्रेस्ट पहुँचा।

१९१८—दिसम्बर २५, क्रिसमस उसने अमरीकी सैनिकों के साथ मनाया।

१९१९—जनवरी १८, शान्ति सम्मेलन का प्रथम सम्पूर्ण सत्र।

१९१९—फरवरी १४, संघ संश्राव का प्रथम प्रारूप विलसन द्वारा सम्मेलन में प्रस्तुत।

१९१९—फरवरी १५, अमरीका की ओर समुद्र-यात्रा।

१९१९—मार्च १४, फ्राँस को प्रत्यावर्तन।

१९१९—मई ७, सन्धिपत्र जर्मनों को अर्पित।

१९१९—जून २८, वर्साई सन्धि पर हस्ताक्षर।

१९१९—जुलाई १०, शान्ति सन्धि विल्सन द्वारा सेनेट में प्रस्तुत।

१९१९—सितम्बर ३, उसने पश्चिम की यात्रा आरम्भ की।

१९१९—सितम्बर २६, विचिता कन्सास में रोगग्रस्त।

१९१९—नवम्बर १९, सेनेट ने सन्धि रद्द कर दी।

१९२०—नवम्बर, हार्डिंग अमरीका का राष्ट्रपति निर्वाचित।

१९२०—दिसम्बर, विल्सन ने 'नोबल शान्ति पुरस्कार' प्राप्त किया।

१९२१—मार्च, वैयक्तिक जीवन द्वारा विश्रान्ति।

१९२४—सितम्बर ३, वुड्रो विल्सन का देहान्त।

———